जुलाई 2025

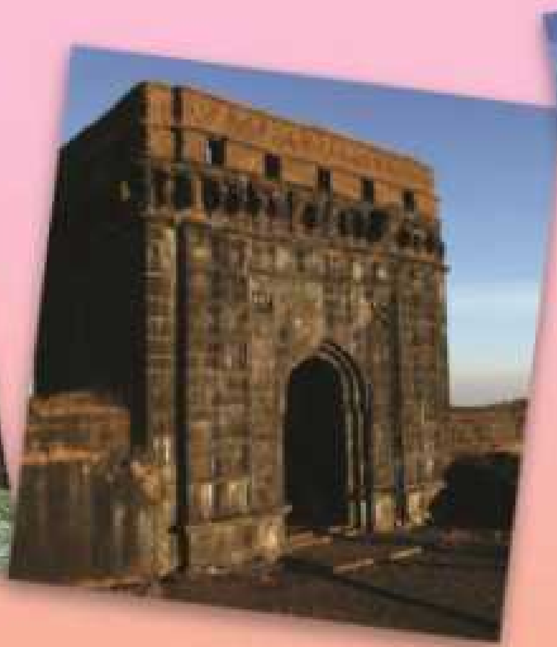
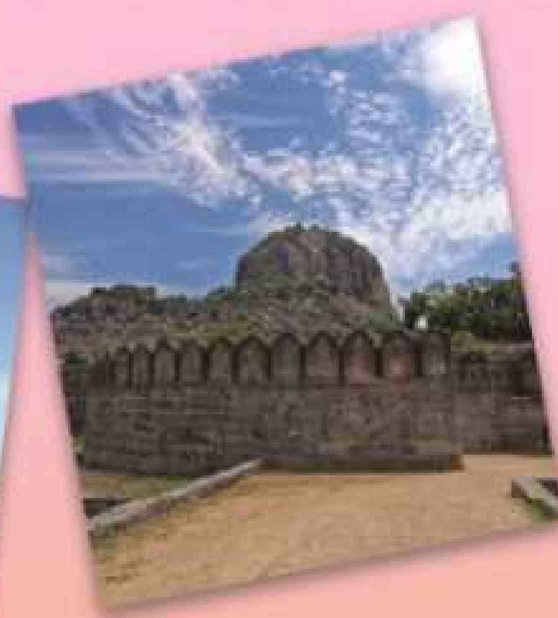

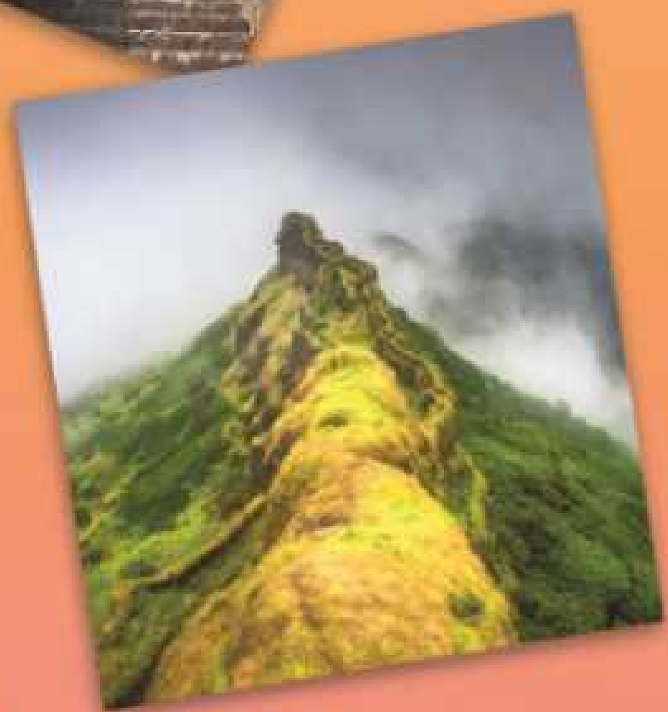

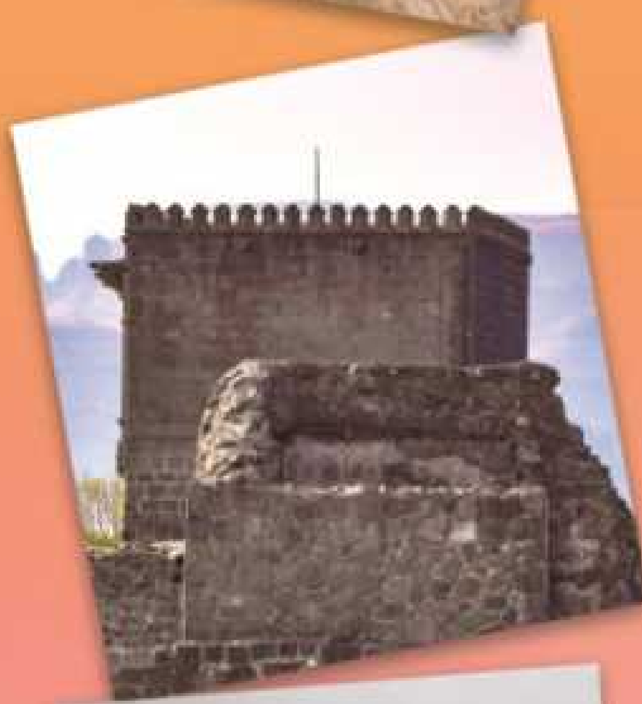
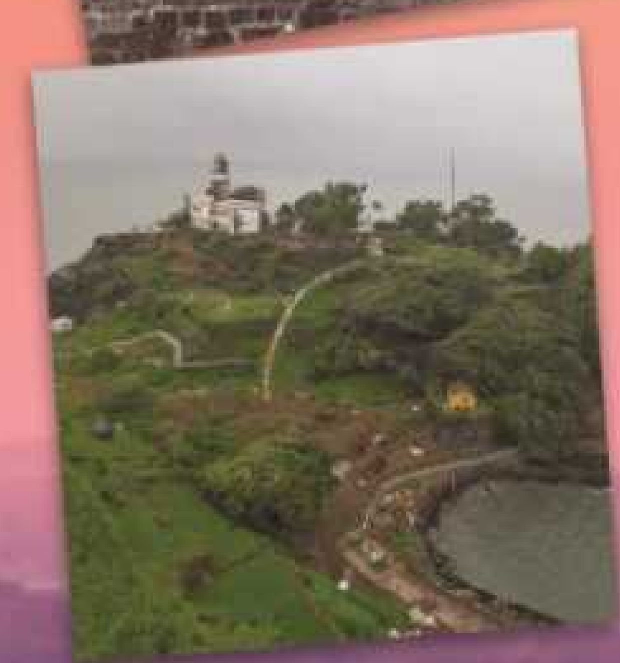

मराठा दुर्ग

विश्व की धरोहर
भारत का गौरव

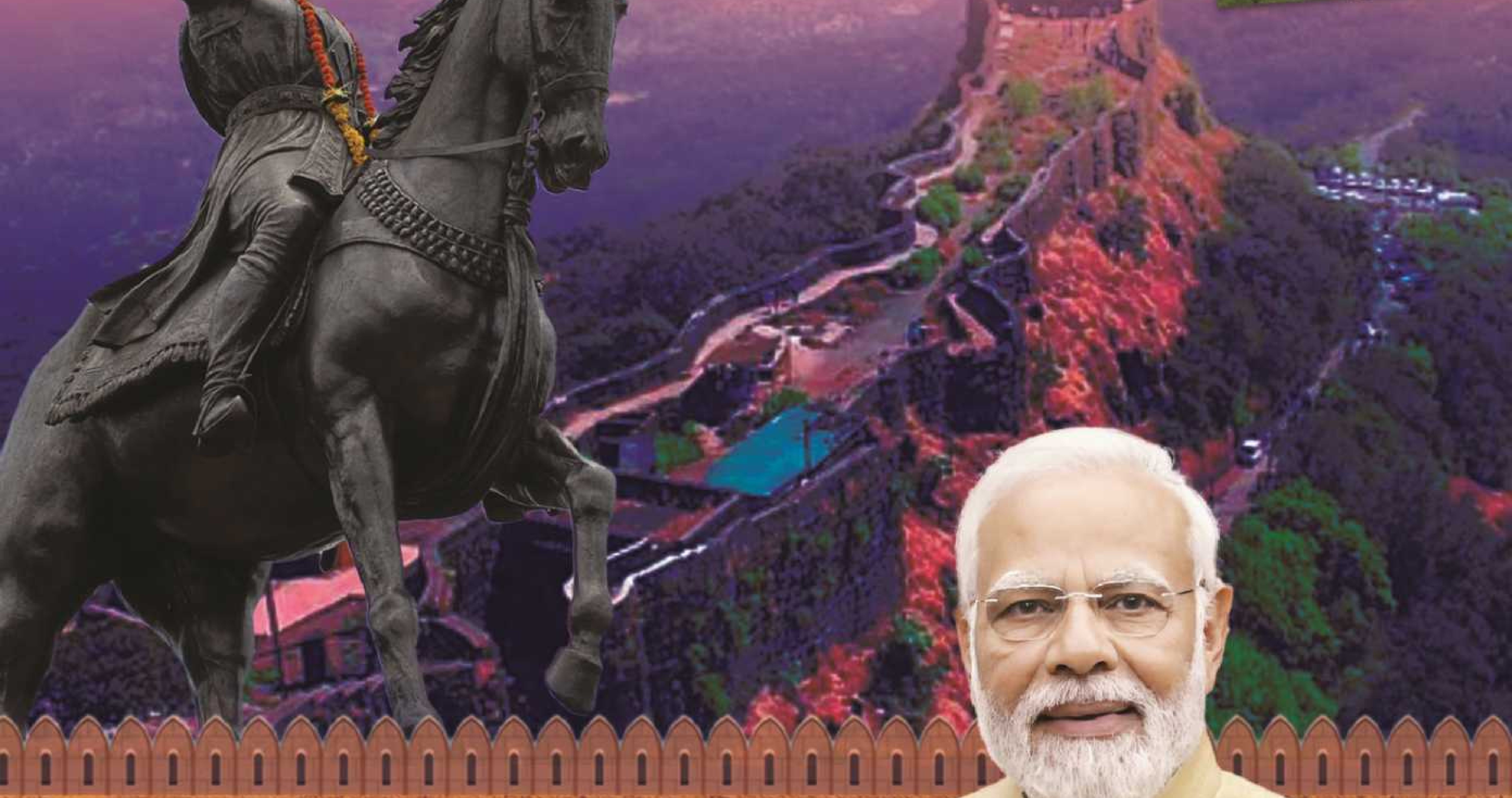

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 प्रधानमंत्री का सन्देश 4

02 मुख्य आलेख

2.1 **इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय :** मराठा किलों को मिला यूनेस्को का सम्मान 30

2.2 **बुनाई का अद्भुत संसार :** सशक्तीकरण की डोर 46

2.3 **ज्ञान भारतम् मिशन :** भारत की ज्ञान पद्धतियों का डिजिटलीकरण 54

2.4 **वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स :** भारत ने रचा इतिहास 72

2.5 **स्वच्छ भारत मिशन :** जन-भागीदारी का प्रतीक 78

03 संक्षेप में

3.1 **एक्सियम अंतरिक्ष मिशन :** अंतरिक्ष में भारत की छलाँग 28

3.2 **मराठा वैभव :** 12 क़िलों को मिला यूनेस्को का गौरव 40

3.3 **युवा क्रान्तिकारी :** खुदीराम बोस 44

3.4 **राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डली** 70

3.5 **अन्धेरे में आशा की किरण :** गुमला की शान्ति यात्रा 74

3.6 **अंतरराष्ट्रीय केमिस्ट्री ओलम्पियाड 2025** 76

04 लेख/साक्षात्कार

4.1 **भारत की अंतरिक्ष यात्रा :** युवाओं की बढ़ती जिज्ञासा - डॉ. व. नारायणन 22

4.2 **मराठा सैन्य परिदृश्य :** भारत की स्वराज्य भावना का वैश्विक अभिनन्दन - देवेन्द्र फडणवीस 33

4.3 **भारत के मराठा दुर्ग यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल :** मराठा सैन्य कुशाग्रता की पहचान - विशाल विनोद शर्मा 37

4.4 **आज़ादी का परिधान, भारत का भविष्य :** हथकरघा उत्सव का एक दशक - कॉमॉडोर राजीव अशोक 50

4.5 **INSPIRE-MANAK :** कक्षाओं और उससे परे जागृत होती नवाचार की प्रेरणा - डॉ. अनिल सहस्रबुद्धे 58

4.6 **प्रकृति को समझने में तकनीक का उपयोग :** काज़िरंगा का पक्षी सर्वेक्षण - सोनाली घोष 62

4.7 **प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना :** सशक्त परिवर्तन और आजीविका के अवसर - डॉ. बिजय कुमार बेहेरा 66

05 प्रतिक्रियाएँ 83

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' में एक बार फिर बात होगी देश की सफलताओं की, देशवासियों की उपलब्धियों की। पिछले कुछ हफ्तों में, sports हो, science हो या संस्कृति, बहुत कुछ ऐसा हुआ है जिस पर हर भारतवासी को गर्व है। **अभी हाल ही में शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष से वापसी को लेकर देश में बहुत चर्चा हुई। जैसे ही शुभांशु धरती पर सुरक्षित उतरे, लोग उछल पड़े, हर दिल में ख़ुशी की लहर दौड़ गई। पूरा देश गर्व से भर गया।** मुझे याद है, जब अगस्त, 2023 में चंद्रयान-3 की सफल landing हुई थी तब देश में एक नया माहौल बना। Science को लेकर, Space को लेकर बच्चों में एक नई जिज्ञासा भी जागी। अब छोटे-छोटे बच्चे कहते हैं, हम भी space में जाएँगे, हम भी चाँद पर उतरेंगे - Space Scientist बनेंगे।

भारत की अंतरिक्ष उड़ान

नित नए जुड़ते आयाम

साथियो, आपने **INSPIRE-MANAK अभियान** का नाम सुना होगा। यह **बच्चों के innovation को बढ़ावा देने का अभियान है।** इसमें हर स्कूल से पाँच बच्चे चुने जाते हैं। हर बच्चा एक नया idea लेकर आता है। इससे अब तक लाखों बच्चे जुड़ चुके हैं और चंद्रयान-3 के बाद तो इनकी संख्या दोगुनी हो गई है। देश में space start-ups भी तेज़ी से बढ़ रहे हैं। **पाँच साल पहले 50 से भी कम start-up थे। आज 200 से ज्यादा हो गए है, सिर्फ space sector में। साथियों, अगले महीने 23 अगस्त को National Space Day है। आप इसे कैसे मनाएँगे, कोई नया idea है क्या? मुझे NaMo App पर ज़रूर message भेजिएगा।**

साथियो, 21वीं सदी के भारत में आज science एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रही है। **कुछ दिन पहले हमारे छात्रों ने International Chemistry Olympiad में medal जीते हैं। देवेश पंकज, संदीप कुची, देबदत्त प्रियदर्शी और उज्ज्वल केसरी, इन चारों ने भारत का नाम रोशन किया।** Maths की दुनिया में भी भारत ने अपनी पहचान को और मजबूत किया है। **Australia में हुए International Mathematical Olympiad में हमारे students ने 3 gold, 2 silver और 1 bronze medal हासिल किया है।**

साथियो, अगले महीने मुंबई में Astronomy और Astrophysics olympiad होने जा रहा है। इसमें 60 से ज्यादा देशों के छात्र आएँगे। वैज्ञानिक भी आएँगे। यह अब तक का सबसे बड़ा Olympiad होगा। एक तरह से देखें तो भारत अब Olympic और Olympiad, दोनों के लिए आगे बढ़ रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम सभी को गर्व से भर देने वाली एक और खबर आई है, UNESCO से। UNESCO ने 12 मराठा किलों को World Heritage Sites के रूप में मान्यता दी है। ग्यारह किले महाराष्ट्र में, एक किला तमिलनाडु में। हर किले से इतिहास का एक-एक पन्ना जुड़ा है। हर पत्थर, एक ऐतिहासिक घटना का गवाह है। सल्हेर का किला, जहाँ मुगलों की हार हुई। शिवनेरी, जहाँ छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म हुआ। किला ऐसा जिसे दुश्मन भेद न सके। खानदेरी का किला, समुद्र के बीच बना अद्भुत किला। दुश्मन उन्हें रोकना चाहते थे, लेकिन शिवाजी महाराज ने असम्भव को सम्भव करके दिखा दिया। प्रतापगढ़ का किला, जहाँ अफजल खान पर जीत हुई, उस गाथा की गूँज आज भी किले की दीवारों में समाई है। विजयदुर्ग, जिसमें गुप्त सुरंगें थीं, छत्रपति शिवाजी महाराज की दूरदर्शिता का प्रमाण इस किले में मिलता है। मैंने कुछ साल पहले रायगढ़ का दौरा किया था। छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के सामने नमन किया था। ये अनुभव जीवन भर मेरे साथ रहेगा।

साथियो, देश के और हिस्सों में भी ऐसे ही अद्भुत किले हैं, जिन्होंने आक्रमण झेले, खराब मौसम की मार झेली, लेकिन आत्मसम्मान को कभी भी झुकने नहीं दिया। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ का किला, कुम्भलगढ़ किला, रणथंभौर किला, आमेर किला, जैसलमेर का किला तो विश्व प्रसिद्ध है। कर्नाटक में गुलबर्गा का किला भी बहुत बड़ा है। चित्रदुर्ग के किले की विशालता भी आपको कौतूहल से भर देगी कि उस

आइए, अन्वेषण कीजिए और गर्व कीजिए–भारत के किले अपनी कहानियाँ सुनाने के लिए तैयार हैं

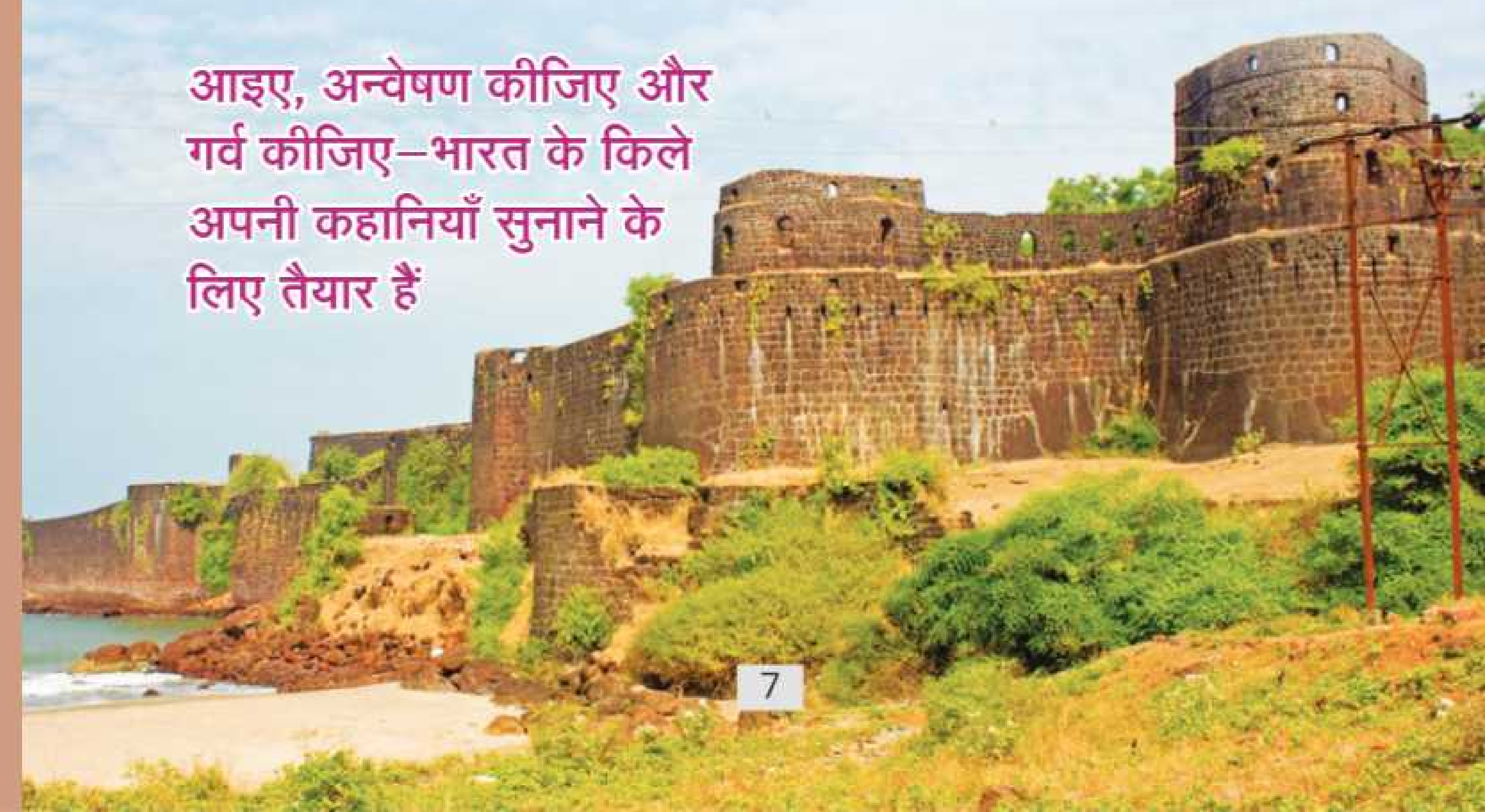

जमाने में ये किला बना कैसे होगा!

साथियो, उत्तर प्रदेश के बांदा में है, कालिंजर किला। महमूद गजनवी ने कई बार इस किले पर हमला किया और हर बार असफल रहा। बुन्देलखंड में ऐसे कई किले हैं - ग्वालियर, झाँसी, दतिया, अजयगढ़, गढ़कुंडार, चँदेरी। **ये किले सिर्फ ईंट-पत्थर नहीं हैं, ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। संस्कार और स्वाभिमान, आज भी इन किलों की ऊँची-ऊँची दीवारों से झाँकते हैं। मैं सभी देशवासियों से आग्रह करता हूँ इन किलों की यात्रा करें, अपने इतिहास को जानें, गौरव महसूस करें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आप कल्पना कीजिए, बिल्कुल भोर का वक्त, बिहार का मुजफ्फरपुर शहर, तारीख है, 11

अगस्त, 1908 हर गली, हर चौराहा, हर हलचल उस समय जैसे थमी हुई थी। लोगों की आँखों में आँसू थे, लेकिन दिलों में ज्वाला थी। लोगों ने जेल को घेर रखा था, जहाँ एक 18 साल का युवक, अंग्रेजों के खिलाफ अपना देश-प्रेम व्यक्त करने की कीमत चुका रहा था। जेल के अंदर, अंग्रेज अफसर, एक युवा को फाँसी देने की तैयारी कर रहे थे। उस युवा के चेहरे पर भय नहीं था, बल्कि गर्व से भरा हुआ था। वो गर्व, जो देश के लिए मर-मिटने वालों को होता है। वो वीर, वो साहसी युवा थे, **खुदीराम बोस। सिर्फ 18 साल की उम्र में उन्होंने वो साहस दिखाया, जिसने पूरे देश को झकझोर दिया। तब अखबारों ने भी लिखा था –“खुदीराम बोस जब फाँसी के फंदे की ओर बढ़े, तो उनके चेहरे पर मुस्कान थी”। ऐसे ही अनगिनत बलिदानों के बाद, सदियों की तपस्या के बाद, हमें आज़ादी मिली थी। देश के दीवानों ने अपने रक्त से आज़ादी के आंदोलन को सींचा था।**

साथियो, अगस्त का महीना इसलिए तो क्रांति का महीना है। 1 अगस्त को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि होती है। इसी महीने, 8 अगस्त को गाँधी जी के नेतृत्व में ‘भारत छोड़ो

आंदोलन’ की शुरुआत हुई थी। फिर आता है 15 अगस्त, हमारा स्वतंत्रता दिवस, हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं, उनसे प्रेरणा पाते हैं, लेकिन साथियो, हमारी आज़ादी के साथ देश के बंटवारे की टीस भी जुड़ी हुई है, इसलिए हम 14 अगस्त को ‘विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस’ के रूप में मनाते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, 7 अगस्त 1905 को एक और क्रांति की शुरुआत हुई थी। स्वदेशी आंदोलन ने स्थानीय उत्पादों और खासकर handloom को एक नई ऊर्जा दी थी। इसी स्मृति में **देश हर साल 7 अगस्त को ‘National Handloom Day’ मनाता है। इस साल 7 अगस्त को ‘National Handloom Day’ के 10 साल पूरे हो रहे हैं।** आज़ादी की लड़ाई के समय जैसे हमारी खादी ने आज़ादी के आंदोलन को नई ताकत दी थी, वैसे ही आज जब देश, विकसित भारत बनने के लिए कदम बढ़ा रहा है, तो textile sector, देश की ताकत बन रहा है। **इन 10 वर्षों**

करघे से विरासत तक : भारत की बुनाई की समृद्ध परम्परा

में देश के अलग-अलग हिस्सों में इस sector से जुड़े लाखों लोगों ने सफलता की कई गाथाएँ लिखी हैं। महाराष्ट्र के पैठण गाँव की कविता धवले पहले एक छोटे से कमरे में काम करती थीं - न जगह थी और न ही सुविधा। सरकार से मदद मिली, अब उनका हुनर उड़ान भर रहा है। वो तीन गुणा ज्यादा कमा रही हैं। खुद अपनी बनाई पैठणी साड़ियाँ बेच रही हैं। उड़ीसा के मयूरभंज में भी सफलता की ऐसी ही कहानी है। यहाँ 650 से ज्यादा आदिवासी महिलाओं ने संथाली साड़ी को फिर से जीवित किया है। अब ये महिलाएँ हर महीने हजारों रुपये कमा रही हैं। ये सिर्फ कपड़ा नहीं बना रहीं, अपनी पहचान गढ़ रही हैं। बिहार के नालंदा से नवीन कुमार की उपलब्धि भी प्रेरणादायक है। उनका परिवार पीढ़ियों से इस काम से जुड़ा है। लेकिन सबसे अच्छी बात ये कि उनके परिवार ने अब इस field में आधुनिकता का भी समावेश किया है। अब उनके बच्चे handloom technology की पढ़ाई कर रहे हैं। बड़े brands में काम कर रहे हैं। ये बदलाव सिर्फ एक परिवार का नहीं है, ये आसपास के अनेक परिवारों को आगे बढ़ा रहा है।

साथियो, Textile भारत का सिर्फ एक sector नहीं है। ये हमारी सांस्कृतिक विविधता की मिसाल है। आज textile और apparel market बहुत तेजी से बढ़ रहा है, और इस विकास की सबसे सुंदर बात यह है कि गाँवों की महिलाएँ, शहरों के designer, बुजुर्ग बुनकर और Start-Up शुरू करने वाले हमारे युवा सब मिलकर इसे आगे बढ़ा रहे हैं। **आज भारत में 3000 से ज्यादा Textile Start-Up सक्रिय हैं।** कई Start-Ups ने भारत की handloom पहचान को global height दी है। **साथियो, 2047 के विकसित भारत का रास्ता आत्मनिर्भरता से होकर गुजरता है और 'आत्मनिर्भर भारत' का सबसे बड़ा आधार है - 'Vocal for Local'। जो चीजें भारत में बनी हों, जिसे बनाने में किसी भारतीय का पसीना बहा हो, वही खरीदें और वही बेचें। ये हमारा संकल्प होना चाहिए।**

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत की विविधता की सबसे खूबसूरत झलक हमारे लोकगीतों और परम्पराओं में मिलती है और इसी का हिस्सा होते हैं, हमारे भजन और हमारे कीर्तन। लेकिन क्या आपने कभी सुना है कि कीर्तन के ज़रिए Forest Fire के प्रति लोगों को जागरूक किया जाए? शायद आपको विश्वास न हो, लेकिन ओडिशा के क्योंझर जिले में एक अद्भुत कार्य हो रहा है। यहाँ, राधाकृष्ण संकीर्तन मंडली नाम की एक टोली है। भक्ति के साथ-साथ, ये टोली, आज, पर्यावरण संरक्षण का भी मंत्र जप रही है। इस पहल की प्रेरणा हैं– प्रमिला प्रधान जी। जंगल और पर्यावरण की रक्षा के लिए उन्होंने पारम्परिक गीतों में नए बोल जोड़े, नए संदेश जोड़े। उनकी टोली गाँव-गाँव गई। गीतों के माध्यम से लोगों को समझाया कि जंगल में लगने वाली आग से कितना नुकसान होता है। ये उदाहरण हमें याद दिलाता है कि हमारी लोक परम्पराएँ कोई बीते युग की चीज़ नहीं है, इनमें आज भी समाज को दिशा देने की शक्ति है।

मेरे प्यारे देशवासियो, भारत की

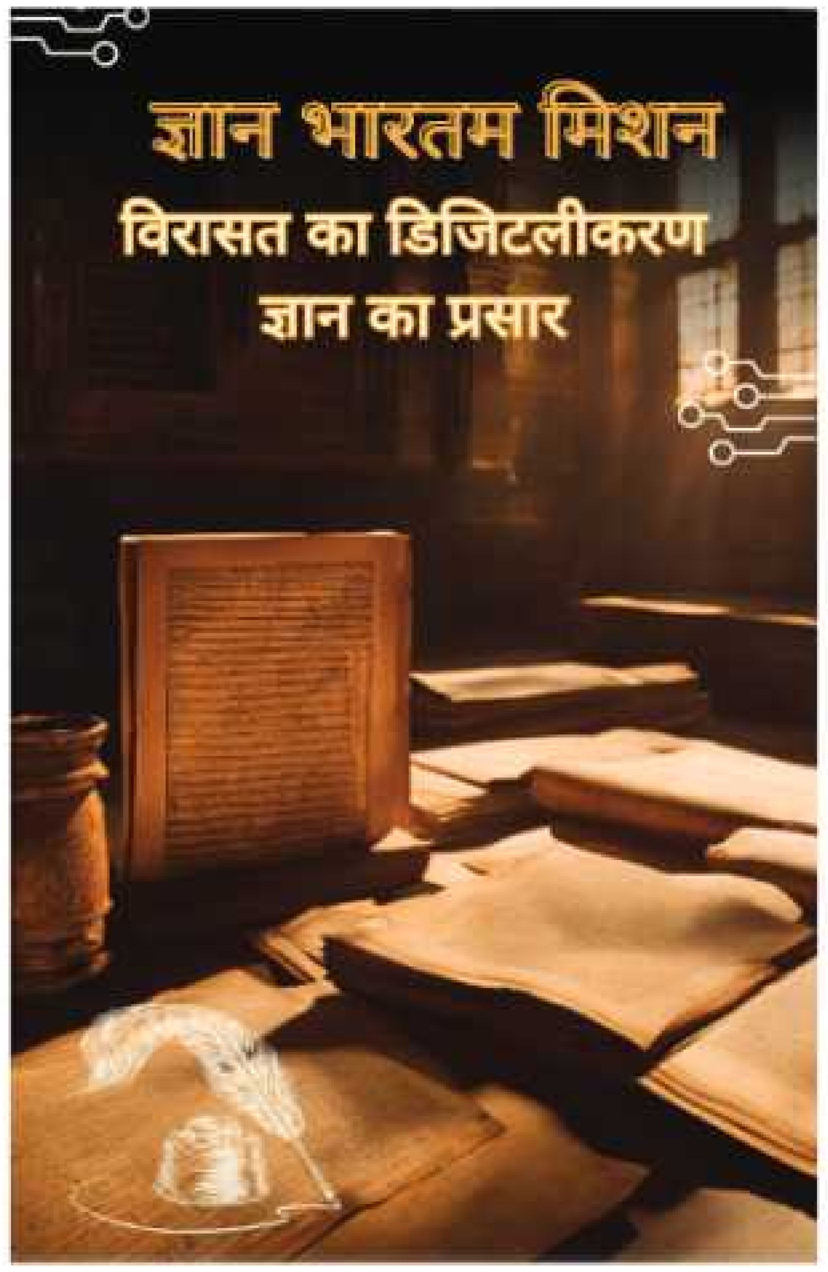

संस्कृति का बहुत बड़ा आधार हमारे त्योहार और परम्पराएँ है, लेकिन हमारी संस्कृति की जीवंतता का एक और पक्ष है - ये पक्ष है अपने वर्तमान और अपने इतिहास को Document करते रहना। हमारी असली ताकत वो ज्ञान है, जिसे सदियों से पांडुलिपियाँ (Manuscripts) के रूप में सहेजा गया है। इन पांडुलिपियों में विज्ञान है, चिकित्सा की पद्धतियाँ हैं, संगीत है, दर्शन है, और सबसे बड़ी बात वो सोच है, जो, मानवता के भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है। साथियो, ऐसे असाधारण ज्ञान को, इस विरासत को सहेजना हम सबकी जिम्मेदारी है। हमारे देश में हर कालखंड में कुछ ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने इसे अपनी साधना बना लिया। ऐसे ही एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व हैं – मणि मारन जी, जो तमिलनाडु के तंजावुर से हैं। उन्हें लगा कि अगर आज की पीढ़ी तमिल पांडुलिपियाँ पढ़ना नहीं सीखेगी, तो आने वाले समय में ये अनमोल धरोहर खो जाएगी। इसलिए उन्होंने शाम को कक्षाएँ शुरू की। जहाँ छात्र, नौकरीपेशा युवा, Researcher, सब यहाँ आकर के सीखने लगे। मणि मारण जी ने लोगों को सिखाया कि "TamilSuvadiyiyal" यानी Palm Leaf Manuscipts को पढ़ने और समझने की विधि क्या होती है। आज अनेकों प्रयासों से कई छात्र इस विधा में पारंगत हो चुके हैं। कुछ Students ने तो इन पांडुलिपियों के आधार पर Traditional Medicine System पर Research भी शुरू कर दी है। साथियो, सोचिए अगर ऐसा प्रयास देशभर में हो तो हमारा पुरातन ज्ञान केवल दीवारों में

बंद नहीं रहेगा, वो, नई पीढ़ी की चेतना का हिस्सा बन जाएगा। इसी सोच से प्रेरित होकर, **भारत सरकार ने इस वर्ष के बजट में एक ऐतिहासिक पहल की घोषणा की है 'ज्ञान भारतम् मिशन'। इस मिशन के तहत प्राचीन पांडुलिपियों को Digitize किया जाएगा। फिर एक National Digital Repository बनाई जाएगी,** जहाँ दुनियाभर के विद्यार्थी, शोधकर्ता, भारत की ज्ञान परम्परा से जुड़ सकेंगे। **मेरा भी आप सबसे आग्रह है अगर आप किसी ऐसे प्रयास से जुड़े हैं, या जुड़ना चाहते हैं, तो MyGov या संस्कृति मंत्रालय से ज़रूर सम्पर्क कीजिएगा, क्योंकि, यह केवल पांडुलिपियाँ नहीं है, यह भारत की आत्मा के वो अध्याय हैं, जिन्हें हमें आने वाली पीढ़ियों को पढ़ाना है।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अगर आपसे पूछा जाए कि आपके आस-पास कितनी तरह के पक्षी हैं, चिड़िया हैं - तो आप क्या कहेंगे? शायद यही कि मुझे तो रोज़ 5-6 पक्षी दिख ही जाते हैं या चिड़िया दिख ही जाती हैं - कुछ जानी-पहचानी होती हैं, कोई अनजानी। लेकिन, ये जानना बहुत दिलचस्प होता है कि हमारे आस-पास पक्षियों की कौन-कौन सी प्रजातियाँ रहती हैं। हाल ही में **एक ऐसा ही शानदार प्रयास हुआ है, जगह है – असम का Kaziranga National Park. वैसे तो ये इलाका अपने**

Rhinos (गैंडों) के लिए मशहूर है -लेकिन इस बार चर्चा का विषय बना है, यहाँ के घास के मैदान और उनमें रहने वाली चिड़िया। यहाँ पहली बार Grassland Bird Census हुआ है। **आप जानकर खुश होंगे इस Census की वजह से पक्षियों की 40 से ज्यादा प्रजातियों की पहचान हुई है। इनमें कई दुर्लभ पक्षी शामिल हैं।** आप सोच रहे होंगे इतने पक्षी कैसे पहचान में आए! **इसमें technology ने कमाल किया।** Census करने वाली टीम ने आवाज record करने वाले यंत्र लगाए। फिर computer से उन आवाजों का विश्लेषण किया, AI का उपयोग किया। सिर्फ आवाजों से ही पक्षियों की पहचान हो गई - वो भी बिना उन्हें disturb किए। **सोचिए! technology और संवेदनशीलता जब एक साथ आते हैं, तो प्रकृति को समझना कितना आसान और गहरा हो जाता है।** हमें ऐसे प्रयासों को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि हम, अपनी जैव विविधता को पहचान सकें और अगली पीढ़ी को भी इससे जोड़ सकें।

मेरे प्यारे देशवासियो, कभी-कभी सबसे बड़ा उजाला वहीं से फूटता है, जहाँ अंधेरे ने सबसे ज्यादा डेरा जमाया हो। ऐसा ही एक उदाहरण है झारखंड के गुमला ज़िले का। एक समय था, जब ये इलाका माओवादी हिंसा के लिए जाना जाता था। बासिया ब्लॉक के गाँव वीरान हो रहे थे। लोग डर के साए में जीते थे। रोज़गार की कोई सम्भावना नज़र नहीं आती थी, ज़मीनें खाली पड़ी थीं और नौजवान पलायन कर रहे थे, लेकिन फिर, बदलाव की एक बहुत ही शांत और धैर्य से भरी हुई शुरुआत हुई। ओमप्रकाश साहू जी नाम के एक युवक ने हिंसा का रास्ता छोड़ दिया। उन्होंने मछली पालन शुरू किया। फिर अपने जैसे कई साथियों को भी इसके लिए

प्रेरित किया। उनके इस प्रयास का असर भी हुआ। जो पहले बंदूक थामे हुए थे, अब मछली पकड़ने वाला जाल थाम चुके हैं।

साथियो, ओमप्रकाश साहू जी की शुरुआत आसान नहीं थी। विरोध हुआ, धमकियाँ मिलीं, लेकिन हौसला नहीं टूटा। जब **'प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना'** आई तो उन्हें नई ताकत मिली। सरकार से training मिली, तालाब बनाने में मदद मिली और देखते-देखते, गुमला में, मत्स्य क्रांति का सूत्रपात हो गया। आज बासिया ब्लॉक के 150 से ज्यादा परिवार मछली पालन से जुड़ चुके हैं। कई तो ऐसे लोग हैं जो कभी नक्सली संगठन में थे, अब वे गाँव में ही, सम्मान से जीवन जी रहे हैं और दूसरों को रोजगार दे रहे हैं। गुमला की यह यात्रा हमें सिखाती है – अगर रास्ता सही हो और मन में भरोसा हो तो सबसे कठिन परिस्थितियों में भी विकास का दीप जल सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, क्या आप जानते हैं Olympics के बाद सबसे बड़ा खेल आयोजन कौन सा होता है? इसका उत्तर है - 'World Police and Fire Games'. दुनिया-भर के पुलिसकर्मी, fire fighters, security से जुड़े लोग उनके बीच होने वाला sports tournament. इस बार ये tournament अमेरिका में हुआ और इसमें

दुनिया में गूंजा भारत का नाम

भारत ने इतिहास रच दिया। भारत ने करीब-करीब 600 मेडल जीते। 71 देशों में हम top-three में पहुँचे। उन वर्दीधारियों की मेहनत रंग लाई जो दिन-रात देश के लिए खड़े रहते हैं। हमारे ये साथी अब खेल के मैदान में भी झंडा बुलंद कर रहे हैं। मैं सभी खिलाड़ियों और coaching team को बधाई देता हूँ। **वैसे आपके लिए ये भी जानना दिलचस्प होगा कि 2029 में ये games भारत में होंगे। दुनिया-भर से खिलाड़ी हमारे देश आएंगे। हम उन्हें भारत की मेहमान-नवाज़ी दिखाएंगे, अपनी खेल संस्कृति से परिचय कराएंगे।**

साथियो, बीते दिनों, मुझे, कई young athletes और उनके parents के संदेश मिले हैं। इनमें 'खेलो भारत नीति 2025' की खूब सराहना की गई है। इस नीति का लक्ष्य साफ है -भारत को sporting super power बनाना। गाँव, गरीब और बेटियाँ इस नीति की प्राथमिकता है। school और college, अब खेल को, रोजमर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बनाएँगे। खेलों से जुड़े startups, चाहे वो sports managements हों या manufacturing से जुड़े हों - उनकी हर तरह से मदद की जाएगी। सोचिए, जब देश का युवा खुद के बनाए racket, bat और ball के साथ खेलेगा, तो आत्मनिर्भरता के मिशन को कितनी बड़ी ताकत मिलेगी। साथियो, खेल, team spirit पैदा करते हैं। ये fitness, आत्मविश्वास और एक मजबूत भारत के निर्माण का रास्ता है। इसलिए खूब खेलिए, खूब खिलिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ लोगों को कभी-कभी कोई काम नामुमकिन सा लगता है। लगता है, क्या ये भी हो पाएगा? लेकिन, **जब देश एक सोच पर एक साथ आ जाए, तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है। 'स्वच्छ भारत मिशन' इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जल्द ही इस मिशन को 11 साल पूरे होंगे।** लेकिन, इसकी ताकत और इसकी ज़रूरत आज भी वैसी ही है। **इन 11 वर्षों में 'स्वच्छ भारत मिशन' एक जन-आंदोलन बना है। लोग इसे अपना फर्ज मानते हैं और यही तो असली जन-भागीदारी है।**

साथियो, हर साल होने वाले स्वच्छ सर्वेक्षण ने इस भावना को और बढ़ाया है। इस साल देश के 4500 से ज्यादा शहर और कस्बे इससे जुड़े। 15 करोड़ से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया। ये कोई सामान्य संख्या नहीं है। ये स्वच्छ भारत की आवाज़ है।

साथियो, स्वच्छता को लेकर हमारे शहर और कस्बे अपनी ज़रूरतों और माहौल के हिसाब से अलग-अलग तरीकों से काम कर रहे हैं। और इनका असर सिर्फ इन शहरों तक नहीं है, पूरा देश इन तरीकों को अपना रहा है। उत्तराखंड में कीर्तिनगर के लोग, पहाड़ों में waste management की नई मिसाल कायम कर रहे हैं। ऐसे ही मेंगलुरु में technology से organic waste management का काम हो रहा है। अरुणाचल में एक छोटा सा शहर रोइंग है। एक समय था जब यहाँ लोगों के स्वास्थ्य के सामने waste management बहुत बड़ा challenge था। यहाँ के लोगों ने इसकी जिम्मेदारी ली। 'Green Roing Initiative' शुरू हुआ और फिर recycled waste से पूरा एक पार्क बना दिया गया। ऐसे ही कराड़ में, विजयवाड़ा में, water management के कई नए उदाहरण बने हैं। अहमदाबाद में River Front पर सफाई ने भी सबका ध्यान खींचा है।

साथियो, भोपाल की एक team का नाम है 'सकारात्मक सोच'। इसमें 200 महिलाएँ हैं। ये सिर्फ सफाई नहीं करतीं, सोच भी बदलती हैं। एक साथ मिलकर

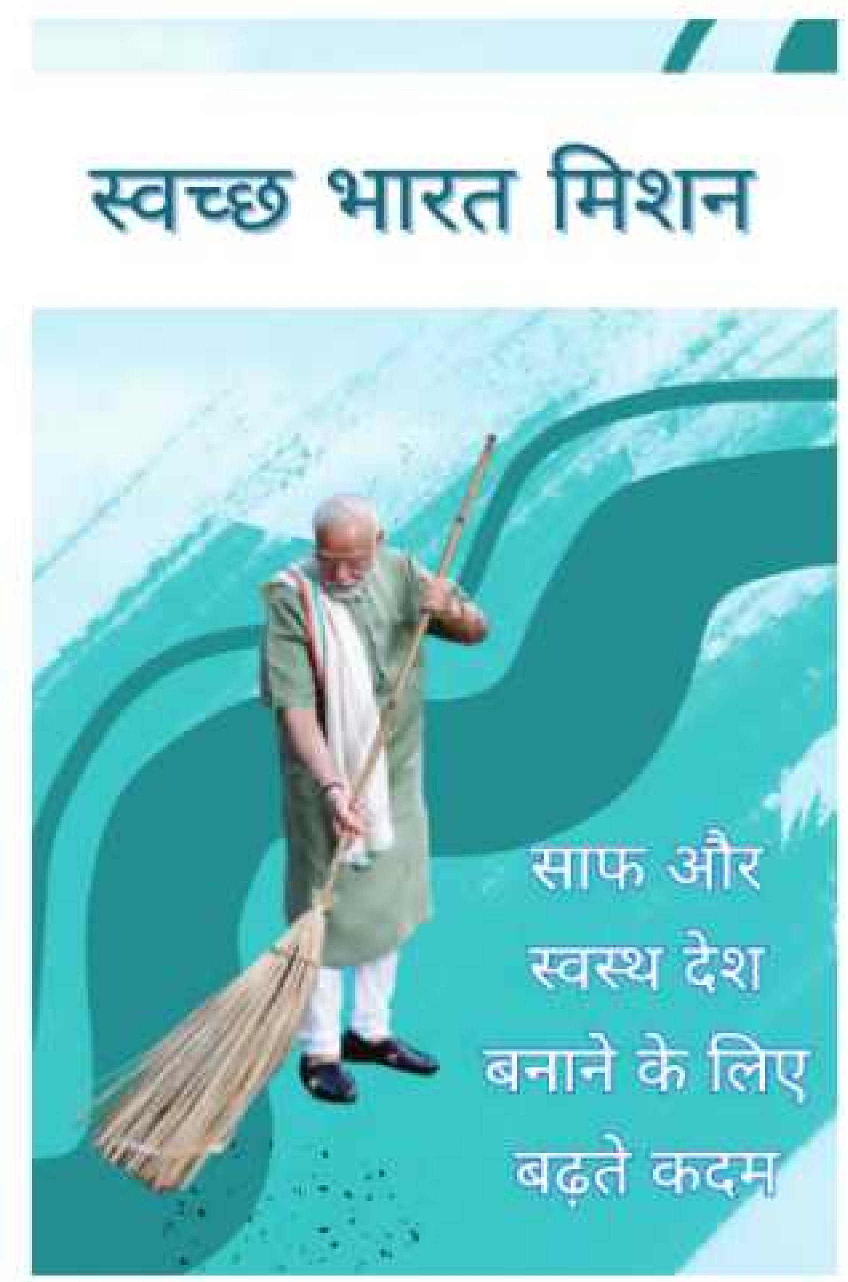

शहर के 17 पार्कों की सफाई करना, कपड़े के थैले बांटना, इनका हर कदम एक संदेश है। ऐसे प्रयासों की वजह से ही भोपाल भी अब स्वच्छ सर्वेक्षण में काफी आगे आ गया है। लखनऊ की गोमती नदी team का जिक्र भी ज़रूरी है। 10 साल से हर रविवार, बिना थके, बिना रुके इस team के लोग स्वच्छता के काम में जुटे हैं। छत्तीसगढ़ के बिल्हा का उदाहरण भी शानदार है। यहाँ महिलाओं को waste management की training दी गई, और उन्होंने मिलकर, शहर की तस्वीर बदल डाली। गोवा के पणजी शहर का उदाहरण भी प्रेरक है। वहाँ कचरे को 16 category में बांटा जाता है और इसका नेतृत्व भी महिलाएँ कर रही हैं। पणजी को तो राष्ट्रपति पुरुस्कार भी मिला है। साथियो, स्वच्छता सिर्फ एक वक्त का, एक दिन का काम नहीं है। जब हम साल में हर दिन, हर पल स्वच्छता को प्राथमिकता देंगें तभी देश स्वच्छ रह पाएगा।

साथियो, सावन की फुहारों के बीच, देश एक बार फिर त्योहारों की रौनक से सजने जा रहा है। आज हरियाली तीज है, फिर नाग पंचमी और रक्षा-बंधन, फिर जन्माष्टमी। हमारे नटखट कान्हा के जन्म का उत्सव। ये सभी पर्व यहाँ हमारी भावनाओं से जुड़े हैं, ये हमें प्रकृति से जुड़ाव और संतुलन का भी संदेश देते हैं। आप सभी को इन पावन पर्वों की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

मेरे प्यारे साथियो, अपने विचार और अनुभव साझा करते रहिए। अगले महीने फिर मिलेगें देशवासियों की कुछ और नई उपलब्धियों और प्रेरणाओं के साथ। आपका ध्यान रखिए।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारत की अंतरिक्ष यात्रा

युवाओं की बढ़ती जिज्ञासा

डॉ. व. नारायणन
सचिव, अंतरिक्ष विभाग
अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग
अध्यक्ष, इसरो

वर्ष 1963 में अपने पहले परिज्ञापी रॉकेट के प्रमोचन से लेकर वर्ष 2023 में चंद्रमा पर उतरने तक, भारत की अंतरिक्ष यात्रा प्रतिभा, दूरदर्शिता और वैज्ञानिक उत्कृष्टता की कहानी बयान करती है। अपनी स्थापना के बाद से; अपने प्रमुख संसाधनों का लाभ उठाते हुए, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने प्रमोचनयानों, उपग्रहों, चंद्र अन्वेषण और अंतर-ग्रहीय अभियानों में स्वदेशी क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए कई उपलब्धियाँ हासिल की हैं।

ऐतिहासिक चंद्रयान-3 मिशन ने भारत को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में पहुँचने वाला पहला देश बना दिया। अपनी अग्रणी उपलब्धियों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए और जैसे-जैसे राष्ट्र वर्ष 2047 में अपने शताब्दी समारोह की ओर अग्रसर हो रहा है, इसरो भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी के निर्देशों के तहत, गगनयान मिशन के तहत समानव अंतरिक्ष उड़ान के एक नए युग की शुरुआत करने जा रहा है। LEO (निम्न भू कक्षा) में निरंतर उपस्थिति के लिए मानव अंतरिक्ष उड़ान के विज़न को राष्ट्रीय स्तर पर गति मिली है और इसे भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023 में भी रेखांकित किया गया है।

जबकि देश की अपनी समानव अंतरिक्ष उड़ान की तैयारी पूरे जोरों पर चल रही है, एक ऐतिहासिक क्षण तब आया, जब शुभांशु शुक्ला एक्सिओम-4 मिशन के भाग के रूप में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की यात्रा करने वाले पहले भारतीय बने, यह मिशन

इसरो, एक्सिओम स्पेस और नासा का संयुक्त सहयोगी मिशन है।

एक्सिओम-04 मिशन में इसरो की भागीदारी भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही सम्भव हो पाई। उनके मार्गदर्शन में ही इसरो और अमरीका के बीच इस संयुक्त सहयोग की नींव रखी गई। इस मिशन की परिकल्पना वर्ष 2023 में उनकी अमरीका की ऐतिहासिक यात्रा और तत्कालीन राष्ट्रपति के साथ उनकी मुलाकात के दौरान की गई थी, जिसमें संयुक्त राज्य अमरीका एक व्यापक साझेदारी के तहत आई.एस.एस. पर एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को भेजना था।

आज, इसरो को एक्सिओम 4 मिशन (ए.एक्स. -04) की सफलता की घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है। यह मिशन 25 जून, 2025 को प्रमोचित किया गया था, जिसमें इसरो के गगनयात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला सहित चार अंतरराष्ट्रीय कर्मीदल सदस्य को अंतरिक्ष में भेजा गया।

इसरो को इस बात पर भी गर्व है कि सचिव, अंतरिक्ष विभाग/अध्यक्ष, इसरो के नेतृत्व में एक उच्च-स्तरीय

आई.एस.एस. के अंदर लहराता राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

आई.एस.एस. मे वैज्ञानिक प्रयोग करते शुभांशु शुक्ला

प्रतिनिधिमंडल 11 जून को प्रमोचन के प्रयास को रोकने में सफल रहा, क्योंकि रॉकेट इंजन की एक लाइन में रिसाव हो गया था। टीम के दृढ़ संकल्प ने प्रमोचन से पहले सुधार और परीक्षण सुनिश्चित किया। यह गंभीर समस्याओं की पहचान करने और अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में हमारे वैज्ञानिकों और अभियंताओं की तकनीकी दक्षता को दर्शाता है।

इसरो के गगनयात्री शुभांशु शुक्ला को गगनयान अंतरिक्ष यात्रियों के समूह में से एक्सिओम-04 मिशन के लिए मिशन पायलट और मुख्य कर्मीदल के सदस्य के रूप में चुना गया, जबकि उनके साथी गगनयात्री प्रशांत बी. नायर को मिशन के लिए बैकअप कर्मीदल के सदस्य के रूप में नामित किया गया। कर्मीदल का चयन कड़े नैदानिक, मनोवैज्ञानिक और वायु-चिकित्सीय मूल्यांकन के बाद किया गया।

शुभांशु शुक्ला और प्रशांत बी. नायर, दोनों ने एक विशिष्ट मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन के विभिन्न पहलुओं से परिचित होने के लिए रूस और अमरीका सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया है। प्रशिक्षण मॉड्यूल में उन्नत अंतरिक्षयान प्रणालियाँ, आपातकालीन प्रोटोकॉल, वैज्ञानिक नीतभार प्रचालन,

सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण अनुकूलन, अंतरिक्ष चिकित्सा और उत्तरजीविता प्रशिक्षण शामिल हैं। यह प्रशिक्षण अंतरिक्ष यात्री की तैयारी के उच्चतम मानकों को दर्शाता है, जो उन्हें भारत के उदीयमान अंतरिक्ष अन्वेषकों का एक गौरवशाली प्रतिनिधि बनाता है।

आई.एस.एस. में अपने 14 दिवसीय प्रवास के दौरान, गगनयात्री शुभांशु शुक्ला ने सात वैज्ञानिक प्रयोगों के एक समूह को पूरा किया, जो सूक्ष्म-गुरुत्व विज्ञान में भारतीय अनुसंधान समुदाय के महत्त्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। प्रमुख भारतीय अनुसंधान संस्थानों द्वारा डिज़ाइन किए गए और इसरो द्वारा समन्वित ये प्रयोग टार्डिग्रेड्स की भारतीय प्रजाति, मायोजेनेसिस, मेथी और मूँग के बीजों का अंकुरण, सयानोबैक्टीरिया, सूक्ष्म शैवाल, फसल के बीजों और इलेक्ट्रॉनिक प्रदर्शन के साथ संज्ञानात्मक परीक्षण पर केंद्रित थे। सभी प्रयोग सफलतापूर्वक पूरे हुए और ये नमूने विस्तृत उड़ान-पश्च विश्लेषण के लिए वापस लाए गए हैं।

जन-बाह्यसंपर्क घटक एक्सिओम - 04 मिशन का एक अभिन्न अंग था, जिसने भारत की अंतरिक्ष उपलब्धियों को उसके नागरिकों और छात्रों से जोड़ा था। इन कार्यक्रमों ने राष्ट्रीय गौरव का जश्न मनाते हुए अगली पीढ़ी को प्रेरित करने के महत्त्व को रेखांकित किया।

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से, गगनयात्री शुभांशु शुक्ला की माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी (28 जून, 2025) के साथ एक ऐतिहासिक सीधी बातचीत हुई और उन्होंने मिशन को सम्भव बनाने के लिए माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद दिया।

उन्होंने वीडियो लिंक के माध्यम से त्रिवेंद्रम और लखनऊ के स्कूली छात्रों के साथ भी बातचीत की (03 जुलाई, 2025), इसके बाद अमेचर रेडियो ऑन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ARISS) पर दो सत्र किए गए, जिससे बेंगलूरु (4 जुलाई, 2025) तथा पूर्वोत्तर भारत (8 जुलाई, 2025) के स्कूली छात्रों के साथ

माननीय प्रधानमंत्री जी के साथ बातचीत

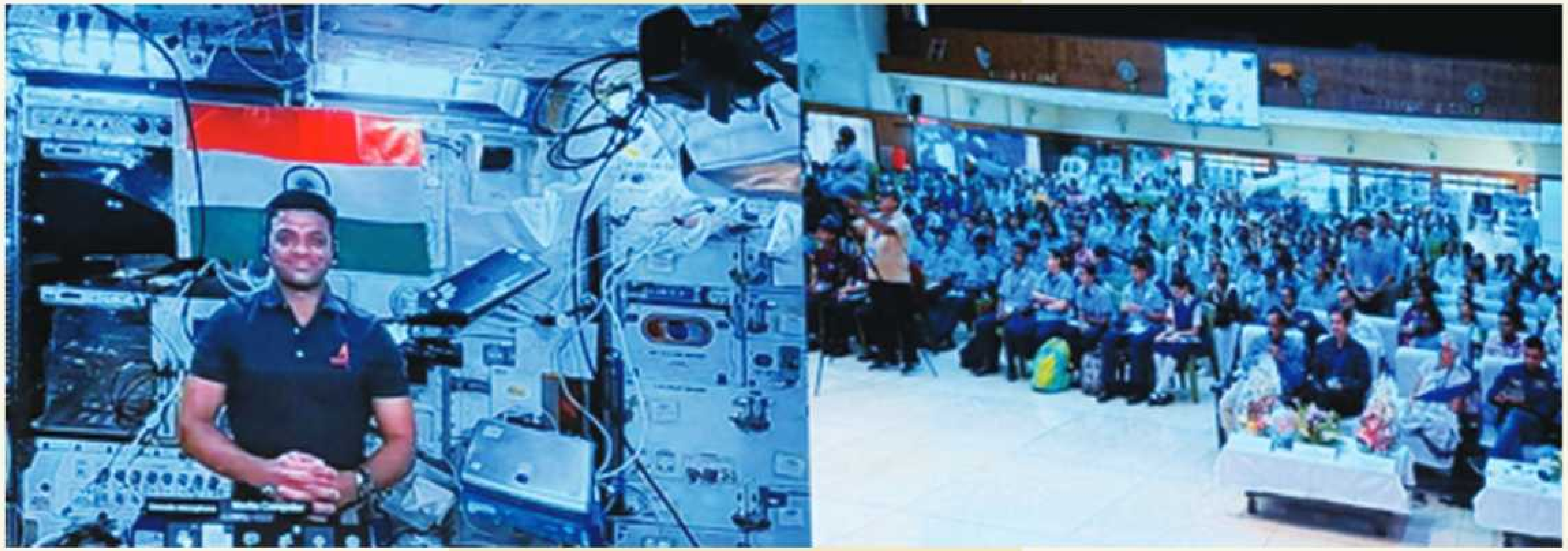

छात्रों के साथ बातचीत

वास्तविक समय में बातचीत सम्भव हो पाई।

वार्ता सत्रों के दौरान, उन्होंने छात्रों के कई सवालों के जवाब दिए, जिनमें अंतरिक्षयात्री बनने और आई.एस.एस. में जीवन के बारे में सवाल पूछे गए। 6 जुलाई, 2025 को शुक्ला ने अध्यक्ष, इसरो के साथ टेली कान्फ्रेंस भी की, जिसमें भारतीय विज्ञान नीतभार और प्रारम्भिक प्रेक्षणों की स्थिति साझा की गई।

इस संवाद कार्यक्रम का प्रसारण पूरे भारत में लाखों लोगों तक पहुँचा और यह भारत की अंतरिक्ष कूटनीति में एक प्रतीकात्मक उपलब्धि साबित हुई। इन कार्यक्रमों ने न केवल मिशन की दर्शिता बढ़ाई, बल्कि भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम तथा उसके युवा आकांक्षियों के बीच की दूरी को पाटने में भी मदद की, जो पीढ़ियों के लिए स्थायी प्रेरणा का स्रोत बना।

मिशन के उद्देश्यों को पूरा करते हुए, चार अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर ड्रैगन अंतरिक्षयान 14 जुलाई 2025 को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) से अलग हुआ और 15 जुलाई, 2025 को प्रशांत महासागर में उतरा (स्प्लैश डाउन किया), जो इसरो-नासा के संयुक्त मिशन-एक्सिओम-04 की सफलता का प्रतीक बना। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने रेखांकित किया कि शुक्ला की वापसी ने देशव्यापी उत्साह का संचार किया। ऐसी सफलताएँ राष्ट्र को एकजुट करती हैं और भारत को तकनीकी रूप से उन्नत लोकतंत्र के रूप में स्थापित करती हैं तथा वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में इसकी आवाज़ को सशक्त करती हैं। यह मिशन लम्बी अवधि के कर्मीदल युक्त मिशनों के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रचालनात्मक परीक्षण स्थल के रूप में कार्य करता है, जो अंतरिक्ष यात्रियों के कल्याण, प्रणाली व्यवहार और बहु-एजेंसी समन्वय के सम्बंध में देश के चल रहे गगनयान कार्यक्रम के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

भविष्य की ओर देखते हुए, भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम व्यापक विज़न और उत्साह के साथ जारी रहेगा। हमारे सामने 'स्पेस विज़न 2047' है, जिसे दूरदर्शी माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। इसमें उच्च क्षमता और मॉड्यूलर विन्यास वाले नई पीढ़ी के प्रमोचनयानों का विकास, गगनयान और चंद्रयान मिशनों की श्रृंखला, 2035 तक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण और 2040 तक चंद्रमा पर भारतीय का अवतरण शामिल है।

जहाँ चंद्रयान-4 मिशन का उद्देश्य चंद्रमा के नमूने पृथ्वी पर लाना है, वहीं चंद्रयान-5 उच्च क्षमता वाले चंद्र लैंडर और 100 दिनों के चंद्र अन्वेषण का प्रदर्शन करेगा। इसके अलावा, हमारे पास शुक्र ग्रह का अध्ययन करने के लिए शुक्र कक्षित्र मिशन और मंगल ग्रह की सतह का अध्ययन करने के लिए मंगल अवतरण मिशन भी है।

ये मिशन वैश्विक अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की स्थिति को और मजबूत करने तथा स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक देश को एक प्रमुख अंतरिक्ष शक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए 'विकसित भारत @2047' की महत्त्वपूर्ण आधारशिला का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारतीय अंतरिक्ष क्षेत्र में इन प्रेरणादायक प्रगतियों के आलोक में, मैं भारत के युवाओं से कहना चाहूँगा - अब आकाश की कोई सीमा नहीं रही। परिज्ञापी रॉकेट प्रमोचित करने वाली एक छोटी-सी टीम की यात्रा ने चंद्रमा पर अवतरण और अंतरिक्ष यात्रियों को कक्षा में पहुँचाकर देश को गौरवान्वित किया है। निडर होकर सपने देखें, कड़ी मेहनत करें और अपनी क्षमता पर विश्वास रखें। भारत की अंतरिक्ष यात्रा अब केवल उसके वैज्ञानिकों तक सीमित नहीं है अपितु यह हर उस युवा भारतीय की है जो असम्भव की कल्पना करने का साहस रखता है।

एक्सियम अंतरिक्ष मिशन

अपने 124वें 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष से सकुशल वापसी की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि पूरे देश के लिए गर्व और आनंद का क्षण है, जिसने विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रति एक नया उत्साह जगाया है। प्रधानमंत्री ने ज़ोर देकर कहा कि यह सफलता भारत के भविष्य के अंतरिक्ष मिशनों के लिए नए और रोमांचक अवसरों के द्वार खोलती है।

यह उत्साह पूरी तरह उचित है, क्योंकि शुभांशु शुक्ला ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पहुँचने वाले देश के पहले अंतरिक्ष यात्री बनकर ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने एक्सियम-4 वाणिज्यिक मिशन के तहत 18 दिनों का सफल मिशन पूरा किया। यह भारत की पहली आईएसएस यात्रा थी, जिसने वैश्विक अंतरिक्ष मंच पर देश की बढ़ती भूमिका को रेखांकित किया।

ऐतिहासिक महत्त्व के अतिरिक्त, इस मिशन ने भारत की भावी महत्त्वाकांक्षाओं की नींव रखी है जिनमें बहुप्रतीक्षित गगनयान कार्यक्रम और भारत का स्वदेशी अंतरिक्ष स्टेशन – भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का विकास शामिल है।

अंतरिक्ष में शुभांशु शुक्ला का समय वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण रहा। उन्होंने इसरो, जैव-प्रौद्योगिकी विभाग और नासा द्वारा विकसित नवोन्मेषी खाद्य एवं पोषण प्रयोग पूरे किए, जिनका उद्देश्य लम्बी अवधि के मिशनों में अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य में सुधार करना है।

अंतरिक्ष में भारत की छलाँग

इस मिशन ने कम गुरुत्वाकर्षण के कारण शारीरिक और तंत्रिका सम्बंधी परिवर्तनों के साथ-साथ, अंतरिक्ष परिचालन और आपातकालीन तैयारी में अमूल्य व्यावहारिक अनुभव भी प्रदान किया है, जिससे भारत को आगामी मानव अंतरिक्ष उड़ानों के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त हुआ।

ग्रुप कैप्टन शुक्ला की यह यात्रा सिर्फ एक तकनीकी सफलता से कहीं बढ़कर, करोड़ों भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का दीपस्तंभ है। यह जिज्ञासा जगाती है, सपनों को ऊर्जा देती है और यह दर्शाती है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी भारत के भविष्य के लिए असीम सम्भावनाएँ संजोए हुए हैं। भारत की अंतरिक्ष में छलाँग वास्तव में शुरू हो चुकी है।

इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय

मराठा किलों को मिला यूनेस्को का सम्मान

"हम सभी को गर्व से भर देने वाली एक और खबर आई है, UNESCO से। UNESCO ने 12 मराठा किलों को World Heritage Sites के रूप में मान्यता दी है। ग्यारह किले महाराष्ट्र में, एक किला तमिलनाडु में। हर किले से इतिहास का एक-एक पन्ना जुड़ा है। हर पत्थर, एक ऐतिहासिक घटना का गवाह है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

यह मान्यता, न केवल मराठा वास्तु कला और छत्रपति शिवाजी महाराज की सैन्य प्रतिभा का उत्सव है, बल्कि राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी है जिसमें स्वराज्य के आह्वान और उनकी राजमुद्रा में अंकित आकांक्षा 'मुद्रा भद्राय राजते' (सद्भावपूर्ण शासन) की अनुगूँज है।"

-विशाल विनोद शर्मा
यूनेस्को में भारतीय राजदूत तथा स्थायी प्रतिनिधि

इतिहास के पन्ने अक्सर पत्थरों में लिखे जाते हैं, और शायद ही कोई संरचना किसी सभ्यता की दृढ़ता, वैभव और सांस्कृतिक विरासत को किलों जितना जीवंत रूप में दर्शाती हो। एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, मराठा सैन्य परिदृश्य—बारह भव्य किलों की श्रृंखला—को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया है। यह सम्मान न केवल इन संरचनाओं की स्थापत्य प्रतिभा का उत्सव है, बल्कि उस युग की याद भी ताज़ा करता है जब मराठा साम्राज्य भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय शक्ति के रूप में खड़ा था। सह्याद्रि पर्वत श्रृंखलाओं, कोंकण तट और दक्कन के पठार में फैले ये किले मराठों की रणनीतिक कुशलता, सांस्कृतिक समृद्धि और अटूट आत्मबल के जीवंत प्रमाण हैं।

मराठा किलों का ऐतिहासिक महत्त्व

17वीं से 19वीं शताब्दी ईस्वी के बीच निर्मित इन 12 किलों का तंत्र मराठा साम्राज्य की सैन्य दृष्टि और स्थापत्य कौशल का अद्वितीय उदाहरण है। ये किले महाराष्ट्र और तमिलनाडु में हैं।

इनमें महाराष्ट्र में सल्हेर, शिवनेरी, लोहगढ़, खांदेरी, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला, विजयदुर्ग और सिंधुदुर्ग तथा तमिलनाडु में जिंजी किला शामिल हैं।

छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके उत्तराधिकारियों के नेतृत्व में मराठा साम्राज्य ने मध्यकालीन भारत में एक निर्णायक शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई। अपने चरम पर, यह साम्राज्य विशाल भूभाग में फैला था और मुगलों सहित अन्य प्रादेशिक शक्तियों को चुनौती दे रहा था। इस विस्तार और रक्षा का आधार थे—ये किले, जो ऊंचे पर्वतों, कठिन चट्टानों और घने जंगलों पर बनाए गए थे। ये सैन्य अड्डे, प्रशासनिक केंद्र और मराठा सत्ता के प्रतीक थे। प्रत्येक किले की अपनी अलग भूमिका थी—राजधानी रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ, सिंहगढ़ में वीरता की अमर गाथाएँ लिखी गईं, प्रतापगढ़ में शिवाजी और अफ़ज़ल ख़ान के बीच ऐतिहासिक लड़ाई हुई, और शिवनेरी, जो स्वयं महान राजा का जन्मस्थान था।

मराठा किलों की विशेषता उनकी अद्वितीय सैन्य वास्तुकला थी। अन्य साम्राज्यों के भव्य महलों के विपरीत, इन्हें व्यावहारिकता और दीर्घकालिक उपयोग के लिए बनाया गया था। इनमें बहुस्तरीय प्राचीर, गुप्त मार्ग, जटिल तरीकों वाले जल-संग्रह तंत्र और रणनीतिक दृष्टिकोण से बनाए गए प्रेक्षण स्थल थे, जो कम संसाधनों में भी आक्रमणकारियों को परास्त करने में

सहायक होते थे।

सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक विरासत

सैन्य उपयोगिता के अलावा, ये किले संस्कृति, शासन और आध्यात्मिकता के भी केंद्र थे। इनके भीतर बने मंदिर, अन्नागार और प्रशासनिक कार्यालय मराठा शासकों की समग्र दृष्टि को दर्शाते थे। यहाँ होने वाले उत्सव, राज्याभिषेक और शाही घोषणाएँ इन्हें सामाजिक और राजनीतिक ताने-बाने का अभिन्न हिस्सा बनाती थीं। आज भी स्थानीय लोककथाओं में तानाजी मालुसरे के सिंहगढ़ पर गोह की मदद से चढ़ने या शिवाजी को सुरक्षित निकालने के लिए बाजी प्रभु देशपांडे के पावनखिंड पर सेना को रोके रखने की गाथाएँ जीवित हैं।

यूनेस्को मान्यता: संरक्षण की ओर एक कदम

विश्व धरोहर समिति के 47वें सत्र में ऐतिहासिक निर्णय में, भारत की 2024-25 की आधिकारिक नामांकन सूची मराठा सैन्य परिदृश्य को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया। यह भारत की 44वीं संपत्ति है जिसे इस सूची में शामिल किया गया है।

यह मान्यता न केवल ऐतिहासिक धरोहर के रूप में, बल्कि मानवीय सृजनशीलता और रणनीतिक सोच के उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में इन स्थलों के असाधारण सार्वभौमिक मूल्य को स्वीकार करती है। इससे संरक्षण कार्यों को प्रोत्साहन मिलेगा, पर्यटन बढ़ेगा और भारत की समृद्ध विरासत के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ेगी। भारत सरकार और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) इन किलों के पुनरुद्धार और संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस गौरवशाली अतीत से जुड़ सकें।

पत्थरों में गढ़ी विरासत

मराठा किले केवल पत्थर और गारे की इमारतें नहीं हैं-वे एक सभ्यता के गौरव, कौशल और अटूट आत्मबल के प्रतीक हैं। इन किलों को यूनेस्को द्वारा मान्यता मिलना एक लम्बे समय से प्रतीक्षित सम्मान है, जो इन्हें विश्व धरोहर में उनका सही स्थान प्रदान करता है। जैसे-जैसे इनके संरक्षण और प्रचार के प्रयास जारी रहेंगे, ये केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं रहेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनेंगे। जैसा कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने कहा था- "राजा की महानता उसके किलों की मज़बूती और उसकी प्रजा के कल्याण में होती है।" आज ये किले उसी विरासत के अनन्त प्रहरी बनकर खड़े हैं, और संपूर्ण विश्व को इतिहास के एक स्वर्णिम अध्याय का साक्षी बनने का निमंत्रण दे रहे हैं।

मराठा सैन्य परिदृश्य

भारत की स्वराज्य भावना का वैश्विक अभिनन्दन

देवेन्द्र फडणवीस
मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

महाराष्ट्र और भारत के इस गौरवपूर्ण क्षण में, मैं अपने राज्य के लोगों के साथ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने भारत के मराठा सैन्य क़िलों को यूनेस्को की मान्यता मिलने पर गरिमामयी बातें कहीं। उन्होंने, छत्रपति शिवाजी महाराज की अमर विरासत— उनका सुशासन, सैन्य सामर्थ्य, सांस्कृतिक गौरव और सामाजिक कल्याण पर बल देकर जो सम्मान व्यक्त किया है, वो उसी भावना का प्रतीक है जो इन 12 भव्य क़िलों में आज भी जीवित है।

ये क़िले, जिनमें से 11 महाराष्ट्र में और एक तमिलनाडु में है - का निर्माण, रूपांतरण या विस्तार 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 19वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों के बीच हुआ था। साल्हेर, शिवनेरी, लोहागढ़, खण्डेरी, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, सुवर्णदुर्ग, पन्हाला, विजयदुर्ग और सिंधुदुर्ग (महाराष्ट्र) के साथ-साथ तमिलनाडु के जिन्जी में स्थित इन क़िलों को पैरिस में आयोजित विश्व धरोहर समिति के 47वें सत्र में भारत की 44वीं यूनेस्को विश्व धरोहर सम्पदा के रूप में मान्यता दी गई। यह मान्यता केवल स्थापत्य कौशल का उत्सव नहीं है, बल्कि यह शिवाजी महाराज की स्वराज्य यानी अपना शासन की दृष्टि में निहित साहस, रणनीति और सांस्कृतिक गौरव की धरोहर का सम्मान भी है।

माननीय प्रधानमंत्री ने इस उपलब्धि को हर भारतीय के लिए गर्व का क्षण बताया। उन्होंने इन क़िलों की भव्यता की प्रशंसा करते हुए नागरिकों से आग्रह किया कि वे जाकर इन्हें देखें और मराठा साम्राज्य की शासन परम्पराओं, सैन्य सामर्थ्य तथा अन्याय के विरुद्ध उनके अडिग संघर्ष से प्रेरणा लें।

साहस और संस्कृति के संरक्षक

सह्याद्रि की दुर्गम पर्वत श्रृंखलाओं और कोंकण तट पर स्थित हर दुर्ग, शिवाजी महाराज के युद्ध कौशल, शासन, और राष्ट्र-निर्माण में अद्वितीय दक्षता के साक्षात प्रमाण हैं। ये मिलकर स्वराज्य की भावना साकार करते हैं और नेतृत्व, धैर्य तथा सांस्कृतिक गौरव की अनमोल सीख देते हैं।

शिवाजी महाराज, भू-भाग की अपनी समझ और गुरिल्ला रणनीति से भारतीय युद्धकला में क्रान्ति लाए। राजगढ़, रायगढ़ और साल्हेर जैसे पहाड़ी क़िले अभेद्य थे, जबकि सिंधुदुर्ग, विजयदुर्ग, सुवर्णदुर्ग और खण्डेरी जैसे तटीय गढ़ों ने समुद्र को ही ढाल बना लिया। रक्षा और संचार से आपस में जुड़े ये क़िले, तीव्र सैन्य संचालन, रणनीतिक समन्वय और लम्बी घेराबंदी का सामना करने में सक्षम थे। धरती को ही अपना सहयोगी बना लेने की यह शिवाजी महाराज की दूरदृष्टि का प्रमाण हैं।

स्वराज्य, शासन और विजय के प्रतीक

महान मराठा योद्धा और दूरदर्शी नेता के लिए क़िले, केवल सैन्य चौकियाँ नहीं बल्कि प्रशासनिक केन्द्र और स्वराज्य के प्रतीक भी थे। जिस रायगढ़ में 1674 ई. में शिवाजी महाराज का छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक हुआ, वो

स्वदेशी शासन की औपचारिक स्थापना का प्रतीक बना। शिवनेरी, जहाँ 1630 ई. में उनका जन्म हुआ था, वो उनके साहस और सेवा के मूल्यों का आधार बना। दो दशकों से अधिक समय तक मराठाओं की राजधानी रहे राजगढ़ में, महत्त्वपूर्ण नीतियाँ और सैन्य रणनीतियाँ बनीं जो उनके विकेंद्रीकृत और योग्यता-आधारित शासन के संकल्प के साक्ष्य हैं। प्रतापगढ़ क़िला, अफ़ज़ल ख़ान के साथ हुई ऐतिहासिक मुठभेड़ के लिए प्रसिद्ध है जबकि पन्हाला, सिद्दी जौहर की घेराबन्दी से शिवाजी महाराज के साहसपूर्ण तरीक़े से बच निकलने की याद दिलाता है। 1672 ईस्वी में साल्हेर में मराठाओं ने, उस युग में सबसे विशाल खुले मैदान में लड़े गए युद्धों में से एक में, मुग़लों पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। लोहागढ़ जो दक्षिण के पठार और कोंकण तट के बीच व्यापार नियंत्रण के लिए महत्त्वपूर्ण था उसे 1670 ईस्वी में शीघ्र ही पुनः जीत लिया गया जिससे उनकी गतिशील युद्धकला की कामयाबी साबित हुई।

समय से आगे की दृष्टि

शिवाजी महाराज की नौसैनिक दृष्टि समय से आगे थी। सिंधुदुर्ग और विजयदुर्ग समुद्री रक्षा के गढ़ बने जिन्होंने व्यापार मार्गों की रक्षा और विदेशी शक्तियों का सामना किया।

उनकी प्रत्यक्ष निगरानी में बना सिंधुदुर्ग, भारत की पहली संगठित नौसेना का केन्द्र बना।

मराठा क़िलों का निर्माण ऐसी दृढ़ता और दक्षता से किया गया था कि ये प्रायः अपने परिवेश में घुल-मिल कर एक हो जाते थे। पहाड़ी क़िलों में वर्षा जल संचयन और चट्टानों को काटकर बनाए गए जलाशय थे, जबकि खण्डेरी जैसे समुद्री क़िलों में भी मीठे पानी के कुएँ मौजूद थे। घुमावदार रास्ते, गुप्त सीढ़ियाँ और प्रवेश के अनेक द्वार, शत्रुओं की गति धीमी करके सामरिक बढ़त देते थे। महाराष्ट्र से दूर तमिलनाडु का जिन्जी क़िला, मुग़ल आक्रमण के दौरान मराठा राजधानी रहा जो साम्राज्य की दृढ़ता और विस्तार का प्रतीक है।

संरक्षण और जन-सहभागिता बढ़ाने को प्रतिबद्ध महाराष्ट्र सरकार ने, प्रत्येक क़िले के लिए चरणबद्ध प्रबन्धन योजनाएँ शुरू की हैं, जो इनके संरक्षण, पर्यावरणीय देखभाल और सतत पर्यटन पर एकाग्र हैं। यह योजनाएँ, सैलानियों को उत्तम अनुभव देंगी और ऐतिहासिक प्रामाणिकता को सुरक्षित रखते हुए सुनिश्चित करेंगी कि भावी पीढ़ियों के लिए ये क़िले, शिक्षा और गर्व का स्रोत बने रहें।

इन ऐतिहासिक धरोहर स्थलों पर हमें आपकी प्रतीक्षा है।

भारत के मराठा दुर्ग यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल

मराठा सैन्य कुशाग्रता की पहचान

विशाल विनोद शर्मा
यूनेस्को में भारतीय राजदूत तथा स्थायी प्रतिनिधि

भारत के मराठा सैन्य परिदृश्य - 12 दुर्गों का शृँखलाबद्ध नामाँकन - को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया जाना, भारत की सांस्कृतिक कूटनीति और विरासत संरक्षण की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह मान्यता, न केवल मराठा वास्तु कला और छत्रपति शिवाजी महाराज की सैन्य प्रतिभा का उत्सव है, बल्कि राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक भी है जिसमें स्वराज्य के आह्वान और उनकी राजमुद्रा में अंकित आकांक्षा 'मुद्रा भद्राय राजते' (सद्भावपूर्ण शासन) की अनुगूँज है। ऑपरेशन सिन्दूर में भारत की रणनीतिक सफलता के तुरन्त बाद मिली यह अंतरराष्ट्रीय मान्यता एक रूपक के तौर पर, स्वराज्य के लिए सदियों पुराने संघर्ष को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत की दृष्टि से जोड़ती है।

पहाड़ी शिखरों, पठारों, तटों, और द्वीपों पर मराठाओं के बनाए 12 दुर्ग उस सम्पूर्ण सैन्य प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने 17वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी के आरम्भिक वर्षों तक मराठा साम्राज्य को आकार दिया। रायगढ़, प्रतापगढ़, सिन्धुदुर्ग, विजयदुर्ग, शिवनेरी, और जिंजी दर्शाते हैं कि कैसे मराठाओं ने दुर्जेय साम्राज्यों का सामना करने के लिए भौगोलिक लाभ को अपने इंजीनियरिंग कौशल से जोड़ा था। यह दुर्ग, तीन सामरिक धुरियों में बँटे हैं: सह्याद्रि पर्वतीय दुर्ग, कोंकण के तटीय दुर्ग और दक्षिण के पठारी दुर्ग। प्रत्येक दुर्ग की दीवारों, जलाशयों, भण्डारघरों और प्रहरी टॉवर की बनावट जहाँ कुदरती भू-दृश्य के अनुकूल है वहीं भीतर मन्दिर और बाज़ार भी हैं जो आत्मनिर्भर, समुदाय-केंद्रित शासन व्यवस्था दर्शाते हैं।

यूनेस्को ने इन क़िलों को मानदण्ड (iv) के तहत सैन्य वास्तुकला और भौगोलिक चुनौतियों के अनुकूल उत्कृष्ट

उदाहरण के रूप में मान्यता दी है जो चीन की विशाल दीवार या फ्रांस के वॉबान किलों के समतुल्य है, और मानदण्ड (vi) के तहत यह मान्यता, स्वशासन के लिए मराठाओं के संघर्ष तथा छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रति सम्मान की उनकी जीवन्त परम्पराओं के स्थायी सम्बंध के लिए दी गई है। अखण्डता, प्रामाणिकता और प्रभावशाली प्रबन्धन ने भावी पीढ़ियों के लिए इन क़िलों का संरक्षण सुनिश्चित किया। ये दुर्ग निरे बेजान पत्थर नहीं, यह तो मराठा भावना की आत्मा हैं।

मान्यता की पृष्ठभूमि में कूटनीतिक पहल : यूनेस्को से मान्यता दिलवाने की यात्रा में इन क़िलों की सामरिक कुशाग्रता पर बल दिया गया। यूनेस्को में भारत का स्थायी प्रतिनिधिमण्डल (PDI), संस्कृति मंत्रालय और विदेश मंत्रालय, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) तथा महाराष्ट्र सरकार ने मिलकर अनेक स्तरों पर कूटनीति का विरासत अभियान चलाया।

मुख्य कार्यों में शामिल थे : अंतरराष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद (ICOMOS) के प्रश्नों का नए पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ उत्तर देना, जन-जागरूकता अभियानों -जैसे शिवाजी महाराज जयन्ती पर यूनेस्को के विश्व धरोहर निदेशक का मराठी में बोलते हुए वायरल वीडियो और पैरिस में वीडियो कॉन्फ्रेंस व ऑडियो-विज़ुअल प्रस्तुतियों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर पैरवी को बढ़ावा देना। कम-से-कम 14 सह-प्रायोजक देशों का समर्थन सुनिश्चित करके और टाल-मटोल के प्रारम्भिक प्रयासों को पार करते हुए भारत ने 47वें विश्व धरोहर समिति सत्र का मतदान जीत लिया - ग्रीस के नेतृत्व में 21 में से 19 सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया जबकि तुर्किए ने मतदान में हिस्सा नहीं लिया। इस प्रयास को एक शब्द 'टीमवर्क' में समेटते हुए कह सकते हैं - मेहनत का फल मीठा होता है।

विरासत नेतृत्व पर वैश्विक वक्तव्य: यह मान्यता भारत को जटिल क़िलेबंदी प्रणालियों के लिए प्रसिद्ध देशों की श्रेणी में स्थान देती है। इससे पूर्व, फ्रांस के फ़ोर्टिफ़िकेशन ऑफ़ वॉबान (2008), भारत के राजस्थान के पहाड़ी क़िले (2013) और वैनिशियन वर्क्स ऑफ़ डिफ़ैन्स (2017) को यह मान्यता मिली थी। 95,000 हेक्टेयर में फैले बफ़र ज़ोन को मिली यह मान्यता, स्मारक-केंद्रित दृष्टिकोण से परिदृश्य-स्तरीय विरासत प्रबन्धन की ओर बदलाव का संकेत है, जिसमें पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण, सामुदायिक भागीदारी और पर्यटन विकास को प्राथमिकता दी गई है। महाराष्ट्र को आशा है कि जैसे 2013 के बाद राजस्थान में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या बढ़ी थी वैसे ही महाराष्ट्र में भी बढ़ेगी।

गर्व और निरन्तरता के प्रतीक : ये दुर्ग सतत दृढ़ता, आत्मसम्मान और सभ्यता के प्रतीक हैं। ऊबड़-खाबड़ चट्टानें और समुद्रमुखी सैन्य-दुर्ग, विशाल साम्राज्यों के विरुद्ध मराठाओं का साहसिक प्रतिरोध दर्शाते हैं। सिंधुदुर्ग और विजयदुर्ग जैसे तटीय दुर्ग नौसैनिक शक्ति प्रदर्शित करते हैं, जबकि राजगढ़ और साल्हेर जैसे पहाड़ी क़िले दक्कन के भौगोलिक प्रसार पर अपना दबदवा दिखाते हैं। रायगढ़ में आयोजित वार्षिक समारोह, स्थानीय उत्सव और विरासत यात्राएँ जहाँ इन क़िलों को जीती-जागती सांस्कृतिक स्मृति में बनाए रखती हैं, वहीं इनके जल-प्रबन्धन तंत्र और पारिस्थितिक अनुकूलन आज भी सतत विकास के आदर्श उदाहरण हैं।

विरासत की रक्षा : आठ दुर्ग, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के संरक्षण में हैं और चार दुर्ग, महाराष्ट्र पुरातत्त्व निदेशालय के अधीन हैं। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में राज्य स्तरीय शीर्ष सलाहकार समिति, नीति, शोध और संरक्षण कार्यों का समन्वय करती है जिसमें ज़िला स्तरीय समितियाँ और विरासत से जुड़ी ग़ैर-सरकारी संस्थाएँ सहयोग करती हैं। संरक्षण को अधिक मज़बूती देने के लिए यूनेस्को ने डिजिटल दस्तावेज़ीकरण और जीआईएस-आधारित जोखिम प्रबन्धन की सिफ़ारिश करते हुए बफ़र ज़ोन के दूसरे दर्जे के क़िलों को शामिल करने की सम्भावना व्यक्त की है।

विरासत से परे एक विजय : मराठा सैन्य दुर्गों को मिली मान्यता केवल विरासत को मिली मान्यता नहीं है- यह भारत के बढ़ते सांस्कृतिक आत्मविश्वास और कूटनीतिक क्षमता का प्रतीक भी है। रायगढ़ की ऊँची प्राचीरों से लेकर सिंधुदुर्ग की समुद्री लहरों से भीगते बुर्जों तक, ये दुर्ग अब दुनिया को मराठा वीरता, भारतीय सभ्यता के लचीलेपन और 'अभिनव भारत' के उदय की गाथा सुनाते हैं- एक ऐसा भारत जो अपने अतीत का सम्मान करते हुए अपना भविष्य गढ़ रहा है।

मराठा वैभव
12 क़िलों को मिला यूनेस्को का गौरव

भारत की मराठा सैन्य विरासत अब यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों का हिस्सा बन गई है। इस विरासत में 12 भव्य किले शामिल हैं, जिनमें से 11 महाराष्ट्र में और 1 तमिलनाडु में स्थित है।

'मन की बात' के अपने 124वें सम्बोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देश को बधाई देते हुए कहा, "एक और ख़बर आई है यूनेस्को से जो हम सभी को गर्व से भर देगी। यूनेस्को ने 12 मराठा क़िलों को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी है। 11 क़िले महाराष्ट्र में और एक तमिलनाडु में है। हर क़िले से इतिहास का एक-एक पन्ना जुड़ा है। हर पत्थर एक ऐतिहासिक घटना का गवाह है।"

आइए, संक्षेप में इन क़िलों के बारे में जानें।

साल्हेर का क़िला

- साल्हेर क़िला महाराष्ट्र में सबसे ऊँचा क़िला है जो समुद्र की सतह से 1,567 मीटर (5,141 फ़ीट) की ऊँचाई पर स्थित है।
- यहीं पर सल्हेर की लड़ाई (1672) लड़ी गई थी जिसमें मराठाओं ने निर्णायक रूप से मुग़लों को परास्त किया था।

शिवनेरी का क़िला

- शिवनेरी क़िला महान मराठा राजा छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्मस्थान है।
- क़िले में वर्षा जल एकत्रित और संरक्षित करने के लिए सात चरणों वाला एक विस्तृत जल भण्डारण तंत्र है, जिसे सप्तमातृका टंकियाँ कहा जाता है।

लोहगढ़

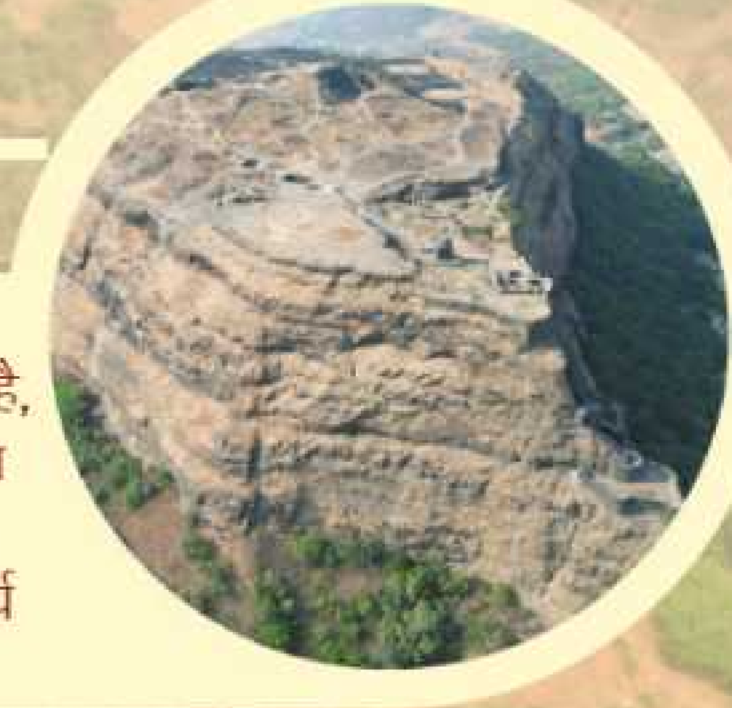

- इस क़िले में विंछू काटा नामक एक अद्वितीय 1.5 किलोमीटर लम्बी प्राचीर है, जो अपने बिच्छू जैसे आकार के कारण प्रसिद्ध है जो लड़ाईयों के दौरान एक रणनीतिक रक्षा संरचना के रूप में कार्य करती थी।

खान्देरी का क़िला

- खान्देरी किला मराठा नरेश छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1660 में बनवाया था।
- यह मराठा साम्राज्य का एक महत्त्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा था।

रायगढ़

- रायगढ़ छत्रपति शिवाजी महाराज के हिन्दवी स्वराज्य की पहली राजधानी था।
- यहीं पर शिवाजी का छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक हुआ था।

राजगढ़

- लगभग 26 वर्ष तक यह क़िला मराठा साम्राज्य की राजधानी रहा। इसके बाद 1674 में राजधानी को रायगढ़ क़िले में स्थानान्तरित कर दिया गया।
- 'राजगढ़' जिसका अर्थ है 'क़िलों का राजा', मध्यकालीन वास्तुकला की एक अद्वितीय कृति है, जिसका आधार व्यास लगभग 40 किलोमीटर तक फैला है और समुद्र तल से 1,376 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

प्रतापगढ़

- छत्रपति शिवाजी महाराज ने इसे 1656 में बनवाया था।
- यह 10 नवम्बर, 1659 को हुई प्रसिद्ध प्रतापगढ़ की लड़ाई का साक्षी है, जहाँ शिवाजी महाराज और उनकी सेना ने बीजापुर सल्तनत के शक्तिशाली अफ़ज़ल खान को पराजित किया था।

सुवर्णदुर्ग

- सुवर्णदुर्ग (अर्थात स्वर्ण का क़िला) मराठा साम्राज्य का महत्त्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा था।
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1660 में इसे बीजापुर सल्तनत से जीता था और बाद में इसे सुदृढ़ करके पोत निर्माण और मरम्मत के गोदीख़ाने के रूप में विकसित किया।

पन्हाला का क़िला

- यह एक महत्त्वपूर्ण सैन्य अड्डा था और मराठा इतिहास की सबसे वीर गाथाओं में से एक पावनखिण्ड की लड़ाई में इसकी प्रमुख भूमिका रही।
- दक्कन के सबसे बड़े क़िलों में से एक, यह लगभग 14 किलोमीटर में फैला हुआ है।

विजय दुर्ग

- इसे प्रायः "पूर्व का जिब्राल्टर" भी कहा जाता है।
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने इसे आदिलशाही शासकों से छीन कर इस क़िले को अपने क़ब्ज़े में लिया और इसे भारत के सबसे अभेद्य तटीय क़िलों में से एक में बदल दिया।

सिन्धुदुर्ग

- छत्रपति शिवाजी महाराज ने 17वीं शताब्दी में इसका निर्माण करवाया था।
- यह मराठाओं का एक महत्त्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा था, जो समुद्री व्यापार को नियंत्रित करता था और कोंकण तट पर उनका वर्चस्व बनाए रखता था।

जिंजी का क़िला

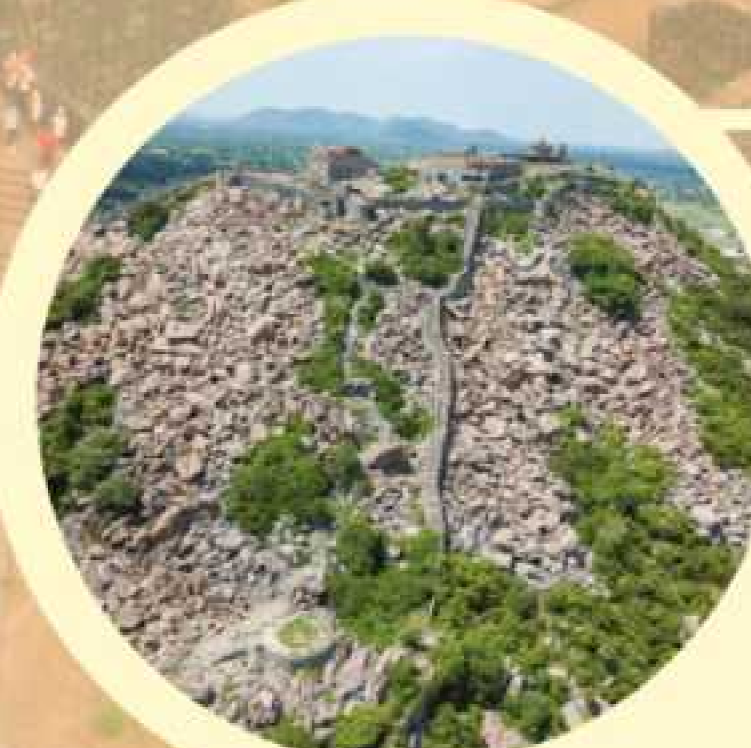

- 'पूर्व का ट्रॉय' के रूप में प्रसिद्ध;
- यह तीन पहाड़ियों – राजगिरी, कृष्णगिरि और चन्द्रगिरि – पर स्थित है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1677 में जिंजी क़िला देख कर इसे 'भारत का सबसे अभेद्य किला' कहा था।

युवा क्रान्तिकारी खुदीराम बोस

“लोगों ने जेल को घेर रखा था, जहाँ एक 18 साल का युवक, अंग्रेजों के खिलाफ अपना देश-प्रेम व्यक्त करने की कीमत चुका रहा था। जेल के अंदर, अंग्रेज अफसर, एक युवा को फाँसी देने की तैयारी कर रहे थे। उस युवा के चेहरे पर भय नहीं था, बल्कि गर्व से भरा हुआ था। वो गर्व, जो देश के लिए मर-मिटने वालों को होता है। वो वीर, वो साहसी युवा थे, खुदीराम बोस। सिर्फ 18 साल की उम्र में उन्होंने वो साहस दिखाया, जिसने पूरे देश को झकझोर दिया। तब अखबारों ने भी लिखा था – “खुदीराम बोस जब फाँसी के फंदे की ओर बढ़े, तो उनके चेहरे पर मुस्कान थी”।”

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

सबसे कम उम्र के क्रान्तिकारी

पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले में जन्मे और छह वर्ष की अल्पायु में अपने माता-पिता को खो चुके खुदीराम बोस (1889-1908), 20वीं शताब्दी के पहले दशक के आरम्भिक वर्षों में भारत के सबसे कम उम्र के क्रान्तिकारी के रूप में उभरे थे। वे ऑरोबिन्दो घोष और सिस्टर निवेदिता के सार्वजनिक सम्भाषणों; तथा बरीन्द्र कुमार घोष जैसे क्रान्तिकारियों से अत्याधिक प्रभावित थे।

देशद्रोह का मामला

15 वर्ष की आयु में उन्हें एक औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी में बग़ावत का पर्चा 'वन्दे मातरम्' वितरित करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया जिसमें एक लेख 'क्या ये हमारे राजा हैं?' भी शामिल था। ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दमनकारी शासन के विरुद्ध उनका स्वतंत्रता संग्राम के प्रति संकल्प दर्शाने का यह पहला क़दम था। पर्याप्त सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया गया। युवाओं के लिए यह मामला स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने की प्रेरणा बन गया।

मुज़फ्फरपुर षड्यंत्र मामला (अप्रैल 1908)

प्रफुल्ल चाकी के साथ, खुदीराम बोस ने मजिस्ट्रेट डगलस किंग्सफोर्ड की हत्या की साहसिक योजना में हिस्सा लिया। किंग्सफोर्ड, स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रवादियों को कठोर दण्ड देने के लिए कुख्यात थे। बोस ने मुज़फ्फरपुर में उनकी बग्घी पर बम फेंका। बाद में पता चला कि मजिस्ट्रेट उस बग्घी में सवार नहीं थे। इस प्रयास में मजिस्ट्रेट के बजाय एक वकील की पत्नी और बेटी मारी गईं।

अट्ठारह वर्ष की आयु में शहादत

इस घटना के कारण मात्र 18 वर्ष की उम्र में उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों ने मुक़द्दमा चलाकर दोषी ठहराया और 11 अगस्त, 1908 को फाँसी पर चढ़ा कर मृत्युदण्ड दे दिया।

अमर विरासत

खुदीराम बोस का बलिदान समूचे भारत में गूँज उठा। उनका जीवन युवाओं के संकल्प और राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक बन गया जिसे उनके सम्मान में रचित गीत 'एकबार बिदाय दे माँ घुरे आशी' में अमर कर दिया गया।

बुनाई का अद्‌भुत संसार

सशक्तीकरण की डोर

"7 अगस्त 1905 को एक और क्रांति की शुरुआत हुई थी। स्वदेशी आंदोलन ने स्थानीय उत्पादों और खासकर handloom को एक नई ऊर्जा दी थी। इसी स्मृति में देश हर साल 7 अगस्त को 'National Handloom Day' मनाता है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत के ग्रामीण इलाकों में करघे की लयबद्ध खट-खट एक चुपचाप चल रही बदलाव की कहानी कहती है। इसके केंद्र में हैं हज़ारों महिला-पुरुष, जो केवल कपड़ा ही नहीं, बल्कि सशक्तीकरण भी बुन रहे हैं। हथकरघा कार्य के ज़रिए बुनकर आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रहे हैं, पारम्परिक ज्ञान को फिर से जीवित कर रहे हैं और ऐसे टिकाऊ आजीविका स्रोत बना रहे हैं जो पूरे समुदाय का उत्थान करते हैं।

कभी घर के कोनों तक सीमित रही बुनाई आज गरिमा और स्वायत्तता का प्रतीक बन गई है। विशेष रूप से महिला शिल्पकार अब हाशिए से निकलकर सहकारी समितियों का संचालन कर रही हैं, दूसरों को प्रशिक्षित कर रही हैं और अपने भविष्य को आकार देने वाले फैसले ले रही हैं। करघा अब विरासत और आशा के बीच की कड़ी बन गया है।

विरासत का पुनर्जीवन, जीवन का पुनर्निर्माण : भारत का हथकरघा क्षेत्र देश की सांस्कृतिक धरोहर में गहराई से रचा-बसा है। हर क्षेत्र की अपनी अनूठी तकनीकें, पैटर्न और डिज़ाइन हैं जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं। ये बुनावट केवल वस्त्र नहीं हैं - ये स्मृति, पहचान और क्षेत्रीय गौरव के संवाहक हैं। नालंदा, बिहार के नवीन कुमार कहते हैं - "मेरे दादा और पिता बुनाई करते थे। मैं उन्हें साधारण कपड़ा बनाते देखते हुए बड़ा हुआ। अब हम चेक, बूटी और मधुबनी, नालंदा जैसे डिज़ाइन भी बनाते हैं। हम सिल्क, कॉटन, खादी की साड़ियाँ, बेडशीट, ड्रेस मटेरियल आदि बनाते हैं, जो देशभर में बिकते हैं और निर्यात भी होते हैं।"

इन प्राचीन शिल्पों को संरक्षित करके बुनकर भारत की समृद्ध विरासत के संरक्षक बन रहे हैं। साथ ही, वे पारम्परिक कौशल को आर्थिक अवसर में बदल रहे हैं। भूले-बिसरे हथकरघों और स्थानीय रंगों का पुनरुद्धार केवल संस्कृति का उत्सव नहीं है - यह जीविका, लचीलापन और स्थानीय आर्थिक विकास की रणनीति है।

'वोकल फॉर लोकल' - प्रगति का मार्ग : 'वोकल फॉर लोकल' का आह्वान महिला शिल्पकारों के हाथों में सशक्त रूप से साकार हो रहा है। स्थानीय, हस्तनिर्मित उत्पादों को चुनना केवल देशभक्ति नहीं - यह समान वृद्धि का संकल्प भी है। हर

"कृषि के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोज़गार क्षेत्र होने के नाते हथकरघा उद्योग 35 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोज़गार प्रदान करता है और परोक्ष रूप से कई अन्य लोगों की आजीविका का सहारा बनता है।"

-कॉमॉडोर राजीव अशोक (सेवानिवृत्त)
प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम

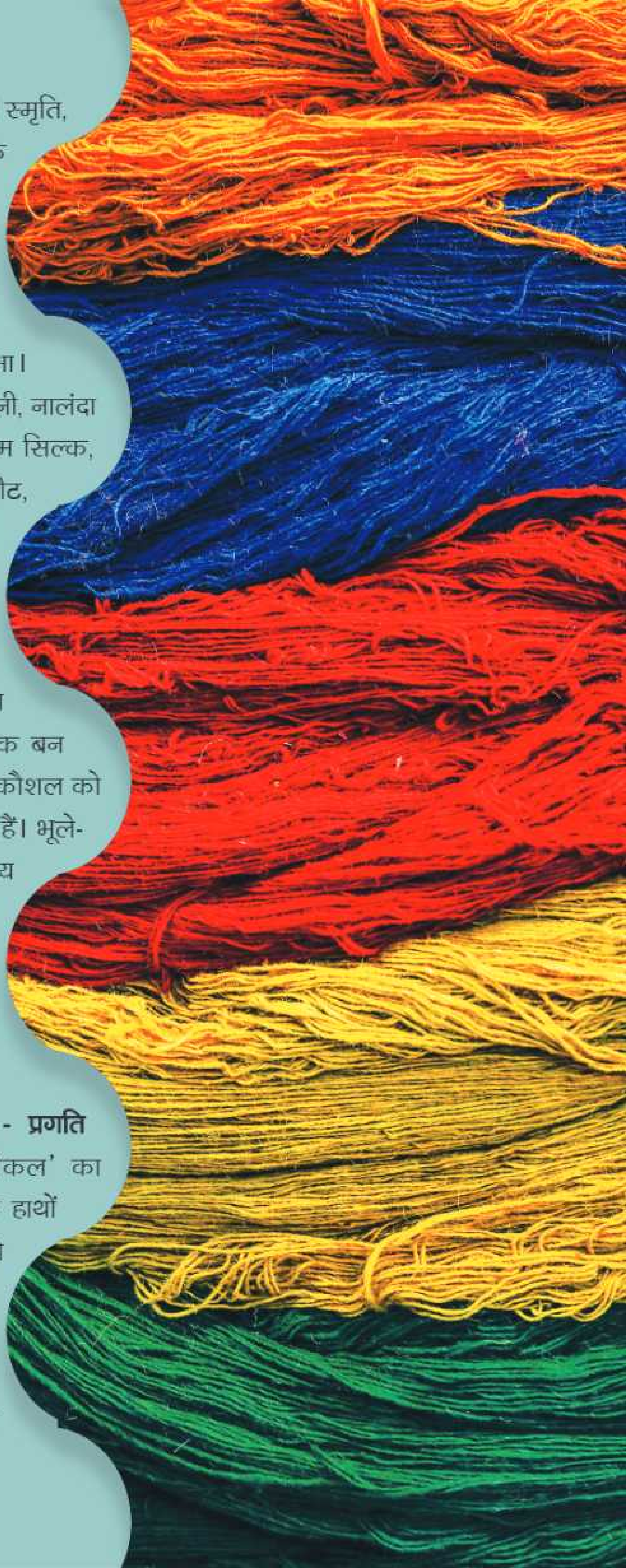

पैठणी बुनकर कविता धावले

स्थानीय हथकरघा उत्पाद की खरीद एक आत्मनिर्भर और समावेशी भारत के सपने को ऊर्जा देती है। महाराष्ट्र के छत्रपति सम्भाजीनगर की पैठणी बुनकर कविता धावले कहती हैं - “मैंने 23 साल पहले एक छोटे से कमरे से पैठणी साड़ी बुनना शुरू किया था। आज इसी आय से मेरे बच्चे जीवन में आगे बढ़े हैं - एक नौसेना में चुना गया और दूसरा NEET की तैयारी कर रहा है। मैं मराठी पैठणी साड़ी सेंटर को प्रशिक्षण के लिए और बुनकर सेवा केंद्र को करघा, कार्यशाला और सोलर यूनिट देने के लिए धन्यवाद देती हूँ। मैं सभी पैठणी बुनकरों से आग्रह करती हूँ कि हम एक-दूसरे का साथ दें और तरक्की व सफलता की ओर बढ़ें।”

स्थानीय वस्त्रों को अपनाकर उपभोक्ता ग्रामीण उद्यमियों, बुनकरों, कताई करने वालों और रंगाई करने वालों- जिनमें से अधिकतर महिलाएँ हैं, के विशाल तंत्र को सहारा देते हैं। इसका आर्थिक प्रभाव समुदायों को मज़बूत करता है, पलायन घटाता है और स्थानीय उद्यमशीलता को पोषित करता है। यह विकास का एक चक्रीय मॉडल है जिसमें हर खरीद आत्मनिर्भरता के समर्थन का वोट बन जाती है।

परम्परा और नवाचार का समन्वय : आधुनिक मंच कारीगरों को अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए नए ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर दे रहे हैं। बुनकर-नेतृत्व वाली हथकरघा समितियाँ अब डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर अपने उत्पादों का विपणन कर रही हैं, प्रशिक्षण ले रही हैं और सीधे ग्राहकों से जुड़ रही हैं। वस्त्र स्टार्ट-अप्स के उदय के साथ, पारम्परिक बुनावटें वैश्विक फैशन शो और ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म पर जगह बना रही हैं।

यह परम्परा और तकनीक का समन्वय विकास के नए रास्ते खोल रहा है। जैसे-जैसे कारीगर डिज़ाइन ट्रेंड, ब्रांडिंग और डिजिटल बिक्री में निपुण होना सीख रहे हैं, वे पैतृक ज्ञान को भविष्य के अनुरूप उद्यमों में बदल रहे हैं। नवीन कुमार के शब्दों में, “नई तकनीक और प्रशिक्षण हथकरघा उद्योग

के लिए बड़ा प्रोत्साहन है। इस तरह की और पहलें बुनकर समुदाय को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती हैं।”

आगे का राह : सच्ची आत्मनिर्भरता की शुरुआत जड़ों से होती है। जब गाँव के स्तर पर लोग उत्पादन, मुनाफ़े और प्रक्रियाओं पर नियंत्रण पाते हैं, तो सशक्तीकरण की एक श्रृंखला शुरू होती है। शिक्षा सुधरती है, स्वास्थ्य बेहतर होता है और समुदाय फलते-फूलते हैं। हथकरघा क्षेत्र के कारीगरों का समर्थन केवल एक शिल्प को बचाना नहीं है - यह सतत विकास, सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने एवं समय के साथ उसके विकास तथा राष्ट्रीय आत्मविश्वास में निवेश है। भारत के भविष्य का ताना-बाना शायद सचमुच हाथ से बुना होगा - और इसे बुनने वाले बुनकर ही होंगे।

नवीन कुमार

आज़ादी का परिधान, भारत का भविष्य

हथकरघा उत्सव का एक दशक

कॉमॉडोर राजीव अशोक (सेवानिवृत्त)
प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम

देश में हर वर्ष 7 अगस्त को मनाया जाने वाला राष्ट्रीय हथकरघा दिवस, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पारम्परिक शिल्प संरक्षित करने के साथ-साथ आधुनिक नवाचार अपनाने की अटूट प्रतिबद्धता का सशक्त प्रतीक है। कृषि के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा रोज़गार क्षेत्र होने के नाते हथकरघा उद्योग 35 लाख से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष रोज़गार प्रदान करता है और परोक्ष रूप से कई अन्य लोगों की आजीविका का सहारा बनता है। इस महत्त्वपूर्ण दिवस का एक दशक पूरा होने पर यह स्पष्ट होता है कि हथकरघा क्षेत्र शिल्प की केवल एक परम्परा ही नहीं, बल्कि भारत की 'विकसित भारत' बनने की यात्रा की एक आधारशिला बनकर उभरा है।

ऐतिहासिक महत्त्व और स्वदेशी आन्दोलन सम्बंध

राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के ऐतिहासिक महत्त्व का भारत के स्वतंत्रता संग्राम से गहरा नाता है। 1905 में इसी दिन स्वदेशी आन्दोलन की औपचारिक घोषणा की गई थी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 2015 में चेन्नई में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस का प्रथम आयोजन, आत्मनिर्भरता की इसी भावना को फिर से जीवित करने और बुनकर समुदाय को मान्यता देने का एक प्रयास था।

भौगोलिक संकेतक : पहचान और आर्थिक मूल्य का ताना-बाना

हथकरघा क्षेत्र में विकास और संरक्षण का एक महत्त्वपूर्ण साधन भौगोलिक संकेतक (GI) प्रणाली रही है। भारत में 120 से अधिक पंजीकृत हथकरघा जीआई हैं। इनमें कांचीपुरम सिल्क (तमिलनाडु), पोचमपल्ली इक्कत

(तेलंगाना), चन्देरी (मध्य प्रदेश), मुगा सिल्क (असम), मोइरांग फी (मणिपुर), तांगलिया (गुजरात), शाक्तापर (ओड़िशा) इत्यादि प्रमुख हैं।

जीआई मान्यता, न केवल बुनकर समुदाय को नक़ली उत्पादन से बचाती है बल्कि उत्पाद का बाज़ार मूल्य भी बढ़ाती है, जिससे उसकी वैश्विक पहचान और ब्राण्ड छवि सुदृढ़ होती है। सरकार और राष्ट्रीय हथकरघा विकास निगम जैसी कार्यान्वयन एजेंसियाँ, जीआई के बाद की पहल को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही हैं जिनमें अधिकृत उपयोक्ता प्रमाणन, डिजिटल ट्रेसेबिलिटी, ब्राण्ड निर्माण, डिज़ाइन नवाचार, शीर्षस्थ रिटेल ब्राण्ड और वैश्विक प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से बाज़ार की सुविधा देना शामिल है।

आधुनिक तकनीकें अपनाते हुए पारम्परिक शिल्प का संरक्षण

पारम्परिक शिल्प और आधुनिक तकनीक के एकीकरण से ऐसी संतुलित भागीदारी बनी है जो विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ नवाचार को भी प्रोत्साहित करती है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से हथकरघा बुनकर अब विश्व पटल पर पहुँच बना रहे हैं जहाँ ई-कॉमर्स (इंडिया हैंडमेड पोर्टल और अन्य) डिजिटल सेतु का कार्य करते हुए बुनकरों को सीधे दुनिया भर के उपभोक्ताओं से जोड़ते हैं। ब्लॉकचेन

तकनीक, पारदर्शी प्रमाणन सुनिश्चित करती है जिससे शिल्प की प्रामाणिकता और बुनकरों की आजीविका, दोनों सुरक्षित होते हैं।

अपनी सांस्कृतिक मूल भावना से समझौता किए बिना आज के युवाओं से जुड़ने के लिए, पारम्परिक बुनाई में नए डिज़ाइन और आधुनिक कलाकृतियों का समावेश किया जा रहा है। पारम्परिक शिल्प उन्नत खड्डियाँ, प्राकृतिक रंग और विपणन की डिजिटल तकनीकें अपना कर बाज़ार के दबावों का सामना करते हुए समकालीन मांग पूरी करने में सक्षम हुआ है।

ग्रामीण समुदायों विशेषकर महिलाओं और युवाओं का सशक्तीकरण

हथकरघा क्षेत्र महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण का एक सशक्त

माध्यम है, जहाँ लगभग 70% हथकरघा बुनकर और सम्बद्ध कार्यकर्ता महिलाएँ हैं। यह क्षेत्र विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित समुदायों की महिलाओं को सम्मानजनक अवसर प्रदान करता है जिससे वे अपनी आर्थिक स्थिति बेहतर करने के अलावा अपने समग्र सशक्तीकरण और सामाजिक हैसियत में भी योगदान दे सकें।

देशभर में सफलता की अनेक कहानियाँ देखने को मिलती हैं। महाराष्ट्र के पैठण गाँव में कविता धावले ने अपने छोटे से कमरे से शुरू किए गए कार्य को सफल व्यवसाय में बदला और अपनी बुनी पैठणी साड़ियाँ बेचकर अपनी आमदनी तीन गुणा कर ली। ओड़िशा के मयूरभंज में 650 से अधिक आदिवासी महिलाओं ने संथाली साड़ी को फिर से जीवन दिया और अब वे हर महीने हज़ारों रुपये कमाते हुए अपनी अलग पहचान बना रही हैं। हिमाचल प्रदेश के थमलाह गाँव में हीरामणि जैसी महिला बुनकर मास्टर ट्रेनर बन चुकी हैं जो प्रति माह 15,000 से 20,000 रुपये तक कमा रही हैं।

हथकरघा के सन्दर्भ में 'वोकल फॉर लोकल'

'वोकल फॉर लोकल' पहल, जागरूक उपभोग और सांस्कृतिक संरक्षण का एक व्यापक दर्शन है। हथकरघा के संदर्भ में, इसका अर्थ यह स्वीकार करना है कि हर हस्तनिर्मित उत्पाद पीढ़ियों की विरासत संजोए हुए है जो सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते हुए सतत आजीविका प्रदान करता है।

ये हथकरघा उत्पाद जो रचनात्मकता, समर्पण और सांस्कृतिक गौरव की कहानियाँ कहते हैं, इन्हें चुन कर नागरिक अपना योगदान कर सकते हैं। हस्तनिर्मित कपड़ा ख़रीदकर उपभोक्ता सीधे लाखों लोगों की आजीविका को सहारा देते हैं, कलात्मक विरासत संरक्षित करते हैं और बड़े पैमाने पर निर्मित विकल्पों की तुलना में

पर्यावरणीय प्रभाव भी कम करते हैं। हर एक ख़रीद, आत्मनिर्भर भारत के लिए एक वोट है, जो उस स्वदेशी भावना की अनुगूँज है जिसने इतिहास बदला था।

वृद्धि को गति देती सरकारी पहल

सरकार ने हथकरघा क्षेत्र के विकास के लिए व्यापक योजनाएँ लागू की हैं। राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (NHDP) कच्चा माल, उन्नत करघे या खड्डियाँ और सहायक उपकरण, सोलर लाइटिंग यूनिट, कार्य शाला निर्माण, उत्पाद और डिज़ाइन विकसित करने तथा विपणन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

कच्चा माल आपूर्ति योजना विभिन्न प्रकार के सूत या धागों पर परिवहन सब्सिडी और 15 प्रतिशत मूल्य सब्सिडी प्रदान करती है। बुनकर मुद्रा ऋण योजना में, मार्जिन मनी सहायता, ब्याज सबवेंशन और क्रेडिट गारण्टी शुल्क शामिल हैं। कल्याणकारी प्रावधानों में जीवन और दुर्घटना बीमा कवरेज, बुनकरों के बच्चों के लिए छात्रवृत्ति तथा 60 वर्ष से अधिक आयु के पुरस्कार प्राप्त बुनकरों के लिए वित्तीय सहायता शामिल है।

दृष्टि 2047 का लक्ष्य

आज जब हम राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के एक दशक का उत्सव मना रहे हैं, यह क्षेत्र भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने को तैयार है। इस क्षेत्र का विकास — पारम्परिक करघों से

आधुनिक विनिर्माण केन्द्रों तक, स्थानीय बाज़ारों से वैश्विक प्लेटफ़ॉर्म तक, व्यक्तिगत बुनकरों से लेकर सफल सहकारी समितियों और स्टार्टअप्स तक — भारत का व्यापक परिवर्तन दर्शाता है। 2047 तक 'विकसित भारत' का मार्ग वास्तव में आत्मनिर्भरता से होकर गुज़रता है और हथकरघा इस दृष्टि के केन्द्र में है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात सम्बोधन में कहा था, "केवल वही चीज़ें ख़रीदें और बेचें जो भारत में बनी हों, जिनमें किसी भारतीय का पसीना शामिल हो। यही हमारा संकल्प होना चाहिए।"

हर बुना हुआ धागा, हर रचा गया डिज़ाइन और हर तैयार परिधान आत्मनिर्भर, विकसित भारत की उस भव्य तस्वीर में योगदान देता है — जहाँ परम्परा और आधुनिकता साथ-साथ चलती हैं, जहाँ विरासत नवाचार को प्रेरित करती है, और जहाँ बुनने वाले हाथ ही देश का भविष्य गढ़ते हैं।

ज्ञान भारतम् मिशन

भारत की ज्ञान पद्धतियों का डिजिटलीकरण

"मणि मारण जी ने लोगों को सिखाया कि "TamilSuvadiyiyal" यानी Palm Leaf Manuscipts को पढ़ने और समझने की विधि क्या होती है। आज अनेकों प्रयासों से कई छात्र इस विधा में पारंगत हो चुके हैं। कुछ Students ने तो इन पांडुलिपियों के आधार पर Traditional Medicine System पर Research भी शुरू कर दी है। साथियो, सोचिए अगर ऐसा प्रयास देशभर में हो तो हमारा पुरातन ज्ञान केवल दीवारों में बंद नहीं रहेगा, वो, नई पीढ़ी की चेतना का हिस्सा बन जाएगा। इसी सोच से प्रेरित होकर, भारत सरकार ने इस वर्ष के बजट में एक ऐतिहासिक पहल की घोषणा की है 'ज्ञान भारतम् मिशन'।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

भारत की सांस्कृतिक चैतन्यता केवल इसके त्योहारों और परम्पराओं से ही नहीं, बल्कि सदियों पुरानी पाण्डुलिपियों में संजोए हुए गहन ज्ञान से भी है। अपने हाल के 'मन की बात' सम्बोधन में माननीय प्रधानमंत्री ने हमें याद दिलाया कि ये पाण्डुलिपियाँ- जिनमें विज्ञान, चिकित्सा ज्ञान, संगीत और दर्शन समाहित है- केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं हैं। इनमें भारत की आत्मा बसती है और इन्हें भावी पीढ़ियों के लिए अवश्य सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने ज्ञान भारतम् मिशन आरम्भ किया है, जो पूर्ववर्ती राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (NMM) में पुनः प्राण संचार करके इन्हें विस्तार दे रहा है। यह मिशन 2024–31 के लिए केन्द्रीय क्षेत्र योजना के तहत 482.85 करोड़ रुपये के बजट से लागू किया गया है। इसका महत्त्वाकांक्षी उद्देश्य, देशभर के शैक्षणिक संस्थानों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों और निजी संग्रहों में सुरक्षित, एक करोड़ से अधिक पाण्डुलिपियों का संरक्षण, प्रलेखन (दस्तावेज़ीकरण) डिजिटलीकरण और सुगम उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इस मिशन का मूल उद्देश्य डिजिटलीकरण है ताकि अगले पाँच वर्ष के भीतर एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉज़िट्री बना कर विश्व स्तर पर सुलभ कराई जा सके।

अब तक लगभग साढ़े तीन लाख पाण्डुलिपियों का डिजिटलीकरण हो चुका है। इनमें साढ़े तीन करोड़ से अधिक पन्ने (फ़ोलियो) शामिल हैं। इनमें से 1,35,000 पाण्डुलिपियाँ 'नमामि' वैब पोर्टल पर उपलब्ध हैं जिनमें 76,000 आम जनता के लिए निःशुल्क सुलभ हैं। यह मिशन, सर्वेक्षण और दस्तावेज़ीकरण पहल, वैज्ञानिक संरक्षण, विद्वत्तापूर्ण सम्पादन एवं अनुवाद, प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता निर्माण तथा प्रदर्शनियों और पाण्डुलिपि उत्सवों के माध्यम से जन-जागरूकता जैसी गतिविधियाँ भी प्रोत्साहित करता है।

रूपांतरण के इस प्रयास के केन्द्र में डॉ. मणि मारन जैसे समर्पित संरक्षक हैं जो तमिलनाडु के तञ्जावुर स्थित सरस्वती महल पुस्तकालय के तमिल पाण्डुलिपि विभाग में कार्यरत एक तमिल विद्वान हैं। एशिया के सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि भण्डारों में से एक इस पुस्तकालय में 49,000 से अधिक पाण्डुलिपियों का ख़ज़ाना है।

उन्होंने बताया, "भावी पीढ़ियों के लिए प्राचीन ताड़पत्र पाण्डुलिपियों का हालांकि आधुनिक साधनों से डिजिटल

संरक्षण हो रहा है, लेकिन वास्तव में इन पाण्डुलिपियों को पढ़ने और समझने वाले लोगों की कमी एक चुनौती पेश कर रही है। इसलिए अपने व्यक्तिगत प्रयासों से मैंने 300 से अधिक विद्यार्थियों को ताड़पत्र पाण्डुलिपियाँ पढ़ना सिखाया है और इसी उद्देश्य से मैं स्वेच्छा से शाम की कक्षाएँ भी लेता हूँ। मुझ से प्रशिक्षित अनेक विद्यार्थी आज सिद्ध चिकित्सा अनुसन्धान संस्थान, तमिल विश्वविद्यालय और हिन्दू धार्मिक एवं धर्मार्थ दान विभाग जैसे संस्थानों में ताड़पत्र पाण्डुलिपियों को सूचीबद्ध करने का कार्य कर रहे हैं।"

'मन की बात' में माननीय प्रधानमंत्री ने डॉ. मारन को एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व बताते हुए उनकी प्रशंसा की। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जब स्थानीय प्रयास, राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार पाते हैं तो हमारी प्राचीन ज्ञान-परम्परा "नई पीढ़ी की चेतना का हिस्सा" बन जाती है।

डॉ. मणि मारन कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहते हैं, "यह हमारे लिए गर्व की बात है कि भारत की पारम्परिक कला और संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध हमारे प्रधानमंत्री ने ताड़पत्र पाण्डुलिपियों का उल्लेख किया। सरस्वती महल पुस्तकालय में कार्यरत एक तमिल विद्वान के रूप में मैं अपने कार्य की सराहना और सम्मान पाकर

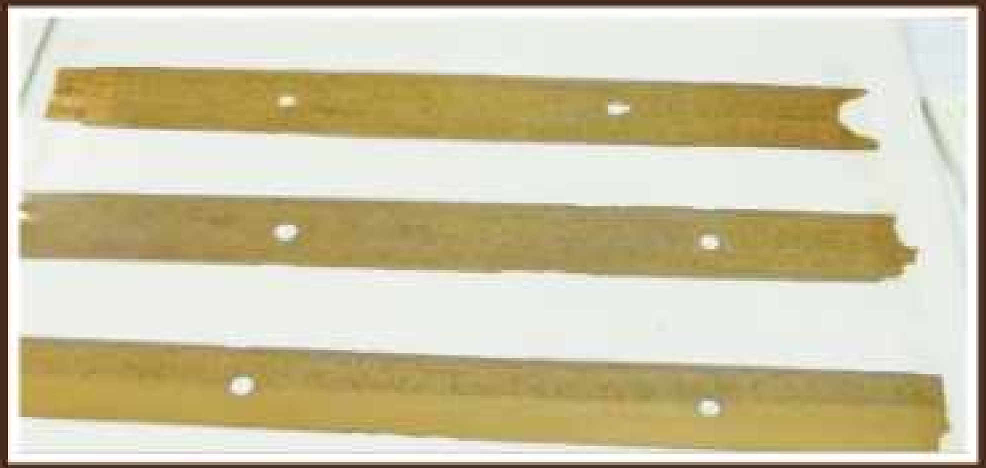

अत्यंत गौरवान्वित और आभारी हूँ। सरस्वती महल पुस्तकालय की ओर से और व्यक्तिगत रूप से भी, मैं माननीय प्रधानमंत्री का हृदय से आभारी हूँ।"

यह मिशन, अत्याधुनिक तकनीकों जैसे कृत्रिम-मेधा आधारित संग्रहण (एआई-आधारित आर्काइविंग), दृष्टिविद्या अक्षर पहचान प्रतिलेखन (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन- ओसीआर ट्रांसक्रिप्शन), ब्लॉकचेन ट्रेसिंग, क्लाउड प्रिज़र्वेशन और व्यापक एकीकरण के लिए एपीआई की मदद देगा। इसका उद्देश्य, भारत की पाण्डुलिपि संरक्षण व्यवस्था को एक नए स्तर पर पहुँचाना है। प्रायोगिक (पायलट) कार्यक्रम, रिपॉज़िटरी सैटअप, तकनीकी प्लैटफ़ॉर्म और ज़मीनी-स्तर पर प्रशिक्षित स्वयंसेवकों का नैटवर्क 'पाण्डुलिपि मित्र' इस धरोहर को कक्षाओं, संस्थानों और आभासी दुनिया तक पहुँचाएँगे।

ज्ञान भारतम् मिशन, संरक्षण का प्रयास भर नहीं है। इसका उद्देश्य, भविष्य के मार्गदर्शन के लिए अतीत के स्वर जीवित रखना है। यह सुनिश्चित करना है कि सदियों पुरानी नाज़ुक पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान, विलुप्त न होकर डिजिटल युग में नई जीवन शक्ति प्राप्त करे।

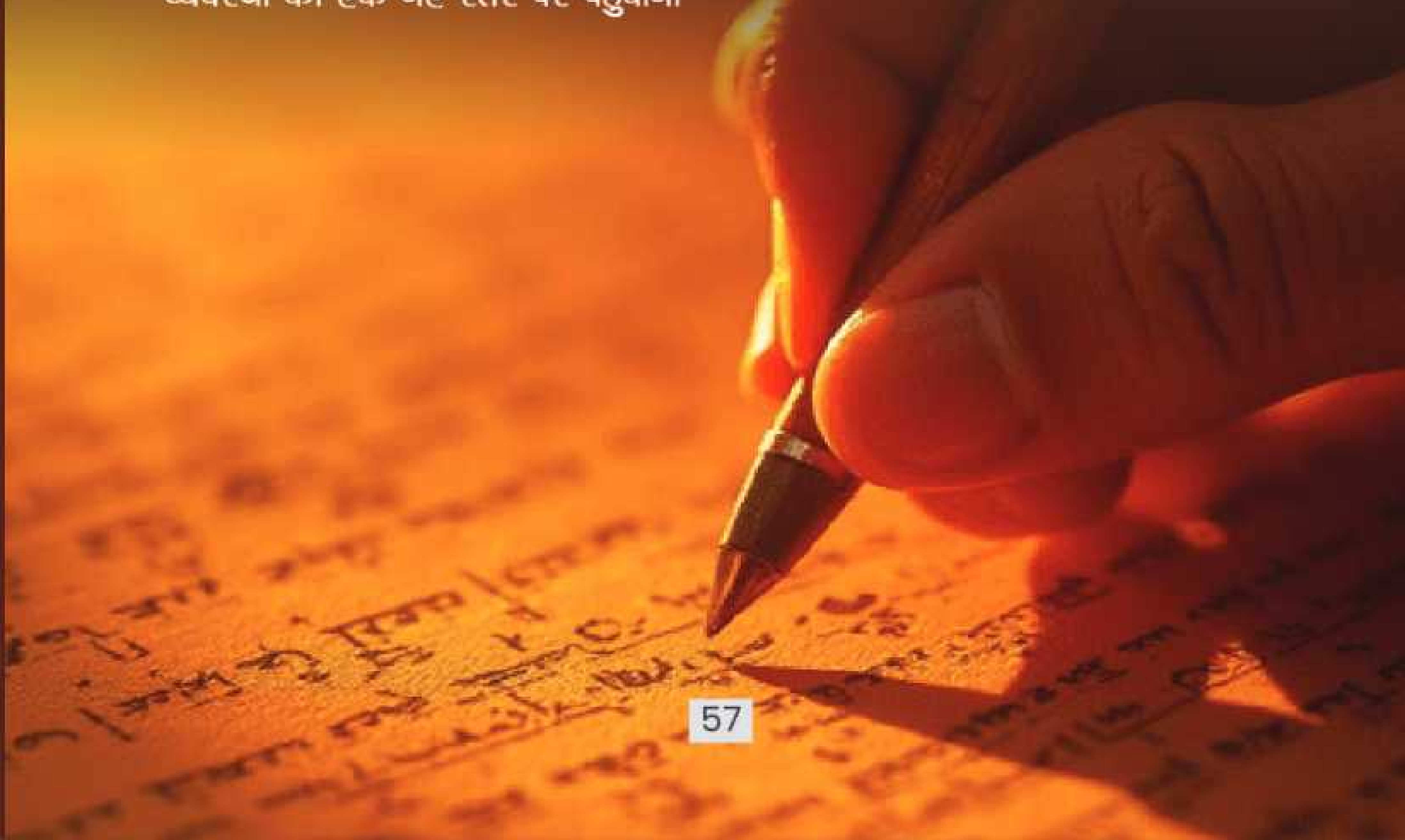

INSPIRE-MANAK

कक्षाओं और उससे परे जागृत होती नवाचार की प्रेरणा

डॉ. अनिल सहस्रबुद्धे
अध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी मंच
एवं राष्ट्रीय नवाचार फ़ाउण्डेशन

INSPIRE-MANAK (मिलियन माइण्ड्स ऑगमैंटिंग नेशनल ऐस्पिरेशन ऐण्ड नॉलेज) भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) की प्रमुख योजना है जिसका उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों [कक्षा 6 से 12 (11वीं और 12वीं में केवल विज्ञान संकाय)] के अभिनव विचारों और नवाचारों को प्रोत्साहित और पोषित करना तथा उन्हें विज्ञान एवं विज्ञान-प्रौद्योगिकी अनुसन्धान को पेशा बनाने के लिए प्रेरित करना है। डीएसटी और राष्ट्रीय नवाचार प्रतिष्ठान (NIF)-इण्डिया की संयुक्त रूप से लागू यह योजना, भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा शुरू 'स्टार्ट-अप इण्डिया' पहल के अनुरूप है।

इन्सपायर-मानक योजना का उद्देश्य हर वर्ष स्कूली विद्यार्थियों के दस लाख अभिनव विचार एकत्र करना है। इस योजना के अन्तर्गत ऐसे मौलिक और रचनात्मक तकनीकी विचार आमंत्रित किए जाते हैं जो रोज़मर्रा की समस्याओं का समाधान, मौजूदा मशीनों में उपयोगी सुधार, अथवा एकदम नई मशीन का प्रस्ताव प्रस्तुत करते हों। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने आस-पास देखें, समस्याएँ पहचानें और स्वतंत्र रूप से उनका समाधान विकसित करें। विद्यालय, पाँच सर्वोत्तम विचारों को इन्सपायर-मानक पोर्टल (www.inspireawards-dst.gov.in) या इन्सपायर मानक ऐप के माध्यम से ऑनलाइन नामांकित करते हैं।

पहली समीक्षा के बाद, शीर्ष एक लाख विद्यार्थियों को अपने विचार का प्रोटोटाइप विकसित करने और ज़िला-स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रत्येक को 10,000 रु. (सीधे बैंक खाते में) प्रदान किए जाते हैं। इनमें से 10 प्रतिशत विद्यार्थियों को राज्य-स्तर पर और तत्पश्चात राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए चुना जाता है।

राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चुने गए विद्यार्थियों को, उच्च-गुणवत्ता वाली मेंटॉरशिप कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर मिलता है, जिन्हें IITs, NITs और IISc जैसे भारत के शीर्ष तकनीकी संस्थानों के सहयोग से आयोजित किया जाता है। इन कार्यशालाओं के माध्यम से युवा नवोन्मेषकों को उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण और प्रतिष्ठित मेंटॉर्स से मार्गदर्शन मिलता है।

लगभग एक हज़ार विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर नवाचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से शीर्ष 60 आइडियाज़ चुने जाते हैं जिन्हें NIF मान्यता, संरक्षण और इनक्यूबेशन तथा पेटेण्ट फाइलिंग, तकनीकी मूल्य संवर्धन और उत्पाद विकास में मदद देता है।

2016 से 2024 के दौरान इन्सपायर-मानक योजना ने भारत के लगभग हर ज़िले से लगभग पचास लाख छात्रों को जोड़ा और छात्रों की भागीदारी 2016 में 1 लाख 56 हज़ार 894 से बढ़कर 2024 में दस लाख से अधिक हो गई। देश के सबसे दूरस्थ क्षेत्रों तक यह वृद्धि देखी जा सकती है जिसमें लड़कियों (51%), ग्रामीण क्षेत्रों (70%) और राज्य सरकार के स्कूलों का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व है। इन्सपायर-मानक प्रतियोगिताओं

में प्राप्त नामांकनों की संख्या में यह सतत वृद्धि, छात्रों की विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित (STEM) में बढ़ती रुचि का परिचायक है। इस बढ़ती रुचि का श्रेय, इन्सपायर-मानक के समस्या-समाधान, सीखने के व्यावहारिक उपायों, और वैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रयोग पर दिए जाने वाले विशेष बल को भी जाता है। इन्सपायर-मानक छात्रों को विशेषज्ञों, मार्गदर्शकों और सहपाठियों के साथ संवाद का मंच प्रदान करता है जिससे आपसी सहयोग और प्रतिस्पर्धा का वातावरण तैयार होता है जो उन्हें इन क्षेत्रों में आगे बढ़ने और उत्कृष्टता प्राप्त करने को प्रेरित करता है। अब तक 2,600 से अधिक छात्रों के लिए मार्गदर्शन कार्यशालाओं का आयोजन हो चुका है। इस विशेष मार्गदर्शन से छात्रों को अपने प्रोटोटाइप और बेहतर बनाने में मदद मिली जिसके फलस्वरूप 271 प्रोटोटाइप राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में मान्यता हासिल कर चुके हैं।

इस योजना की कामयाबी इसके बौद्धिक सम्पदा योगदान में भी स्पष्ट नज़र आती है। NIF ने इन युवा नवोन्मेषकों

के नाम से 255 पेटेण्ट आवेदन दायर किए जिनमें से 33 पेटेण्ट पहले ही स्वीकृत हो चुके हैं। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं को साकुरा विज्ञान आदान-प्रदान कार्यक्रम और ASEAN-इण्डिया ग्रासरूट्स इन्नोवेशन फोरम जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अन्तरराष्ट्रीय अनुभव मिला जिसमें अनेक छात्रों ने प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते।

इन्सपायर-मानक, 10,000 स्कूलों में नीति आयोग के अटल टिंकरिंग लैब्स, AICTE के स्मार्ट इण्डिया हैकाथॉन और इन्नोवेशन काउंसिल्स, तथा स्कूलों और कॉलेजों में इन्नोवेशन ऐम्बैसडर्स के साथ मिलकर, भारत को ग्लोबल इन्नोवेशन इण्डैक्स में 81वें स्थान से 39वें स्थान पर पहुँचा चुका है। INSPIRE परियोजनाएँ सतत विकास, हरित ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण, कचरा प्रबन्धन, वर्षा जल संचयन, रीसाइक्लिंग, नैट-ज़ीरो कैम्पस और भावी तकनीकों पर केन्द्रित हैं। ये सभी प्रयास भारत को आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर अग्रसर करेंगे और 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के लक्ष्य को हासिल करने में सहायक होंगे।

प्रकृति को समझने में तकनीक का उपयोग

काज़िरंगा का पक्षी सर्वेक्षण

सोनाली घोष
क्षेत्र निदेशक, काज़िरंगा टाईगर रिज़र्व

जुलाई 2025 के 'मन की बात' संस्करण में माननीय प्रधानमंत्री ने काज़िरंगा राष्ट्रीय उद्यान में सफल घासभूमि पक्षी गणना (ग्रासलैण्ड बर्ड सैंसस) का उल्लेख किया जिसमें कृत्रिम मेधा (AI) और ध्वनि तकनीक की मदद से, दुर्लभ प्रजातियों सहित 40 से अधिक पक्षी की प्रजातियों की पहचान की गई। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि तकनीक और संवेदनशीलता मिलकर, प्रकृति और जैव-विविधता की हमारी समझ को गहरा कर सकती हैं।

अपनी तरह का यह पहला सर्वेक्षण, पक्षियों के प्राकृतिक निवास और संकटग्रस्त प्रजातियों को रेखांकित करता है। ब्रह्मपुत्र के बाढ़ मैदानों में घासभूमि पर निर्भर पक्षी की प्रजातियों के दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण में यह एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है।

यह सर्वेक्षण, घासभूमि पक्षियों के प्रजनन-काल को ध्यान में रखते हुए 18 मार्च से 25 मई, 2025 के बीच किया गया था। इस अवधि में नर पक्षी, मादा को आकर्षित करने या अपने इलाक़े की सुरक्षा के लिए विशेष ऊँची आवाज़ करते हैं। यही वह समय भी होता है जब समूह में एकत्र होने वाले बया जैसे बुनकर पक्षियों के घोंसलों का पता लगाया जा सकता है। यह सर्वेक्षण, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पीएच.डी. शोधार्थी और डीएसटी-इंस्पायर फ़ैलो चिरंजीव बोरा की अगुआई में नियोजित किया गया। उनके साथ, विशेषज्ञ पक्षी-प्रेक्षक, विज्ञानी, और वन विभाग के अग्रिम पंक्ति के कर्मचारी भी थे जिन्होंने दृश्य गणना सर्वेक्षण (विज़ुअल काउण्ट सर्वे) में योगदान किया।

कार्य प्रणाली - इस अध्ययन की प्रमुख विशेषता, निष्चेष्ट श्रवण ध्वन्यांकक (पैसिव अकूस्टिक रिकॉर्डर्स) की तैनाती थी जिससे दुर्गम या उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में भी बिना किसी हस्तक्षेप के निरन्तर निगरानी सम्भव हो सकी। ऐसा करने से, प्रजातियों विशेषकर शर्मीले और गुप्त स्वभाव वाले पक्षियों का पता लगाने की क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हुआ और सटीक तथा गहरी जानकारी वाले निष्कर्ष मिले। इस अध्ययन के लिए, IISER तिरुपति ने स्वचालित ध्वन्यांकन इकाइयाँ (ऑटोमेटिड रिकॉर्डिंग यूनिट्स- ARU) लगाईं और सर्वेक्षण के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की इंस्पायर फ़ैलोशिप के शोधार्थियों को विशेष रूप से बुलाया गया।

एक बानगी के रूप में, निष्चेष्ट श्रवण ध्वन्यांकक 29 प्रमुख स्थलों पर लगाए गए, जहाँ प्रत्येक उपकरण प्रतिदिन लगभग 13 घण्टे रिकॉर्डिंग करता था। इन उपकरणों को कम-से-कम 500 मीटर की दूरी पर रखा गया और इन्होंने प्रत्येक स्थल पर लगातार तीन दिन तक कार्य किया। ध्वनि-दृश्य (साउण्डस्केप) रिकॉर्डिंग का विश्लेषण मशीन लर्निंग ऐल्गोरिदम की मदद से किया गया और विभिन्न पक्षियों को

स्पेक्ट्रोग्राम में दिखाई देने वाले उनके गायन की विशिष्टताओं के आधार पर अलग-अलग पहचाना गया। प्रकृति के अध्ययन का यह कितना रोचक तरीका है!

परिणाम - सर्वेक्षण में कुल 43 घासभूमि पक्षी की प्रजातियाँ दर्ज की गईं जिनमें 1 गम्भीर रूप से लुप्तप्राय (क्रिटिकली ऐण्डेंजर्ड), 2 लुप्तप्राय (ऐण्डेंजर्ड) और 6 संवेदनशील (वलनरेबल) प्रजातियाँ शामिल हैं। इनके साथ ही IUCN रैड लिस्ट में वर्णित स्थानीय क्षेत्र (ऐण्डैमिक) की कई प्रजातियाँ भी हैं। सर्वेक्षण में विशेष रूप से दस प्रमुख प्रजातियों पर बल दिया गया जो या तो वैश्विक स्तर पर लुप्तप्राय हैं या ब्रह्मपुत्र के बाढ़ मैदानों में स्थानिक हैं: *बंगाल फ्लोरिकन, स्वॉम्प फ्रैंकोलिन, फिन्स वीवर, स्वॉम्प ग्रास बैबलर, जैर्डोन्स बैबलर, स्लैण्डर-बिल्ड बैबलर, ब्लैक-ब्रैस्टिड पैरटबिल, मार्श बैबलर, ब्रिसल्ड ग्रासबर्ड और इण्डियन ग्रासबर्ड।*

एक अन्य महत्त्वपूर्ण खोज थी फ़िन्स बया (बुनकर) की प्रजनन कॉलोनी जिसमें 85 से अधिक घोंसले पाए गए जिन्हें स्थानीय भाषा में तुकुरा

चोराई कहा जाता है। प्रजनन काल में चमकदार पीला हो जाने वाला यह सुन्दर पक्षी, घासभूमि व आर्द्रभूमि में ऊँचाई पर बड़ी बारीकी से जटिल घोंसले बनाने वाले एक कुशल कारीगर की पहचान रखता है। यही नहीं, यह घासभूमि की सेहत का एक महत्त्वपूर्ण संकेतक भी है। यह दुर्लभ पक्षी है क्योंकि यह केवल कुछ विशेष प्रकार की घासभूमि, दलदलीय क्षेत्र और सरकण्डे के झुरमुटों (जैसे फ्रैग्माइट्स, टाइफ़ा या सैक्रम घास) पसन्द करता है, जो केवल भारत और नेपाल के तराई वाले क्षेत्रों के संरक्षित इलाकों में पाई जाती हैं। काज़िरंगा में इसकी उपस्थिति एक बेहद उत्साहजनक संकेत थी।

घासभूमि पक्षियों के दीर्घकालिक संरक्षण की दिशा में, यह घासभूमि पक्षी सर्वेक्षण एक महत्त्वपूर्ण पहला क़दम है और ये इन नाज़ुक पारिस्थितिक तंत्रों की रक्षा के लिए निरन्तर पारिस्थितिक निगरानी और अनुकूल प्रबन्धन की आवश्यकता पर बल देता है। यह अग्रणी कार्य, काज़िरंगा की पहचान को न केवल करिश्माई बड़े जीवों के गढ़ के रूप में बल्कि इण्डो-बर्मा जैव-विविधता हॉटस्पॉट के भीतर पक्षी जैव-विविधता के एक महत्त्वपूर्ण आश्रय स्थल के रूप में भी पुनः स्थापित करता है। आशा है कि यह सर्वेक्षण, संरक्षित क्षेत्र प्रबन्धन में कड़ी वैज्ञानिक पद्धतियों को एकीकृत करने का एक आदर्श बनेगा और भारत व उससे परे अन्य परिदृश्यों के लिए दोहराया जा सकने वाला प्रारूप प्रस्तुत करेगा।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना

सशक्त परिवर्तन और आजीविका के अवसर

डॉ. बिजय कुमार बेहेरा, ए.आर.एस.
मुख्य अधिशासी,
राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड

भारत में 'सनराइज़ सैक्टर' माना जाने वाला मत्स्य क्षेत्र, लगभग 3 करोड़ लोगों, विशेषकर हाशिए पर रहने वाले और संवेदनशील समुदायों की आजीविका बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राष्ट्रीय महत्त्व का क्षेत्र

वैश्विक मछली उत्पादन में 8.92%, भारत के सकल मूल्य वर्द्धन (GVA) में 1.34% और कृषि सम्बन्धी जीवीए में 7.09% का योगदान करने वाले इस क्षेत्र की, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कुल मछली और जलीय कृषि उत्पादन में भारत, विश्व में दूसरे स्थान पर है। समुद्री मत्स्य पालन पर पारिस्थितिकीय स्थिति के कारण ठहराव आने से, अब अन्तर्देशीय मत्स्य पालन और जलीय खेती, कुल मछली उत्पादन में 75% से अधिक का योगदान करते हुए भविष्य की वृद्धि को गति दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना और राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड : नीली क्रान्ति के उत्प्रेरक

वित्त वर्ष 2020–21 में 20,050 करोड़ रुपये के निवेश से शुरू की गई प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) का उद्देश्य, सतत मत्स्य विकास के माध्यम से नीली क्रान्ति को बढ़ावा देना है। इस योजना का लक्ष्य रोज़गार के 55 लाख अवसर पैदा करना, प्रतिबन्ध अथवा कम उत्पादन अवधि के दौरान छः लाख मछुआरों को वार्षिक सहायता देना, 70 लाख टन अतिरिक्त मछली उत्पादन सुनिश्चित करना, तथा मछुआरों की आय दोगुणी करना है।

राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (NFDB) की छत्रछाया में क्रियान्वित इस योजना में, वैकल्पिक आजीविकाओं को बढ़ावा दिया जाता है, मछली पकड़ने (कैप्चर फिशरीज़) पर दबाव कम किया जाता है, और मत्स्य पालन को कृषि एवं अन्य ग्रामीण गतिविधियों के साथ एकीकृत किया जाता है।

आजीविका सशक्त करना

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना ने समावेशी विकास, आजीविकाओं में विविधता और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में लचीलेपन को बढ़ावा देकर, ग्रामीण अर्थव्यवस्थाएँ बदली हैं। असम के कछार में, प्रतिवर्ष 1 करोड़ 92 लाख मछली के बच्चे (फ्राई) उत्पन्न करने वाली एक फ़िनफ़िश हैचरी ने, परिवारों की आय में 90% से अधिक बढ़ोत्तरी की। महाराष्ट्र के पालघर में अनुपयोगी भूमि को, पुनरावर्ती जलीय कृषि प्रणाली (RAS) में बदल कर प्रतिवर्ष 10 टन मछली का उत्पादन हो रहा है जो निरन्तर आमदनी सुनिश्चित करता है।

जलवायु अनुकूलता और सतत विकास

दीर्घकालिक निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, जलवायु-अनुकूल प्रथाओं जैसे बहु-पालन (पॉलीकल्चर), एकीकृत बहु-पोषण जलीय खेती (इन्टग्रेटिड मल्टी-ट्रॉपिक ऐक्वाक्चर), सतत चारा प्रौद्योगिकी आदि को बढ़ावा देती है। जलवायु अनुकूल तटीय मत्स्य ग्राम (CRCFV) पहल के तहत मछुआरों के 100 गाँव लक्षित किए गए हैं जिनमें जलवायु-अनुकूल टिकाऊ बुनियादी ढाँचे, फ़सलोत्तर सुविधाओं, विविध आजीविकाओं आदि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री ने सिक्किम के सोरेंग ज़िले में भारत के पहले जैविक मत्स्य समूह (क्लस्टर) की घोषणा की। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के अन्तर्गत, नाबार्ड के सहयोग से मोती पालन, समुद्री वनस्पति (सीवीड) की

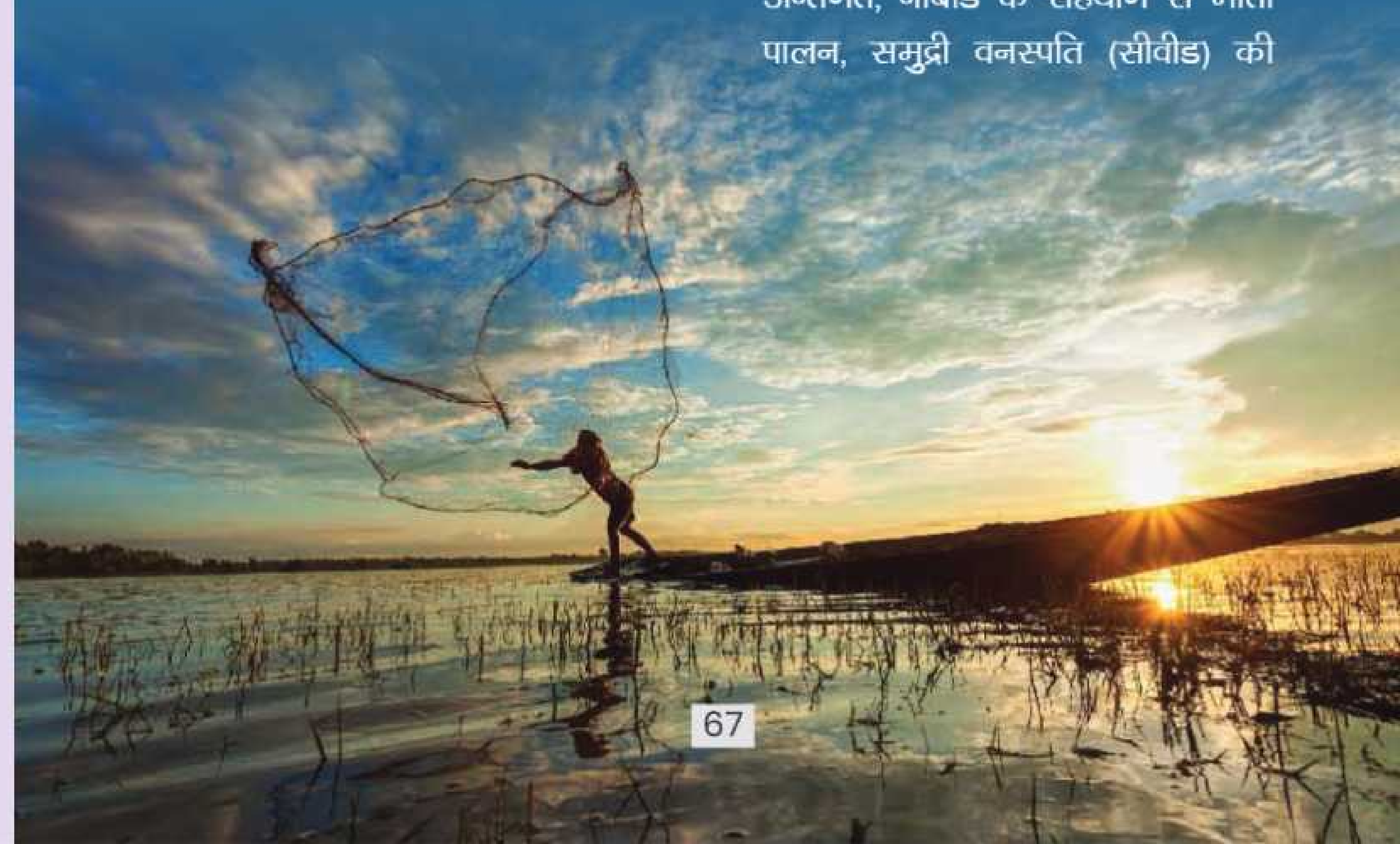

खेती, जैविक मत्स्य पालन, जलाशय मत्स्य पालन, खारे पानी की जलीय खेती आदि क्षेत्रों में 34 विशिष्ट समूह विकसित किए जा रहे हैं।

समुद्री खेती (मैरीकल्चर) को आजीविका के एक सुरक्षित और विश्वसनीय विकल्प के रूप में प्रोत्साहन दिया जा रहा है जिसके अन्तर्गत अगले एक दशक में समुद्र में मछली पकड़ने वाले 25% मछुआरों को इस ओर लाने की योजना है। 1,276 रु. करोड़ के निवेश से शुरू की गयी योजना में केज कल्चर और समुद्री वनस्पति की खेती पर विशेष ध्यान दिया गया है जो अधिक लाभ और साल भर आय का अवसर देती है।

मत्स्य पालन की टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार लाने के लिए, एकीकृत आदर्श तटीय मत्स्य ग्राम पहल के तहत ऐसे प्रत्येक गाँव में 7.5 करोड़ रुपये का निवेश किया जा रहा है। अब तक ऐसे 11 गाँव विकसित किए जा चुके हैं।

परिवर्तन के परिणाम

वित्त वर्ष 2013–14 से 2024–25 के बीच भारत का मछली उत्पादन 103% बढ़कर 95.79 लाख टन से 195 लाख टन हो गया, जिसमें अन्तर्देशीय जलीय खेती में 142% की वृद्धि और उत्पादन क्षमता में 22 गुणा विस्तार हुआ, जिससे रोज़गार के 54 लाख अवसर मिले। इस अवधि में, समुद्री खाद्य निर्यात से आय 30,213 करोड़ रुपये से बढ़कर 60,524 करोड़ रुपये हो गई। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के तहत, देश भर में मछली क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए 58 लाख प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोज़गार पैदा हुए।

आत्मनिर्भरता की ओर

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, जन भागीदारी अर्थात् प्रौद्योगिकी और सतत प्रथाओं का सहयोग प्राप्त समुदाय की भागीदारी पर आधारित है। यह योजना, केरल के तटों से लेकर असम की आर्द्रभूमि तक, झारखण्ड के तालाबों से लेकर तमिलनाडु की समुद्री वनस्पति खेती तक, हाशिए पर रह रहे लोगों को सशक्त कर रही है, खाद्य आपूर्ति सुरक्षित कर रही है और आजीविका के साधन पैदा कर रही है। इन कार्यों से जुड़े सफल लोगों की कहानियों के दस्तावेज़ तैयार किए जा रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' के 100वें अंक में इनमें से कुछ लोगों से बात भी की थी।

जल शक्ति (संसाधन के रूप में जल) से जीवन शक्ति (आजीविका के रूप में जल) के इस बदलाव ने, ग्रामीण समृद्धि को नया आयाम और भारत में नीली क्रान्ति को गति दी है जो 'सशक्त परिवर्तन और आजीविका के अवसर' की भावना प्रतिबिम्बित करता है।

राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डली

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम के 124वें अंक में कितना सही कहा था, "भारत की विविधता की सबसे सुन्दर झलक हमारे लोकगीतों और परम्पराओं में मिलती है और हमारे भजन व कीर्तन इसका हिस्सा हैं।" लेकिन नई बात यह है कि इस परम्परा को समकालीन मुद्दों से जोड़ा जाए। अधिक जानने के लिए आगे पढ़िए...

कौनः प्रमिला प्रधान, अध्यक्ष, राधाकृष्ण संकीर्तन मण्डली

कहाँः बड़ाजामुपोसी, वाया घाटगाँव, ज़िला-केन्दुझार, राज्य-ओड़िशा

क्याः संकीर्तन (लोक प्रदर्शन-कला का एक रूप) के माध्यम से हम शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और अन्य क्षेत्रों से जुड़ी विभिन्न सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता बढ़ाने को प्रतिबद्ध हैं। जंगल हमारा जीवन है। हमारा भविष्य जंगलों पर निर्भर है। हम इस माध्यम का अधिकतम उपयोग करके भावी पीढ़ियों पर यह दीर्घकालिक प्रभाव डालना चाहते हैं कि वन संरक्षण किस तरह समृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

क्योंः बचपन से मुझे जंगल में लगने वाली आग और उससे प्रभावित जानवरों की चिन्ता होती थी। विवाह होने के बाद, यह संकीर्तन मण्डली बनाने की प्रेरणा मुझे अपने ससुर से मिली। बाद में उन्होंने मुझे इस बारे में जन जागरूकता पैदा करने की चुनौती स्वीकार करने को प्रेरित किया। और फिर तो मुझे अपने परिवार के अलावा गाँव वालों का भी सहयोग मिला।

कैसेः ग्रामीणों के बीच जंगल की आग रोकने की जागरूकता फैलाने में संकीर्तन के उपयोग का सुझाव, वन विभाग के अधिकारियों ने दिया। उन्होंने इस बारे में हमसे चर्चा की और हमने इसे सहर्ष स्वीकार लिया।

कबः मैं केओंझार जिले के एक सुदूर आदिवासी क्षेत्र की साधारण सी महिला, लेकिन जब प्रधानमंत्री ने मेरा नाम लेकर हमारी संकीर्तन मण्डली की प्रशंसा की तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा। यह हमारे पूरे गाँव के लिए गर्व का क्षण था। मैं दिल से प्रधानमंत्री की आभारी हूँ, ख़ासकर इसलिए क्योंकि वे सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं, किसी ताक़तवर और साधारण व्यक्ति में भेद नहीं करते।

वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स

भारत ने रचा इतिहास

“क्या आप जानते हैं Olympics के बाद सबसे बड़ा खेल आयोजन कौन सा होता है? इसका उत्तर है - ‘World Police and Fire Games’. दुनिया-भर के पुलिसकर्मी, fire fighters, security से जुड़े लोग उनके बीच होने वाला sports tournament. इस बार ये tournament अमेरिका में हुआ और इसमें भारत ने इतिहास रच दिया।”

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

खेलों की दुनिया में ओलंपिक के बाद सबसे बड़ा आयोजन कौन-सा होता है? बहुत कम लोग जानते हैं कि इसका जवाब है ‘वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स’ (World Police and Fire Games)। यह टूर्नामेंट पूरी दुनिया के पुलिसकर्मियों, फायर फाइटर्स और सिक्योरिटी से जुड़े बहादुरों के लिए होता है, जो अपनी जान जोखिम में डालकर दूसरों की हिफ़ाज़त करते हैं।

इस साल यह टूर्नामेंट अमेरिका में हुआ और भारत ने इसमें जो कारनामा कर दिखाया, वह हर देशवासी के लिए गर्व की बात है। भारत ने लगभग 600 मेडल जीतकर इतिहास रच दिया। कुल 71 देशों की भागीदारी वाले इस टूर्नामेंट में भारत टॉप-3 देशों में शामिल हो गया।

वर्दीधारी खिलाड़ियों का कमाल

भारत के ये खिलाड़ी आमतौर पर सड़कों पर ट्रैफिक कंट्रोल करते नज़र आते हैं या किसी इमरजेंसी में लोगों की जान बचाते हैं। लेकिन इस बार वे खेल के मैदान में थे। और यहाँ भी उन्होंने पूरे जोश, जूनून और जज्बे के साथ देश का परचम लहराया।

ये मेडल केवल जीत नहीं हैं। ये उनकी मेहनत, अनुशासन और जज़्बे का इनाम हैं। कई खिलाड़ियों ने सीमित सुविधाओं में भी बड़ी तैयारी की और साबित कर दिया कि अगर इरादा मज़बूत हो, तो कोई भी मंज़िल दूर नहीं होती।

एक ख़ास उपलब्धि

भारत की इस सफलता ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स में पहली बार भारत ने इतने बड़े स्तर पर भाग लिया और इतने शानदार नतीजे दिए। पुलिस और फायर डिपार्टमेंट में काम करने वाले इन खिलाड़ियों ने यह दिखा दिया कि वे न सिर्फ़ ड्यूटी पर माहिर हैं, बल्कि खेलों के मैदान में भी पीछे नहीं हैं।

माननीय प्रधानमंत्री ने भी सभी खिलाड़ियों और कोचिंग टीम को इस ऐतिहासिक प्रदर्शन के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ़ मेडल की जीत नहीं है, बल्कि देश की वर्दीधारी ताक़त का मनोबल बढ़ाने वाली जीत है।

भारत में होगी अगली मेज़बानी

इससे भी बड़ी ख़ुशख़बरी ये है कि साल 2029 में वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स की मेज़बानी भारत के हिस्से में आई है। यानी दुनिया भर से पुलिसकर्मी और फायर फाइटर्स भारत आएँगे और हमारी सरज़मीन पर मुक़ाबले होंगे। यह हमारे लिए एक सुनहरा मौक़ा होगा कि हम अपने मेहमानों को भारतीय मेहमान-नवाज़ी, अपनी संस्कृति और खेल भावना से रूबरू कराएँ।

भारत की खेल परम्परा बहुत पुरानी रही है, लेकिन इस तरह के आयोजनों से देश का एक नया चेहरा सामने आता है। वह चेहरा जो सुरक्षा बलों की खेल प्रतिभा को भी दुनिया के सामने लाता है।

उम्मीदों का नया दौर

इस ऐतिहासिक जीत ने कई जवानों और अधिकारियों को प्रेरित किया है। अब यह उम्मीद की जा रही है कि आने वाले वर्षों में और भी अधिक वर्दीधारी इस टूर्नामेंट में भाग लेंगे। कई राज्यों ने अपने-अपने डिपार्टमेंट्स में खिलाड़ियों के लिए सुविधाएँ बढ़ाने की बात कही है। यह एक नई शुरुआत है। एक ऐसी शुरुआत जहाँ कर्तव्य और खेल साथ-साथ चलते हैं। जहाँ देश की सुरक्षा करने वाले देश के लिए मेडल भी जीतते हैं।

मतलब साफ़ है कि भारत अब केवल क्रिकेट या ओलम्पिक जैसे बड़े आयोजनों में ही नहीं, बल्कि ऐसे विशेष खेलों में भी ख़ुद को साबित कर रहा है। और यह साबित कर रहे हैं वे लोग जो आमतौर पर बैरिकेड्स के पीछे दिखते हैं। मगर अब वे पोडियम पर तिरंगा लेकर खड़े नज़र आ रहे हैं। भारत के ये हीरो सिर्फ़ ड्यूटी नहीं निभाते बल्कि अब वे खेलों में भी देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

BHM 2025 WORLD POLICE & FIRE GAMES
BIRMINGHAM • ALABAMA • USA

अन्धेरे में आशा की किरण

गुमला की शान्ति यात्रा

अपने हाल के 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने, गुमला, झारखण्ड के ओम प्रकाश साहू की एक प्रेरक कहानी बताई। एक समय हिंसा और पलायन से ग्रस्त रहा यह इलाक़ा गुमला, आज प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) की बदौलत मत्स्य पालन का केन्द्र बन गया है। इस योजना ने न केवल रोज़गार के अवसर पैदा किए बल्कि ग्रामीण समुदायों में गरिमा और आशा की वापसी भी की है।

क्या है प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना?

भारत सरकार द्वारा शुरू की गई यह एक ऐतिहासिक योजना है जिसका उद्देश्य, मत्स्य क्षेत्र के सतत और उत्तरदायी विकास के माध्यम से 'नीली क्रांति' लाना है। यह योजना उत्पादन, उत्पादकता, गुणवत्ता, उत्पाद-प्राप्ति के बाद की बुनियादी जरुरतें, मूल्य श्रृंखला के आधुनिकीकरण और मछुआरों के कल्याण जैसी अहम कमियाँ दूर करती है।

प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना के मुख्य उद्देश्य

- मत्स्य पालन की क्षमता का सतत और न्यायसंगत तरीक़े से दोहन करना
- मत्स्य उत्पादन बढ़ाना
- मछुआरों और मत्स्य-पालकों की आमदनी दोगुणी करना
- उत्पाद-प्राप्ति के बाद का घाटा कम करना
- प्रत्यक्ष और परोक्ष रोज़गार पैदा करना
- निर्यात को बढ़ावा देना
- मछुआरों और उनके परिवारों का बीमा, कल्याण, और सामाजिक सुरक्षा सुदृढ़ करना

सफलता की कहानी: गुमला, झारखण्ड

ओम प्रकाश साहू की कहानी बताते हुए प्रधानमंत्री ने इस बात की सराहना की कि उन्होंने उग्रवाद को पीछे छोड़ मत्स्य पालन को अपनाया। प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के तहत प्रशिक्षण और तालाब विकास की मदद से उन्होंने न केवल अपने परिवार की आजीविका सुरक्षित की अपितु 150 से अधिक परिवारों को मत्स्य पालन से जुड़ने को प्रेरित भी किया।

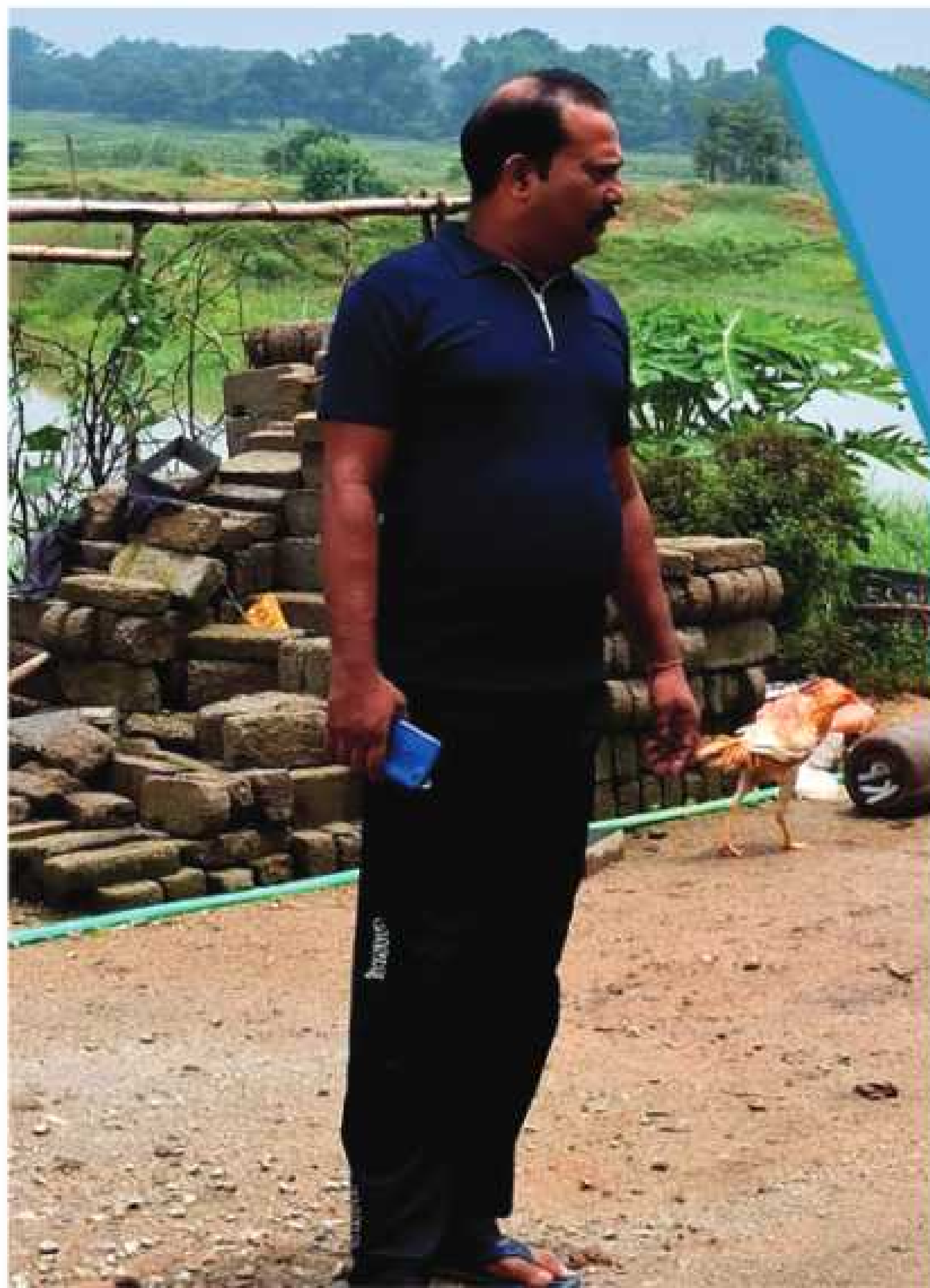

"हमें शान्ति मिली। हमारा परिवार ख़ुश है। हम अच्छा कमा रहे हैं। इससे बेहतर क्या हो सकता है? मेरा मानना है कि हर किसान को एक तालाब दिया जाना चाहिए ताकि वह गरिमा के साथ जीवन जी सके।"

–ओम प्रकाश साहू

उनकी यह यात्रा, प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना की परिवर्तनकारी क्षमता दर्शाती है: समुदायों को सशक्त करना, रोज़गार के अवसर पैदा करना और सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी विकास का मार्ग प्रशस्त करना।

अंतरराष्ट्रीय केमिस्ट्री ओलम्पियाड 2025

विश्व मंच पर लहराया भारत का परचम

21वीं सदी का भारत विज्ञान और तकनीक के मैदान में तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारे नौजवान आज दुनिया के हर मंच पर अपने हुनर और मेहनत का लोहा मनवा रहे हैं। हाल ही में इसका एक बेहतरीन नमूना हमें तब देखने को मिला जब भारत के चार छात्रों, कुचि संदीप, देवेश पंकज भैया, उज्ज्वल केसरी और देबदत्त प्रियदर्शी ने अंतरराष्ट्रीय रसायन विज्ञान ओलम्पियाड 2025 में शानदार प्रदर्शन करते हुए देश का नाम रोशन किया।

इन्होंने जो मैडल जीते, वो सिर्फ़ मेडल नहीं थे, बल्कि यह उन सपनों की उड़ान थी जो आज का भारत विज्ञान के आसमान में भर रहा है। यहाँ हम इन छात्रों की सोच, मेहनत और उनके जज्बे को क़रीब से जानने की कोशिश कर रहे हैं।

यह बहुत बड़ा मुक़ाबला था जिसमें दुनिया के क़रीब 90 देशों से 350 से ज्यादा छात्रों ने हिस्सा लिया। मेरे स्कूल के मेंटर्स ने मेरी बहुत मदद की, जिसकी वजह से मैं अपना लक्ष्य हासिल कर पाया। मुझे लगता है कि भारत सरकार का ओलम्पियाड जैसे प्रोग्राम्स को पहचान देना बहुत अच्छा क़दम है, क्योंकि ये साइंस के मैदान में देश को आगे ले जाने में मदद करते हैं। मैं दिल से सबको कहूँगा कि ऐसे ओलम्पियाड्स में भाग लेने की ज़रूर कोशिश करनी चाहिए।

-कुचि संदीप, हैदराबाद, तेलंगाना – गोल्ड मेडलिस्ट

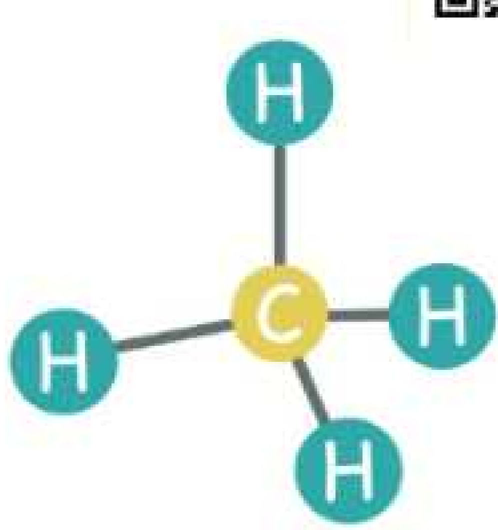

मैंने तैयारी की शुरुआत एनसीईआरटी की किताबों, कुछ अंडरग्रेजुएट टेक्स्टबुक्स, ऑनलाइन रेफ़रेंस मटेरियल्स और इंडिया व इंटरनेशनल केमिस्ट्री ओलम्पियाड के पुराने पेपर्स से की थी। ओलम्पियाड्स एक तरह से पढ़ाई के ओलंपिक जैसे हैं, जिन्हें सम्मान और वैल्यू दी जाती है। यही बात मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है और मुझे हौसला देती है कि मैं इसी जज्बे के साथ मेहनत करता रहूँ।

-देवेश पंकज भैया, जलगाँव, महाराष्ट्र – गोल्ड मेडलिस्ट

हमने कई टॉक शो, वर्कशॉप्स और दूसरे ऐसे प्रोग्राम्स में हिस्सा लिया जिससे साइंस के लिए मेरी दिलचस्पी बढ़ी। होमी भाभा साइंटिफिक एजुकेशन सेंटर जो भारत में साइंस ओलम्पियाड्स के आयोजन का नोडल सेंटर है, उसने हमें दो हफ्ते का ट्रेनिंग कैम्प दिया जिसमें थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों को अच्छी तरह समझाया गया। ऐसे इंटरनेशनल मुकाबले हमें न सिर्फ़ आत्मविश्वास देते हैं, बल्कि दुनिया भर के टैलेंटेड स्टूडेंट्स से सीखने का भी मौका देते हैं।

-उज्ज्वल केसरी, दिल्ली – सिल्वर मेडलिस्ट

मेरी केमिस्ट्री में दिलचस्पी कक्षा 7 से थी। जब मैं 9वीं में था, तब मुझे IChO (International Chemistry Olympiad) के बारे में पता चला और तभी मैंने ठान लिया कि मुझे ये क्रैक करना है। ये मेरे लिए बहुत शानदार अनुभव रहा। मैं बस यही कहना चाहूँगा कि हमें साइंस के बारे में अपनी सोच को और व्यापक बनाना चाहिए। जैसे ही आपको ये एहसास होता है कि साइंस एक दिलचस्प और मजेदार सब्जेक्ट है, खुद-ब-खुद इसे पढ़ने में मन लगने लगता है।

-देवदत्त प्रियदर्शी, भुवनेश्वर, ओडिशा – सिल्वर मेडलिस्ट

$Mg^{2+} + O^{2-} \rightarrow MgO$

स्वच्छ भारत मिशन

जन-भागीदारी का प्रतीक

"कभी-कभी कोई काम नामुमकिन सा लगता है। लगता है, क्या ये भी हो पाएगा? लेकिन, जब देश एक सोच पर एक साथ आ जाए, तो असम्भव भी सम्भव हो जाता है। 'स्वच्छ भारत मिशन' इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जल्द ही इस मिशन को 11 साल पूरे होंगे। लेकिन, इसकी ताकत और इसकी ज़रूरत आज भी वैसी ही है। इन 11 वर्षों में 'स्वच्छ भारत मिशन' एक जन-आंदोलन बना है। लोग इसे अपना फर्ज मानते हैं और यही तो असली जन-भागीदारी है।"

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

साल 2014 में जब पूरे देश में स्वच्छ भारत का आह्वान गूँजा, तब यह केवल एक सरकारी कार्यक्रम की शुरुआत नहीं, बल्कि एक साझा सपने का जागरण था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दृष्टि ने स्वच्छता को केवल एक नागरिक कर्त्तव्य न मान कर, उसे एक साझा राष्ट्रीय अभियान में बदला। इस पहल की असली शक्ति जन-भागीदारी में रही, जहाँ करोड़ों नागरिकों ने मिलकर आदतें, परिवेश और सोच बदलने का संकल्प लिया।

बड़े शहरों से लेकर छोटे-छोटे गाँवों तक, लोग एकजुट हुए। समाज के हर वर्ग के नागरिकों ने झाड़ू उठाई, आवासीय सोसाइटियों ने कचरा अलग-अलग करना शुरू किया। गाँवों में स्वच्छता समूह बने, शहरों में दीवारों पर स्वच्छता के सन्देश लिखे गए। धर्मगुरुओं से लेकर फ़िल्मी सितारों और खिलाड़ियों तक, सभी ने स्वच्छता की बात कर, इसे गर्व का विषय बना दिया।

स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण: चरण-1 (2014–2019)

पहला चरण एक ऐतिहासिक पहल था जिसने पूरे राष्ट्र को, व्यवहार में परिवर्तन के दुनिया के सबसे बड़े

अभियान में एकजुट किया। जागरूकता अभियान, शैक्षिक कार्यक्रम, और बुनियादी ढाँचे के विकास ने स्वच्छता के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल दिया।

ग्रामीण, स्थानीय नेता, स्वयं सहायता समूह, विद्यालय और पंचायतों ने सरकार के साथ मिलकर काम किया। इसका परिणाम केवल शौचालय बनाने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सोच में भी बदलाव आया जिससे स्वच्छता, गरिमा और स्वास्थ्य, विशेषकर महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण: चरण-2 (2019–2025)

पहले चरण की सफलता पर आगे बढ़ते हुए, दूसरे चरण में खुले में शौच मुक्त (ODF) स्थिति बनाए रखने और वर्ष 2025 तक 'सम्पूर्ण स्वच्छता' प्राप्त करने पर केन्द्रित है।

जुलाई 2025 तक की मुख्य उपलब्धियाँ:

- 11.90 करोड़ घरेलू शौचालय बनाए गए।
- 2.59 लाख सामुदायिक स्वच्छता परिसर (CSC) बनाए गए।
- 5.66 लाख गाँवों ने ओडीएफ़ प्लस दर्जा प्राप्त किया।

स्वच्छ भारत मिशन - शहरी

2014 में एसबीएम-ग्रामीण के साथ ही शुरू किए गए एसबीएम-शहरी का उद्देश्य खुले में शौच से शत प्रतिशत मुक्ति की (ODF) स्थिति प्राप्त करना, ठोस अपशिष्ट का वैज्ञानिक प्रबन्धन करना और शहरों तथा क़स्बों में जन आन्दोलन के माध्यम से व्यवहार में स्थायी परिवर्तन लाना था। जुलाई 2025 तक, शहरी घटक के अन्तर्गत 63.78 लाख घरेलू शौचालय और 6.36 लाख सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालय बनाए जा चुके हैं जिनकी तीसरे पक्ष के कड़े सत्यापन और व्यापक जन-भागीदारी से पुष्टि हुई है।

मानसिकता में बदलाव

स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता के प्रति देश की सोच पूरी तरह बदल दी है। अब इसे किसी और की ज़िम्मेदारी न मानकर एक साझा कर्त्तव्य और गर्व का विषय माना जाता है। सड़कें अधिक स्वच्छ दिखती हैं, कचरा अलग करना लोगों की दैनिक आदत बन गया है और खुले में शौच अब अतीत की बात समझा जाने लगा है।

जन-भागीदारी का प्रमाण

आज, स्वच्छ भारत मिशन, जन-भागीदारी का जीता-जागता प्रमाण है जहाँ नीतियाँ लोगों की भागीदारी से मिलती हैं, और शासन 'लोगों के लिए' की बजाय 'लोगों के साथ, लोगों द्वारा' में परिभाषित होता है। गाँव की छोटी-सी गली से शहर की व्यस्ततम सड़क तक, ओडीएफ़ से सम्पूर्ण स्वच्छता तक की यात्रा, एक प्रशासनिक उपलब्धि मात्र नहीं है, बल्कि यह एक स्वच्छ, स्वस्थ, और अधिक गरिमामय भारत के निर्माण में सामूहिक शक्ति का प्रमाण है।

"गोमती नदी स्वच्छता अभियान शुरू करने की प्रेरणा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आरम्भ किए गए 'नमामि गंगे' कार्यक्रम से मिली। पिछले सात वर्ष से, हर रविवार बिना रुके हमने गोमती नदी की सफ़ाई में श्रमदान किया। एक छोटे से क़दम से शुरू किया गया प्रयास आज जन आन्दोलन का रूप ले चुका है, जिसमें हज़ारों बच्चे, युवा और महिलाएँ सक्रिय रूप से हिस्सा ले रही हैं। यह अभियान, एकता तथा पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का प्रतीक बन गया है।"

-रणजीत सिंह, 'संयोजक' स्वच्छ पर्यावरण आंदोलन सेना लखनऊ

"सकारात्मक सोच की हमारी यात्रा, स्वच्छता के लक्ष्य से शुरू हुई जिसे हमने अपना कर्त्तव्य समझ कर अपनाया। हमने हर सप्ताह के श्रमदान का लक्ष्य तय किया और आज गर्व के साथ 25 बर्तन बैंक, ठेला बैंक, चिकित्सा उपकरण बैंक और एक नर्सरी का संचालन कर रहे हैं। इन सामूहिक प्रयासों से उत्साह और एकजुटता पैदा होती है। हमारे काम को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मिली सराहना हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा थी जिससे हमें और अधिक समर्पण के साथ आगे बढ़ने की ताक़त मिली।"

-किरण शर्मा, संस्थापक, सकारात्मक सोच

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Amit Shah @AmitShah

मोदी जी ने बताया कि गुमला (झारखंड), जो कभी नक्सल हिंसा के लिए जाना जाता था, अब वहाँ लोग हिंसा छोड़ मत्स्य पालन कर रहे हैं। जिन हाथों में पहले बंदूकें थीं, अब उन हाथों में मछली पकड़ने के जाल हैं।
#MannKiBaat
Translate post

BSF @BSF_India

#MannKiBaat

आज #मन_की_बात में प्रधानमंत्री जी ने अमेरिका में आयोजित World Police and Fire Games में भारत के खिलाड़ियों की उपलब्धियों का ज़िक्र किया।
महोदय, आपकी शाबाशी और शुभकामनाओं से सभी खिलाड़ियों और उनके प्रशिक्षकों का उत्साह बढ़ा है।
सभी खिलाड़ी आगामी प्रतियोगिताओं में और भी अच्छा प्रदर्शन करने को आतुर हैं।
Translate post

Jual Oram @jualoram

Thiru Mani Maran has been at the forefront of a noteworthy initiative to preserve and popularise the great Tamil manuscripts and culture.

Digitising manuscripts is a key priority for our Government too and we have launched an important exercise in this regard. #MannKiBaat

DD URDU डीडी उर्दू دوردرشن اردو @UrduDoordarshan

आपने INSPIRE-MANAK अभियान का नाम सुना होगा | यह बच्चों के innovation को बढ़ावा देने का अभियान है | - PM
@narendramodi

@PMOIndia @MIB_India
#MannKiBaat #MKB #MKBOnDD #InspireManak
Translate post

Hardeep Singh Puri @HardeepSPuri

खेलेगा इंडिया, खिलेगा इंडिया।

PM @narendramodi जी के मार्गदर्शन में भारत sporting super power बन रहा है।

'खेलो भारत नीति 2025' इस मिशन को मजबूती दे रही है। गाँव, गरीब और बेटियाँ इस नीति की प्राथमिकता है।

आज खेलों से जुड़े startups, चाहे वो sports managements हों या manufacturing से जुड़े हों- उनकी हर तरह से मदद की जा रही है।

प्रधानमंत्री जी को young athletes और उनके parents के संदेश मिलना, नए भारत की खेल नीति की सफलता का प्रमाण है।
#MannKiBaat
Translate post

Jagat Prakash Nadda @JPNadda

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के 'मन की बात' के 124वें संस्करण को आज नई दिल्ली स्थित डिफेंस कॉलोनी में भारतीय सेना के भूतपूर्व सैनिकों और कार्यकर्ताओं के साथ सुना।

प्रधानमंत्री जी ने देश में बढ़ रहे स्पेस स्टार्टअप का जिक्र करते हुए आगामी 23 अगस्त को National Space Day को लेकर नागरिकों से सुझाव मांगे। साथ ही भारत के शौर्य और वीरगाथाओं से सराबोर विभिन्न ऐतिहासिक किलों की जानकारी साझा की। अमर शहीद खुदीराम बोस, बाल गंगाधर तिलक, भारत छोड़ो आंदोलन की वर्षगाँठ व स्वतंत्र दिवस की चर्चा करने के साथ ही देशभर में किये जा रहे नवाचार को लेकर प्रेरणास्पद विचार साझा किये।

देशभर में नागरिकों द्वारा किये जा रहे विभिन्न अनुकरणीय कार्यों के माध्यम से #MannKiBaat कार्यक्रम देश को एक सूत्र में पिरोकर राष्ट्र के उत्कर्ष की दिशा में उन्मुख करने का सशक्त माध्यम बना है। आईये, हम सभी मिलकर अपनी सामूहिक शक्ति को राष्ट्र व समाज के उत्कर्ष हेतु समर्पित करें।
Translate post

Dharmendra Pradhan @dpradhanbjp

#MaanKiBaat has evolved as a platform to celebrate pioneering efforts, touch upon the collective successes of the country and inspiring achievements of our citizens.

PM @narendramodi ji spoke about the success stories being weaved by tribal women of Mayurbhanj Odisha in the just concluded episode of Mann Ki Baat. Praise from Hon'ble PM and acknowledgement on a national platform will inspire these women to script new chapters of economic empowerment.

Gajendra Singh Shekhawat @gssjodhpur

देश के और हिस्सों में भी ऐसे ही अद्भुत किले हैं, जिन्होंने आक्रमण झेले, खराब मौसम की मार झेली, लेकिन आत्मसम्मान को कभी भी झुकने नहीं दिया।

राजस्थान का चित्तौड़गढ़ का किला, कुंभलगढ़ किला, रणथंभौर किला, आमेर किला, जैसलमेर का किला तो विश्व प्रसिद्ध है।

कर्नाटका में गुलबर्गा का किला भी बहुत बड़ा है। चित्रदुर्ग के किले की विशालता भी आपको कौतूहल से भर देगी कि उस जमाने में ये किला बना कैसे होगा।

-पीएम @narendramodi

Rekha Gupta @gupta_rekha

आज समयपुर में माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के 'मन की बात' कार्यक्रम को भाजपा कार्यकर्ताओं और स्थानीय नागरिकों के साथ सुना। यह कार्यक्रम केवल एक रेडियो कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनसंवाद की वह धारा है, जो राष्ट्र निर्माण की चेतना को घर-घर तक पहुँचाती है।

आज के इस प्रेरक एपिसोड में प्रधानमंत्री जी ने जनभागीदारी, भारतीय संस्कृति, सेवा और आत्मनिर्भर भारत की भावना को नई दिशा व ऊर्जा दी। देश की मिट्टी से उपजी कहानियों, नवाचारों और सेवा भावना से ओतप्रोत विचारों ने प्रत्येक श्रोता के हृदय को स्पर्श किया। यह संवाद केवल विचारों का साझा मंच नहीं, बल्कि संकल्प से सिद्धि की दिशा में पूरे राष्ट्र को प्रेरित करने वाला एक जन-आंदोलन है।

इस अवसर पर सांसद श्री @yogenderchandol जी, विधायक श्री @deepak4bjpbadli जी एवं उत्तर-पश्चिम दिल्ली भाजपा के जिलाध्यक्ष श्री @vinodsehrawat01 जी उपस्थित रहे।
@PMOIndia
@AmitShah
@HMOIndia
@JPNadda
@BJP4India
@BJP4Delhi

#MannKiBaat
Translate post

Satish Mahana @Satishmahanaup

आज कानपुर में महाराजपुर विधानसभा क्षेत्र स्थित कैम्प कार्यालय पर देश के सर्वाधिक लोकप्रिय कार्यक्रम "मन की बात" के माध्यम से आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी के ओजस्वी एवं प्रेरणादायक विचारों को सुनते हुए।

#MannKiBaat
#मन_की_बात
Translate post

ਅੱਜ ਸਿਰਫ਼ ਪੁਲਾੜ ਖੇਤਰ 'ਚ ਹੀ 200 ਤੋਂ ਵੱਧ 'ਸਟਾਰਟਅੱਪ' ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਚੁੱਕੇ ਹਨ-ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ

'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' 'ਚ ਕੀਤਾ ਸੰਬੋਧਨ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात का 124वां संस्करण

बसिया के युवक ने जलाया विकास का दीप: प्रधानमंत्री

- कभी नक्सलग्रस्त रहे इलाके में चल रही 'मत्स्य क्रांति' की हुई तारीफ
- कभी बंदूक उठानेवाले ओमप्रकाश साहू आज कर रहे मछली पालन
- प्रखंड के डेढ़ सौ से अधिक परिवार अब इस व्यवसाय से जुड़ चुके हैं

देश को खेल सुपर पावर बनाने का लक्ष्य : पीएम

मन की बात में कहा-खेलों में नवाचार के लिए स्टार्टअप की मदद करेंगे

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत को खेलों में अव्वल बनाना चाहते हैं। उनका लक्ष्य गांव, गरीब और बेटियों को प्राथमिकता देते हुए भारत को खेलों का सुपर पावर बनाने का है। पीएम मोदी ने अपनी इस माह की मन की बात में इसकी चर्चा की।

उन्होंने कहा कि खेलो भारत नीति 2025 को खूब सराहना मिल रही है। इस नीति का लक्ष्य भारत को खेल सुपर पावर बनाने का है। गांव, गरीब और बेटियों के मद्देनजर स्कूल-कॉलेजों में खेल को रोजमर्रा की गतिविधियों का हिस्सा बनाया जा रहा है। खेलों से जुड़े स्टार्टअप, चाहे वो खेल प्रबंधन से संबंधित हो या फिर प्रौद्योगिकी या विनिर्माण से, सरकार उनको हर तरह से मदद करेगी। इसका उद्देश्य खेल उद्योग में नवाचार और विकास को बढ़ावा देना है। ताकि इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया जा सके। एजेंसी

- *पीएम ने कहा, सोचिए, जब देश का युवा देश में ही बने रैकेट, गेंद और बल्ले से खेलेगा तो आत्मनिर्भरता के मिशन को कितनी बड़ी ताकत मिलेगी। खेल टीम भावना बढ़ाते हैं। ये फिटनेस, आत्मविश्वास बढ़ाने और एक मजबूत भारत के निर्माण का भी रास्ता है।*
- *पीएम मोदी ने विश्व पुलिस एंड फायर गेम्स में भारत को मिली सफलता का जिक्र भी किया। बोले, यह ओलंपिक के बाद दूसरा सबसे बड़ा खेल आयोजन है। इस बार अमेरिका में आयोजित टूर्नामेंट में भारत ने करीब 600 पदक जीते। 71 देशों में हम शीर्ष तीन में रहे। 2029 में ये टूर्नामेंट भारत में होगा। दुनियाभर से खिलाड़ी हमारे देश आएंगे। हमें उन्हें अपनी खेल संस्कृति से परिचय कराना है।*

From space to science olympiads, India shines on global stage: PM Modi in 'Mann Ki Baat'

PM hails UNESCO recognition of 12 Maratha Forts

भारत में नई ऊर्जा से बढ़ रहा विज्ञान : मोदी

मन की बात में बोले पीएम, सिर्फ अंतरिक्ष क्षेत्र में 200 से ज्यादा स्टार्टअप हुए

India to host World Police & Fire Games in 2029: PM Modi

UNI

New Delhi, July 27 : Prime Minister Narendra Modi, in the 124th episode of his monthly radio address 'Mann Ki Baat' today, lauded India's performance at the World Police and Fire Games held recently in the United States, and announced that India will host the 2029 edition of the global sporting event.

The much sought-after sports event features participation from police, firefighting, and security personnel from around the world.

Speaking during the broadcast, Modi, while announcing that India will host the 2029 edition of the Games, described it as an opportunity to highlight the country's hospitality and sporting traditions.

"Players from all over the world will come to our country. We will showcase to them India's hospitality and introduce them to our traditional sports culture," he said.

Talking about the recently concluded tournament held in America, Modi said "Proud of those who made India proud at the World Police and Fire Games, which were held recently in the USA. This is among the biggest tournaments held globally after the Olympic Games. India created history in it. India won close to 600 medals and reached the top three out of 71 countries. The hard work of the security and armed forces personnel who are always at the forefront of the service of the country bore fruits."

"I congratulate all the participants of the event," he said.

The World Police and Fire Games (WPFG) is a biennial international event that brings together law enforcement and emergency services personnel from across the globe to compete in a variety of athletic disciplines. India's strong performance this year has been widely appreciated for showcasing the dedication and physical fitness of its uniformed services.

India's growing role as a host of international sporting events, Modi noted, reflects the nation's increasing stature on the global stage and the enthusiasm for sports among its citizens.

'मन की बात' में छत्तीसगढ़ की गूंज- बिल्हा की महिलाओं ने बदली शहर की तस्वीर, प्रधानमंत्री ने की सराहना

- छत्तीसगढ़ की मातृशक्ति की स्वच्छता पहल को राष्ट्रीय मंच पर मिली पहचान
- यह हर छत्तीसगढ़वासी के लिए गर्व का क्षण: साय

प्रधानमंत्रीর "মন কি বাত" ১২৪তম পর্বে

মহাকাশ থেকে মাটির পাট ও ঐতিহ্যের রূপান্তরের বার্তা

ہندوستان کو کھیلوں کا سوپر پاور بنانا ہے: مودی

پی ایم نے من کی بات پروگرام میں لوگوں کو کھیلنے کی ترغیب دی

'मन की बात': पीएम मोदी बोले - 'खेलो भारत नीति 2025' से बनेगा भारत खेल महाशक्ति, गांव-गरीब-बेटियों को मिलेगी प्राथमिकता

سبھانشو شکلا کے سفر سے خلا کے بارے میں تجسس کی نئی لہر

ہندوستان، سائنس میں نئی توانائی کے ساتھ آگے بڑھ رہا ہے۔ وزیراعظم کا من کی بات خطاب

'मन की बात' में प्रधानमंत्री ने बताया कालिंजर के किला को भारत की संस्कृति, संस्कार व स्वाभिमान का प्रतीक

योगी के विकास कार्यों और अभियानों को मिला प्रोत्साहन

केवल अंतरिक्ष क्षेत्र में ही 200 से अधिक स्टार्टअप शुरू हुए

मन की बात : शुभांशु शुक्ला की पृथ्वी पर वापसी से देशवासी खुशी से उछल पड़े

नमो भारत पर मुझे मैसेज भेजें : मोदी

पैठणच्या पैठणीचा 'मन की बात'मध्ये गौरव, कविता ढवळे यांच्या संघर्षमय प्रवासाचे पंतप्रधान मोदींनी केले कौतुक

लोकमत विशेष

दादासाहेब गलांडे
लोकमत न्यूज नेटवर्क

पैठण (जि. छत्रपती संभाजीनगर) : पैठणची शान असलेली 'पैठणी' पुन्हा एकदा राष्ट्रीय चर्चेत आली आहे. आपल्या मेहनतीने आणि कौशल्याने पैठणी विणकामाच्या परंपरेला नवा आयाम देणाऱ्या कविता अरुण ढवळे या विणकर महिलेच्या कार्याची दखल खुद्द पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रविवारी 'मन की बात' कार्यक्रमात घेतली. ढवळे यांच्या संघर्षमय प्रवासाचे कौतुक करत, त्यांनी हा आदर्श अनेकांसाठी प्रेरणादायी असल्याचे नमूद केले.

२५ हजारांपासून ६ लाख रुपयांपर्यंतच्या साड्यांची निर्मिती

सध्या पैठणच्या मध्यवर्ती पैठणी क्लस्टरात ६० महिला तर घरगुती स्वरूपात ३०० महिला विणकामात गुंतलेल्या आहेत, त्यात कविता ढवळे यांचे नाव आदराने घेतले जाते. २३ वर्षांपासून अविरतपणे पैठणी विणत असलेल्या कविता यांनी शून्यापासून सुरुवात केली. त्यांनी आतापर्यंत १५० पेक्षा अधिक पैठणी तयार केल्या. २५ हजारांपासून ६ लाखांपर्यंतच्या साड्यांची निर्मिती त्यांनी केली. एका साडीस लागणारा वेळ, डिझाइन, कच्चा माल व मेहनत हे सर्व त्यांच्या कलेचे वैभव अधोरेखित करतात. नुकतेच त्यांनी एका सहा लाख रुपयांच्या साडीची विक्री करून त्यांचा उच्च दर्जा सिद्ध केला आहे.

'उत्कृष्ट विणकर' सन्मान

कविता ढवळे यांना ७ ऑगस्ट २०२४ रोजी 'जागतिक हातमाग दिना'निमित्त उपराष्ट्रपती व वस्त्रोद्योगमंत्री यांच्या हस्ते 'उत्कृष्ट विणकर' हा सन्मान दिला गेला होता. यामुळे प्रेरित होऊन त्यांनी व्यवसायाचा मार्ग स्वीकारला आहे.

"पंतप्रधानांनी माझ्या कार्याची दखल घेतल्याने मन भारावले. पैठणी मशीनवर बनू शकत नाही. ती हातमागावरच शक्य आहे. पैठणमध्ये क्लस्टर निर्माण झाले तर महिलांना रोजगार मिळेल आणि व्यवसाय अधिक गतिमान होईल.

कविता ढवळे, विणकर, पैठण

నగరంలో నీటి సరఫరాపై మోదీ ఫిదా!

మన్‌కీ బాత్‌లో ప్రత్యేకంగా ప్రస్తావించిన ప్రధాని

- విజయవాడలో 16 లక్షల మందికి మెరుగైన తాగునీటి వ్యవస్థ
- అధునాతన వ్యవస్థతో నూరుశాతం రక్షిత నీటి సరఫరా
- 30 శాతం జనాభా ఉంటున్న కొండ ప్రాంతాలకు బూస్టర్ల ద్వారా అందిస్తున్నారు

కొండ ప్రాంతాలకు ఇబ్బంది లేకుండా..

1.23 లక్షల మంచినీటి కనెక్షన్లు

ಮೋದಿ ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಕಲಬುರಗಿ ಕೋಟೆ ಸ್ಮರಣೆ

ಕಲಬುರಗಿ: ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಅವರ 'ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್' ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ನಗರದ ಬಹಮನಿ ಕೋಟೆ ಬಗ್ಗೆ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಿ ವೈಭವದ ಬಗ್ಗೆ ಮಾತನಾಡಿದ್ದಾರೆ.

■ ದೇಶದ ಅದ್ಭುತ ಕೋಟೆಗಳಲ್ಲಿ ಒಂದೆಂದು ಪ್ರಧಾನಮಂತ್ರಿ ಹೊಗಳಿಕೆ

ਭਾਰਤ ਦੇ ਦੁਸ਼ਮਣਾਂ ਲਈ ਕੋਈ ਥਾਂ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਨਹੀਂ : ਮੋਦੀ

ਮੋਦੀ ਨੇ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਵਿਚ ਕਿਹਾ

ਸਿਰਫ਼ ਪੁਲਾੜ ਦੇ ਖੇਤਰ 'ਚ 200 ਤੋਂ ਵੱਧ ਸਟਾਰਟਅੱਪ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਏ

'ਓਮ ਨਮਹ ਸ਼ਿਵਾਏ'

ਝਾਰਖੰਡ 'ਚ ਸਾਬਕਾ ਨਕਸਲੀਆਂ ਦੇ ਬੰਦੂਕਾਂ ਛੱਡ ਕੇ ਮੱਛੀ ਪਾਲਣ ਦਾ ਧੰਦਾ ਅਪਨਾਉਣ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਕੀਤੀ

New wave of curiosity about space: PM

Says over 200 startups have come up in space sector

NEW DELHI, JUL 27

HAILING astronaut Shubhanshu Shukla's return from ISS, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said a new wave of curiosity about space among children has awakened and noted that today more than 200 startups have come up in the space sector alone.

Modi announces statues for Tamil kings Rajaraja, Rajendra

GANGAIKONDA CHOLAPURAM: Prime Minister Narendra Modi on Sunday announced construction of grand statues of iconic Chola emperors, Rajaraja Chola and his son, Rajendra Chola I, in Tamil Nadu.

'मन की बात' मा पीएमले मराठा विरासतदेखि लिएर विज्ञान क्षेत्रमा प्राप्त उपलब्धिहरूको उल्लेख गरे

'मन की बात' में बोले मोदी: बच्चों में अंतरिक्ष को लेकर नई जिज्ञासा

आत्मनिर्भरता ही है विकसित भारत का मार्ग: पीएम मोदी

ଗୌରବର ନୂଆ ଅଧ୍ୟାୟ ଲେଖୁଛି ଭାରତ

୧୨୪ତମ 'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'ରେ ମୋଦି

Textile sector is emerging as strength of the country: Modi

गडकिल्ले ऐतिहासिक घटनांचे साक्षीदार

नरेंद्र मोदी : छत्रपती शिवाजी महाराज दूरदर्शी राजे असल्याचे दाखले

पणजीतील उपक्रमाचा उल्लेख

बच्चों में अंतरिक्ष को लेकर नई जिज्ञासा पैदा हुई : मोदी

मन की बात

Aim is to make India a sporting superpower, says PM Modi in Mann Ki Baat

NEW DELHI, July 27 (IANS): Prime Minister Narendra Modi on Sunday shared his vision for making the country a sporting superpower and hailed the Indian contingent for winning close to 600 medals at the recent 'World Police and Fire Games'.

In the 124th episode of his monthly radio programme 'Mann Ki Baat', PM Modi said that the government's 'Khelo Bharat Niti 2025' has been highly appreciated.

"The goal of this policy is clear - to make India a sporting superpower," he said, adding that startups related to sports, whether they be sports management or manufacturing, will be helped in every way.

He said the policy pays special attention to villages, the poor and daughters. "Schools and colleges will now make sports a part of everyday life," he said.

"Imagine how much strength the mission of self-reliance would gain when the youth of the country would play with self-made racket, bat and ball. Friends, sports create team spirit. This is the path to fitness, self-confidence and building a strong India. So play a lot, blossom a lot," he said.

Talking about the biennial World Police and Fire Games, which concluded on July 6 in Birmingham, Alabama, PM Modi said India's uniformed heroes are making headlines not just in service, but also in sports.

"This time, the tournament was held in America, and India created history in it. India won close to 600 medals. We reached the top three out of 71 countries. The hard work of those uniformed personnel who stand for the country day and night, paid off. These friends of ours are now holding the flag high in the sports field as well. I congratulate all the players and the coaching team," he said.

The PM also tested the knowledge of the audience by asking, "Do you know which is the biggest sporting event other than the Olympics? The answer is – 'World Police and Fire Games'... a sports tournament between policemen, fire fighters, security personnel from all over the world."

By the way, it will also be interesting for you to know that in 2029, these games will be held in India. Players from all over the world will come to our country. We will showcase to them India's hospitality and introduce them to our sports culture, he said.

The government plans to host the event in Gujarat's Ahmedabad, Gandhinagar and Ekta Nagar.

વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીનું 'મન કી બાત'માં દેશવાસીઓને સંબોધન

શુભાંશુ શુક્લા ધરતી પર ઊતર્યા એ સાથે જ આખો દેશ ખુશી, ગર્વથી ઝૂમી ઊઠ્યો : મોદી

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के जरिए देशवासियों को किया संबोधित

विज्ञान, विरासत व विविधता भारत की शान : मोदी

जब मैं 'ॐ नमः शिवाय' सुनता हूं, तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं : पीएम

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ 'ମନ୍ କୀ ବାତ୍'

ଏଆଇରୁ ମହାକାଶ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ...

'ସ୍ୱାଚ ଭାରତ ମିଶନ୍' ଏକ ଐତିହାସିକ ପଦକ୍ଷେପ

'ମହାକାଶ ଗବେଷଣା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ସଫଳତା'

ମୟୂରଭଞ୍ଜର ସାନ୍ତାଳୀ ଶାଢ଼ି ଓ କେନ୍ଦୁଝରର ପ୍ରମିଳାଙ୍କୁ ପ୍ରଶଂସା

abp न्यूज़

Mann Ki Baat: PM Modi Hails Space Innovation, Olympiad Success, and National Pride | ABP NEWS

अमर उजाला

Mann Ki Baat: छात्रों ने ओलंपियाड में बढ़ाया देश का मान, विज्ञान में तेजी से आगे बढ़ रहा है भारत: पीएम मोदी

ANI NEWS

"Every stone has witnessed historical event": PM Modi hails 12 Maratha forts recognised as UNESCO World Heritage Sites

भारत EXPRESS

PM Modi lauds cleanliness initiatives: پی ایم مودی نے 'من کی بات' میں ملک بھر میں صفائی کے اقدامات کی ستائش کی

CNBC

PM Modi in Mann Ki Baat: Lauds Shubhanshu Shukla's return, highlights space startup boom

Deccan Chronicle

Over 200 startups have come up in space sector alone: PM Modi says in 'Mann Ki Baat'

The Free Press Journal

PM Modi Hails UP's Forts, River Clean-Up Efforts In 'Mann Ki Baat'; Highlights Kalinjar's Legacy And Gomti Volunteers

INDIA TV

Mann Ki Baat: PM Modi praises Shubhanshu Shukla's success, highlights India's space, sports and achievements

انقلاب THE INQUILAB

'گیان بھارتم مشن' کے تحت قدیم مخطوطات کو ڈیجیٹل کیاجائیگا: وزیر اعظم مودی

NEWS18 हिंदी

Mann Ki Baat: कोटा के छात्रों का इंटरनेशनल धमाका, 'मन की बात' में गूंजा एलन का नाम, पीएम मोदी ने की तारीफ

Odishatv.in We Report, You Decide

PM Modi lauds Odisha's tribal women, 'kirtan' group in 'Mann Ki Baat' programme

THE DAILY Jagran

PM Modi In 'Mann Ki Baat': Indian Students Excel At Olympiads, Science And Innovation Thriving Rapidly In 21st Century India

THE HINDU

Mann Ki Baat: 'Textile sector's growth is driven by start-ups, women and youth', says PM Modi

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM Modi highlights Gumla youth's remarkable shift from extremism to fish farming in 'Mann Ki Baat'

The Statesman

'Embracing Scientific Spirit Key to India's Growth': PM Modi in 'Mann Ki Baat'

TOI

Mann Ki Baat: PM Modi on 'Khelo Bharat Niti 2025' - 'Villages, the poor and daughters are priority'

ZEE BUSINESS

मन की बात: पीएम मोदी ने 'इंस्पायर मानक योजना' का किया जिक्र, बोले- 'लाखों बच्चे इससे जुड़े'

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

आकाशवाणी समाचार

ALL INDIA RADIO NEWS

"ये क़िले सिर्फ ईंट-पत्थर नहीं हैं, ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। संस्कार और स्वाभिमान, आज भी इन किलों की ऊंची-ऊंची दीवारों से झाँकते हैं।"

- नरेन्द्र मोदी

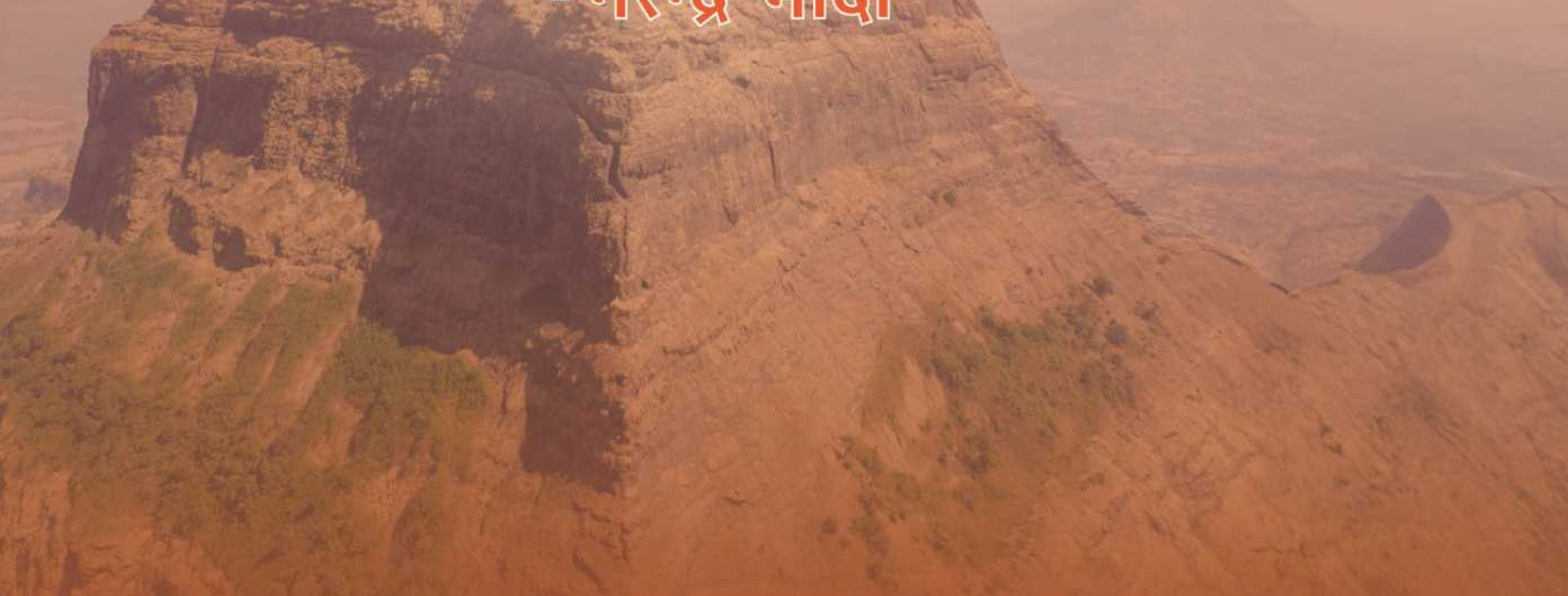

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार